नई दुनिया

बख़्त

नई दुनिया

बख़्त

naī duniyā

New World

by Bakht

(Urdu—Hindi script)

© 2020 Chashma Media

पुरअसरार कुआँ

“बेटा।”

मैं उठ बैठा।

“ओए बेटा! कुएं से पानी भरकर ला।”

मैंने अपनी आँखों को मला। अब तक मैं ख़ाबों की दुनिया में डूबा हुआ था। सर में सख़्त दर्द की लहरें उछल रही थीं। कौन मुझे बुला रहा था? परदे बंद थे, और कमरा अंधेरा था। लेकिन बैठक से रौशनी की किरनें टटोल टटोलकर बिस्तर को छू रही थीं। मैंने उठकर बैठक में झाँका। कोई मेहमान आया था। बाप दबी दबी आवाज़ में बात कर रहे थे। दो-एक टुकड़े मेरे कमरे में बिखर गए : “बेचारा ... मिल्ट्री ... फ़ज़ूल ... नहीं नहीं, कोई फ़ायदा नहीं ... बहरहाल ...”

लग रहा था कि एक बार फिर मेरा ज़िक्र हो रहा है। मैं झुँझलाकर आगे निकला जहाँ सहन था।

“मुँह क्यों बिगड़ा हुआ है?” फ़रीदा की आवाज़ कोने से आई जहाँ वह बरतन माँझ रही थी।

मैंने जवाब में कुछ न कहा, अलबत्ता बहन मुझे बहुत प्यार थी। घड़ा उठाकर मैं बाहर निकला। गली मेरे सामने वीरानो-सुनसान पड़ी थी। झुलसानेवाली धूप के बाइस सब लोग अपने अपने घरों में छुप गए थे। वाहिद एक हडीला गधा दीवार के साथ चिमटा ऊँघ रहा था। मैं लँगड़ाता हुआ कुएं की सिम्त चल दिया। सायदार दीवारों के साथ साथ खिसकते हुए और बुड़बुड़ाते हुए मैं कुएं पर पहुँच गया। वहाँ भी कोई नहीं था। "ऐसी ज़ालिम धूप में कौन जुर्रत करेगा," मैंने ज़ेरे-लब कहा। घड़े को किनारे पर रखकर मैं साथवाले बरगद के साय में आलती-पालती मारकर बैठ गया।

"काँव-काँव।" मैंने ऊपर देखा। एक काला कऔअ अपना सर एक तरफ़ झुकाकर तजस्सुस से मुझे तक रहा था।

"तू क्या कह रहा है?" मैं बोला। फिर अपने आपको झिड़की दी। "मैं क्या कह रहा हूँ? बेज़बान जानवरों से बातें करने लगा हूँ—आह ..." मेरे सर में से दुबारा बिजली ऐसे शदीद दर्द की लहर लपकी। कनपटी पर हाथ लगाकर मेरी निगाह अपनी नीम-फ़ालिज टाँग पर पड़ गई, और दिल की तलख़ी होंटों से छलक उठी। ख़ूब कहते हैं कि चार दिन की चाँदनी फिर अंधेरी रात। मुझे वह वक़्त याद आया जब लोग मेरी बड़ी इज़्ज़त करते थे। अफ़सर बनकर अब्बू जी कितने ख़ुश हो गए। कितने फ़ख्र से मेरा ज़िक्र करते। जब भी मैं गाँव आता तो सारे लोग मशवरा लेने और दरख़ास्तें पेश करने आते।

“सरकार, आप क्या मशवरा देंगे? … क्या ख़याल है? … आप बेहतर जानते होंगे … अफ़सर साहब, अगर कोई नौकरी मिली तो …”

फिर अचानक सब कुछ बदल गया था। चंद महीने पलंग पर अध-मुई हालत में लेटे हुए बीत गए थे। सेहत हौले हौले बहाल हुई, लेकिन दायाँ पाँव आज तक ठीक काम नहीं करता था।

“अब इज़्ज़त कहाँ रह गई? पड़ोसी सलाम तक नहीं करते, हाँ बच्चे भी मेरे पीछे हँसते और पत्थर फेंकते हैं।”

मैंने अपना हाथ माथे पर फेर दिया। लेकिन लानत—चेहरे के दाने भी बीमारी की याद दिलाकर मेरा मज़ाक़ उड़ा रहे थे, “तू भद्दा है। तू क़बीह है। तेरी क्या क़दर?”

“अब मेरा फ़ायदा सिर्फ़ पानी भरने में रह गया है,” मैंने मायूसी से सोचा। ठंडी साँस भरकर मैं उठा। घड़ा पकड़ लिया और कुएं में झाँक मारी। पानी ज़मीन की गोद में झिलमिला रहा था जैसा कि ख़ुशआमदीद कह रहा हो, “आओ ना, आओ।” मैंने एक छोटा-सा पत्थर उठाकर कुएं में गिरने दिया। थोड़ी देर ख़ामोशी, फिर “ग़ड़प” की आवाज़। अचानक मैं चौंक पड़ा। कुएं के अंदर से एक आवाज़ निकलने लगी। कोई गुनगुना रही थी। मगर उसकी गुगुनाहट इतनी मधुर, इतनी मीठी और रसीली।

मैंने एक और नज़र कुएं में डाली। अजीब बात यह थी कि ज्योंही आवाज़ बढ़ती गई रौशनी कुएं में फैलने लगी। फैलते फैलते दीवारें रंगारंग जवाहर की तरह चमकने लगीं। मैंने यह नाक़ाबिले-यक़ीन मंज़र

अच्छी तरह देखने के लिए अपने सर को कुएं के मुँह में झुकाया। सुरीली मौसीक़ी और नाचती हुई रौशनी के जादू में आकर मैं मज़ीद आगे बढ़ा, मज़ीद आगे बढ़ा।

"ठाह!" अचानक मैं फिसल गया और चीख़ते-चिल्लाते कुएं की गहराइयों में गिर गया।

ख़ामोशी। मुँह अंधेरा।

एक नई दुनिया

“ग़र-ग़र-ग़र।” हौले हौले मेरी बेहोशी दूर होती गई। “ग़र-ग़र” की आवाज़ कान के ऐन नज़दीक सुनाई दे रही थी। क्या क़रीब पानी बह रहा था? मैंने अपनी आँखें नीम-वा खोल दीं। चारों तरफ़ शादाब सायदार पेड़ आहें भर भरकर कानाफूसी कर रहे थे। हवा के हलके-से झोंकों से उनके हरे-भरे पत्ते सरसरा रहे थे। मीठी सुरीली आवाज़ें घनी शाख़ों में से निकल रही थीं। मैंने सर को उठाकर ग़ौर से देखा। दो-चार छोटी छोटी रंगारंग पंछियाँ टहनियों पर फुदकते हुए सूरज के ग़रक़ होने पर मातम का गीत गा रही थीं।

जिस्म की काहिली और माहौल की ख़ूबसूरती की ज़द में आकर मैं काफ़ी देर तक यों ही मीठी घास पर लेटा रहा। अचानक एक सोच बिजली की तरह ज़हन में चमक उठी। कुएं का माजरा याद आया। “क्या मैं फ़िरदौस में तो नहीं?” मैं ज़ेरे-लब बुड़बुड़ाया। सर को खुजलाकर उठ बैठा। मैं किसी जंगल की खुली जगह में लेटा था। क़रीब ही एक

छोटी प्यारी-सी नदी सूरज की आख़िरी किरनों के साथ नाचती हुई अपने आतिशीं घुंघरू हलकी हलकी बजा रही थी।

मैंने अपना हाथ माथे पर फेर दिया। यह क्या जादू था? चेहरे के भद्दे दाने कहाँ चले गए थे? नदी में झाँका तो सचमुच चेहरे की जिल्द नन्हे बच्चे की जिल्द जैसी नरम और मुलायम थी। नीचे देखा तो बेकार टाँग भी ठीक-ठाक काम कर रही थी। मैं फूला न समाया। ख़ुशी से उछलकर छोटे बच्चे की तरह चलने-कूदने लगा।

दिन ढलने लगा। शाम का धुँधलका जंगल में फैलता गया। नग़मा-संजी धीरे धीरे बंद हो गई। उसके बदले रात की डरावनी आवाज़ें उभर आईं। फ़िज़ा झींगुरों की 'चूँ-चूँ' और मेंढकों की 'टर-टर' के ज़ोर-शोर से भर गई। लेकिन साथ साथ कभी शेर की दहाड़ें और कभी हाथी की चिंघाड़ें भी मेरे कान तक पहुँचीं। मेरी ख़ुशी ख़ौफ़ में बदलने लगी।

"हा हा हा।"

मैं चौंक पड़ा। दिल धड़कने लगा। लकड़बग्घे की अजीब-सी हँसी क़रीब से गुज़र गई। अब पनाह की जगह कहाँ मिल जाए? चाँद एक बादल के पीछे छुप गया, और मैं उसकी हौसला देनेवाली मुसकराहट से भी महरूम हुआ। नदी जगमगाते सितारों से आँख-मिचौली खेलने लगी। कभी उन्हें पुकारती फिर ओझल हो जाती, कभी आगे झिलमिलाती दिखाई देती। कभी ऐसा लगता जैसा मेरे साथ भी खेलना चाहती। इस पुर-कशिश मंज़र के जादू में आकर मैं न जाने क्यों उसके साथ

साथ चलने लगा। नदी आगे मुड़ती-नाचती मेरी राहनुमाई करती, और मैं रास्ता टटोल टटोलकर उसके पीछे पीछे फिरता। हर तरफ़ अंधेरा ही अंधेरा, पर मेरे साथ चलती डगमगाती नदी मेरा सहारा करती। कुछ घंटे यों चलते चलते अचानक दूर दूर चराग़ों की टिमटिमाती रौशनी दिखाई दी। मेरे थके-माँदे पाँवों को नई ताक़त मिली, और मैं पूरी कोशिश से आगे बढ़ा। पहुँचा तो क्या देखता हूँ। एक आलीशान महल सामने पड़ा है। रोबदार पहरेदार नेज़ों से लेस फाटक पर खड़े हैं। अंदर महफ़िल की ख़ुशियाँ मनाई जा रही हैं। यह फ़रेबदेह मंज़र देखते देखते और अंदर की मनमोहन हंसी-ख़ुशी सुनते सुनते महफ़िल में शरीक होने की शदीद आरज़ू मेरे दिल में उभर आई। मगर कैसे? क्या पहरेदार मुझे दुश्मन नहीं समझेंगे?

नदी को छोड़कर मैं महल की मोटी फ़सील के साथ साथ चलने लगा। एक जगह पहुँचकर मेरा हौसला कुछ बढ़ गया। वहाँ एक मोटी लंबी-सी बेल दीवार से चिमटे ऊपरवाली मनज़िल की एक खिड़की तक फैल गई थी। मैंने फ़ौज में चढ़ने का फ़न ख़ूब सीख लिया था। अब इस तजरिबे से फ़ायदा उठाकर मैं चढ़ने लगा। बेल इतनी मज़बूत थी कि टूटने का कोई ख़तरा न था। चढ़ते चढ़ते मैं खिड़की तक पहुँच गया। अंदर झाँका तो एक शानदार हॉल देखा। दूसरी दीवार से लगी एक आतिशदान में दहकती आग मुझे ख़ुशआमदीद कह रही थी। दीवारें सुंदर रंगारंग तस्वीरों से सजी हुई थीं। मेरी तवज्जुह ख़ासकर एक तरफ़

खींची गई। कमरे के दरमियान एक लंबा-सा दस्तरख़ान बिछा हुआ था जिस पर खाने-पीने की उम्दा उम्दा चीज़ें चुनी हुई थीं। उनकी ख़ुशबू सूँघकर मुँह में पानी भर आया।

“क्या मैं अंदर जाऊँ?” कुछ देर तक मैं झिजकता रहा। लेकिन फिर तजस्सुस और खानों की ख़ुशबू मुझ पर ग़ालिब आई, और मैं अंदर घुस गया। अफ़सोस, ज्योंही मेरे पाँव फ़र्श से लगे तो लोगों की चहकती आवाज़ें क़रीब आने लगीं। मैं झपटकर परदे के पीछे छुप गया।

दरवाज़ा खुल गया। मेरा दिल शिद्दत से धड़कने लगा। शाही मौसीक़ार धूमधाम के साथ अंदर आए, उनके पीछे पीछे चालीस मेहमान। उनकी रंगीन वरदियों से साफ़ मालूम हुआ कि वह रईस और हुक्मरान हैं। चराग़ों की रौशनी में उनके जवाहर जगमगा रहे थे। सब बड़े मसरूर और मुतमइन लगते थे। कमरा ढोलकी, शहनाई और मेहमानों की हँसी-मज़ाक़ से भर गया। मैं साँस रोककर चूहे जैसा परदे की पनाह में दबका रहा। मेहमान खाना खाने लगे। प्लेटों और बरतनों की खड़खड़ाहट से रौनक़ मज़ीद बढ़ गई। लेकिन अब तक मेज़बान की जगह ख़ाली थी।

अचानक ढोलकी की आवाज़ सुनाई दी। दरवाज़ा दुबारा खुल गया और एक अज़ीम हस्ती अंदर आई। ख़ामोशी फैल गई। न जाने क्यों, उस हस्ती में कोई चीज़ थी जिससे मैं फ़ौरन डर गया। शायद उसका रोब या उसका इख़्तियार जो कुछ कहे बग़ैर महसूस हुआ। क्या मालूम।

“अब वह अपनी जगह पर बैठ जाएँगे,” मैंने सोचा।

लेकिन वह रुक गए। चारों तरफ़ देखने लगे।

“क्या कोई बात है, शहज़ादा सलामत?” किसी ने एहतराम से पूछा।

“कोई अंदर घुस आया है जिसे दावत नहीं मिली,” शहज़ादे ने फ़रमाया।

“लेकिन हम सभों को दावत दी गई है,” किसी ने एतराज़ किया।

शहज़ादा ख़ामोश रहे। मेरा मुँह ख़ुश्क हो गया। अगर मैं च्यूँटी होता तो ज़रूर दीवार की किसी दराड़ में घुस जाता। शहज़ादे के क़दम की आहटें आते आते परदे के सामने रुक गईं।

“बेटा, तू यहाँ क्या कर रहा है?” उन्होंने नरमी से कहा और परदा पीछे हटा दिया।

मैं उस हस्ती को किस तरह बयान करूँ? उनका चेहरा—हाँ, वह कैसा था? अब भी यह बताने में मुझे दिक़्क़त हो रही है। अगर मैं बयान करने की कोशिश भी करूँ आप नहीं समझेंगे। मेरे दोस्त सब मेरी बातें सुनकर सर हिलाते और ख़ामोश हो जाते हैं। और मैं देखता हूँ कि वह नहीं समझते मेरी बात। क्योंकि गहरी मुहब्बत की जो लहर मुझे उस लमहे महसूस हुई वह कोई नहीं समझ सकता। मेरे दोस्त हमेशा सवाल करते हैं कि यह कैसी मुहब्बत थी? हाँ, कैसी मुहब्बत? ऐसी मुहब्बत मैंने कभी महसूस नहीं की थी। उसमें माँ-बाप की मुहब्बत, भाई-बहनों की मुहब्बत की झलक तो थी। लेकिन जिस तरह किसी तस्वीर और उसके

असल में फ़रक़ होता है, जिस तरह भड़कती आग और मोमबत्ती की टिमटिमाती लौ में फ़रक़ होता है उसी तरह उसकी और हमारी मुहब्बत में फ़रक़ है। इस मुहब्बत के नूर ने मेरे पूरे जिस्म में सरायत की। कह लें मैं सरतापा उस मुहब्बत में डूब गया। जिस तरह लोहा आग में सुर्ख़ होकर तमतमाने लगता है यों ही मेरी पूरी पूरी हैसियत उस मुहब्बत से तमतमाने लगी। मैंने सोचा, "सचमुच यही है ज़िंदगी। अब से मैं उसमें डूबा रहूँगा।"

लेकिन साथ साथ एक और चीज़ महसूस हुई जिससे अगर सच कहूँ मुझ पर सख़्त घबराहट और परेशानी तारी हुई, यों कि मैं चीख़कर दर्द के मारे कराहने लगा। यह भी एक ऐसी बात है जो सिर्फ़ वह समझ सकता है जिसे ख़ुद इसका तजरिबा हुआ हो। उस कामिल और भड़कती मुहब्बत की रौशनी में मेरे अंदर की ख़राब, नापाक, गंदी और हराम चीज़ें उभर आईं। जो बातें मैंने अपने अंदर दबाए रखी थीं बल्कि बड़ी महारत और सब्र से छुपाकर भूलने की कोशिश की थी वह अब कड़क से दिल की तहों में से फूट निकलीं। साथ साथ मेरे अंदर एक आवाज़ गूँजने लगी जो बढ़ती बढ़ती तूफ़ान बन गई, "तू नालायक़ है, तू नालायक़ है, तू नालायक़ है।"

मेरे घुटने काँपने लगे। नंगेपन और गंदगी का ऐसा एहसास हुआ जैसा मुझे पहले कभी नहीं हुआ था। "कैसी बात," मैंने सोचा। "बेशक मेरा बदन अब इतना बदसूरत नहीं, ताहम मैं अंदर ही अंदर भद्दा और गंदा

हूँ।” बल्कि मैं हैरान हुआ कि अब तक मुझे इसका ख़याल तक नहीं आया था। मेरी ज़िंदगी फ़िल्म की तरह मेरे सामने से गुज़री—बचपन में सबसे पहला झूट, सबसे पहली चोरी …

माँ की आवाज़ : “मंज़ूर, तेरे हाथ में क्या है?”

“अम्मी, कुछ भी नहीं।”

“बेटा, अपना हाथ खोल। लै। अगर कुछ नहीं है तो यह बिस्कुट किधर से आया?” …

फिर जवानी का घमंड और ज़िद …

“मंज़ूर, इधर आ!”

“नहीं, कभी भी नहीं! तुम लोग सब ग़लत हो!”

“ऐसी गुस्ताख़ी मत दिखाना अपने माँ-बाप को।”

“क्यों नहीं? जो चाहता हूँ करूँगा।” …

ज़िंदगी का हर सख़्त लफ़्ज़, हर झगड़ा। हर क़दम पर ग़ुस्सा, लालच, नफ़रत, ज़िना, झूट। सख़्त मायूसी मेरे अंदर फैल गई। कुछ कहने की जुर्रत नहीं थी। सबसे मुश्किल बात यह कि यह पाक हस्ती सब कुछ जानती है। उसके नूर में कोई भी बात छुपी नहीं रह सकती। मैं कितना

गंदा था, कितना ग़लीज़। और सचमुच जब मैंने नीचे देखा तो मालूम हुआ कि मेरे कपड़े कीचड़ से लतपत हैं, और उनसे बेबयान ताफ़ुन आ रहा है।

“मैं ... मैं ...” कोई और बात मेरे मुँह से न निकल पाई।

“तू इजाज़त लिए बग़ैर अंदर घुस आया है।”

मेरे पाँव पिघल गए। मुझे चक्कर आने लगे। आँखों के सामने तारीकी तारी हो गई। गिरते ही बिजली की ज़ोरदार कड़क मेरे कानों में गूँज उठी। फिर ख़ामोशी।

न जाने मैं कितनी देर सकते के इस आलम में पड़ा रहा। फिर धीरे धीरे मेरे शऊर दुबारा काम करने लगे। मैंने सँभलकर अपनी आँखें खोलीं। मैं सख़्त ज़मीन पर पड़ा था। अपने आज़ा टटोल टटोलकर जल्द ही मालूम हुआ कि जिस्म को कोई नुक़सान नहीं पहुँचा।

“ग़र-ग़र-ग़र।” मैंने सर उठाया। वही नदी क़रीब ही बह रही है। लेकिन सितारे ओझल हो गए हैं। बादल गरज रहे और भारी भारी बूँदें ज़मीन पर गिर रही हैं। “आसमान रो रहा है,” मैंने ग़म से सोचा। आँसुओं के मोटे मोटे क़तरे गालों पर टपकने लगे। मेरी गंदी और अजनबी हालत का एहसास दिल पर ग़ालिब आ गया, और मैं ज़ारो-क़तार रो पड़ा।

सफ़र का आग़ाज़

‘काँव-काँव।’

मैंने अपनी आँखें खोलीं। वही घना पेड़ नज़र आया जिसकी पनाह में सो गया था। आसमान पर तड़के की गुलाबी उँगलियाँ नन्ही नन्ही भेड़ों जैसी बदलियों को छूकर अपना रंग उन पर बिखेर रही थीं।

‘काँव-काँव।’ मेरे ऊपर एक काला कऔअ बैठा अपनी क़ौम का तराना गा रहा था। जब मेरी नज़र उस पर पड़ी तो उसने अपनी चोंच से यों इशारा किया जैसे कह रहा हो, “उस तरफ़ जाओ।” फिर उड़कर उसी सिम्त चंद क़दम आगे के दरख़्त पर बैठ गया और दुबारा मुझे तकने लगा। लगता था कि वह मेरा इंतज़ार कर रहा हो।

मैं उठकर उसके पीछे चल दिया। अब क्या हर्ज था। यों हम दोनों कऔअ आगे और मैं उसके पीछे पीछे चलने लगे। एक आध घंटा घूमते-फिरते हम आख़िरकार मोटे तने के एक पेड़ के सामने रुक गए। गो उसकी चोटी टूटी हुई थी लेकिन उसका तना काफ़ी हद तक रह गया था। कऔअ उस पर बैठ गया। अपने सर को एक तरफ़ झुकाकर वह

ग़ौर से मेरी तरफ़ देखने लगा। फिर अचानक फुदककर तने के पीछे ओझल हो गया। मैं भी तने के पीछे गया तो कऔअ कहीं नज़र न आया। लगता था कि वह दरख़्त से निगला गया हो। मैंने दो-चार बार तने का चक्कर लगाया लेकिन बेफ़ायदा। कऔअ कहीं भी नहीं। मैं बैठकर सोचने लगा। यह क्या जादू था? ख़याल करते करते मेरी नज़र तने के ऊपरवाले हिस्से पर पड़ गई। मुझे झटका-सा लगा। किसी दराड़ में से हलका-सा धुआँ साँप की तरह रेंगते हुए निकल रहा था। कमाल था। मैं उठकर दुबारा ध्यान से तने के छिलके की जाँच लेने लगा। उँगलियों से टटोल टटोलकर एक छोटा-सा सूराख़ मालूम हुआ। उसमें उँगली डाली तो यकायक एक छोटा-सा दरवाज़ा चुपके से खुल गया। मैं तेज़ी से अंदर घुस गया तो दरवाज़ा मेरे पीछे बंद हो गया।

“उल्लू का बच्चा, क्यों नहीं बताया तूने?” मेरे सामने कोई किसी को झिड़कियाँ दे रहा था।

धुँधलके में एक छोटा-सा कमरा नज़र आया। एक चूल्हे पर केतली का उबलता हुआ पानी गुनगुना रहा था। उसके सामने एक बौना बुड़बुड़ाते हुए चाय तैयार कर रहा था। “उसको किस तरह रास्ता पता चलेगा?”

“काँव। उम्मीद है कि वह ख़ुद बख़ुद रास्ता दरियाफ़्त करेगा,” एक माज़रत चाहनेवाली आवाज़ जवाब में सुनाई दी। दूसरी तरफ़ कऔअ मूढ़े पर बैठा था। “तुझे मालूम है कि यहाँ दीवारों पर कान लगे हुए हैं।”

मैं बड़े अदब के साथ गला साफ़ करके कुछ कहने को था कि बौना मुड़ गया।

“अरे! आ गया है,” वह ख़ुशी से चिल्लाया। “शुक्र है। हमें फ़िकर थी कि आपको अंदर आने का रास्ता नहीं मिलेगा।” आग की जगमगाती रौशनी में उसका चेहरा पुरसुकून और नेक लगता था। उसने अपनी लंबी दाढ़ी को थपथपाया। “कभी कभी मेरा दोस्त ज़्यादा सोचता ही नहीं। बहरहाल, आप सही-सलामत पहुँच गए हैं। मेरा नाम वसीम वफ़ा है, और यह मेरा दोस्त अनवर उम्मीद है।” उसने कौए की तरफ़ इशारा किया।

मैंने कहा, “मेरा नाम मंज़ूर है। मंज़ूर मुतलाशी।”

“जी, हमें मालूम है,” बौने ने कहा, “अब बैठिए।” वह एक कोने में से मूढ़ा मेरे लिए खिसका लाया। “क्या चाय पिएँगे?”

मैंने अपना सर हाँ में हिलाया। अजीबो-ग़रीब साथियों की तरफ़ बार बार देखते हुए मुझसे पूछने की जुर्रत न हुई। और यह कैसे हो सकता था कि वह पहले से मेरे नाम से वाक़िफ़ थे?

“यह लें,” वसीम मुझे प्याला देकर दुबारा आग के क़रीब गया। अब वह आटा गूँधकर पराठे सेंकने लगा। जल्द ही कमरा पराठों की लज़ीज़ ख़ुशबू से भर गया। मेरे पेट में चूहे दौड़ने लगे। बौना निहायत मेहनती और तेज़ लगता था जबकि कौअ ज़्यादा उसकी हौसलाअफ़्ज़ाई करते करते अपने मूढ़े पर यों बैठा रहा जैसे कोई मीठा ख़ाब देख रहा हो।

मैं चाय पीता और दोनों को तकता रहा। फिर खाना तैयार हुआ और हम तीनों ख़ामोशी से नाश्ता करने लगे। मुझे पहले कभी कोई खाना इतना मज़ेदार नहीं लगा था। जब सब ख़ूब सेर हो गए तो बौने ने तेज़ी से बरतन धोकर दुबारा चाय के प्याले भर दिए। हर एक चुसकी ले लेकर शोलों के सामने अपने ख़यालात में ग़रक़ हो गया।

"हमें बादशाह सलामत से भेजा गया है," वसीम ने ख़ामोशी को तोड़कर कहा।

"कौन-सा बादशाह?" मेरा तजस्सुस बढ़ गया।

"दुनिया का शाहन्शाह," बौने ने जवाब में कहा।

मेरा चेहरा सवालिया निशान बन गया।

"इस दुनिया का एक ही बादशाह है," कौए ने विज़ाहत की। "अफ़सोस कि इस इलाक़े पर बादशाह के सख़्त दुश्मन की हुकूमत है।" दुश्मन का ज़िक्र करते ही ख़ुदा जाने क्यों एक लमहे के लिए सर्द लहर कमरे में से गुज़र गई और आग की रौशनी मधम पड़ गई।

बौना आहिस्ता बोला, "पहले वह तो बादशाह का कमाँडर था। बड़ा अच्छा और ताक़तवर था। काम करनेवाला। लेकिन रफ़्ता रफ़्ता वह मग़रूर हुआ। सोचा कि मैं ख़ुद ज़्यादा बेहतर तौर से हुकूमत कर सकूँगा। आख़िर में उसे महल और फ़ौज से ख़ारिज करना पड़ा। बड़ी जंग छिड़ गई, तब उसे साथियों समेत निकलकर भागना पड़ा। अब वह यहाँ टिक गया है।"

"लेकिन डरो मत," अनवर ने तसल्ली देते हुए कहा, "बादशाह सलामत ने हमें इस मक़सद के लिए भेज दिया है कि आपकी राहनुमाई करें।"

मैंने एतराज़ किया, "लेकिन मैं कल शाम से ही यहाँ हूँ। वह मुझसे कैसे वाक़िफ़ हो सकते हैं?"

बौने ने फ़ख़्र से कहा, "बादशाह सलामत के अपने रास्ते और तरीक़े हैं। उनमें और हममें ज़मीनो-आसमान का फ़रक़ है। हम किस तरह उनके मक़ासिद की तह तक पहुँच सकते हैं?" वह मुसकराया। "बहरहाल हम आपकी मदद करने आए हैं। और हुज़ूर ने आपके लिए एक तोह्फ़ा भी भिजवा दिया है।" उसने हाथ बढ़ाकर एक कपड़े में लिपटी हुई चीज़ मुझे थमा दी। जब मैंने झिजकते हुए उसे कपड़े से निकाल ली तो मेरा मुँह हैरत से खुल गया। मियान में डाली एक दोधारी तलवार निकली। ऐसी ज़बरदस्त तलवार मैंने कभी नहीं देखी थी। जब उँगली फल पर फेरी तो बौना चीख़ उठा, "एहतियात से! यह बला की तेज़ है।" और सच, गो मैंने बहुत एहतियात बरती तो भी ख़ून की कुछ बूँदें रिसने लगीं। दस्ते में उम्दा क़िस्म के जवाहर जड़े हुए थे। उसके चमकने-दमकने से कमरा रौशन हुआ। मैंने उसे आज़माने के लिए पकड़कर हवा में लहराया।

"काँव, ख़बरदार। मुझे मत मारो," अनवर कौअ चीख़ा और एक तरफ़ उड़कर हट गया।

"ओ। सॉरी," मैं शरमाया।

“आपको बाहर मश्क़ करने के काफ़ी मौक़े मिलेंगे। फ़िलहाल इसे मियान में डालकर कमर से बाँध लेना,” बौने ने मुसकराते हुए कहा।

“लेकिन यह तलवार क्यों? कहाँ काम आएगी?” मैंने पूछा।

बौना अपनी दाढ़ी थपथपाते हुए मुसकरा दिया। “आपको जल्द ही पता चलेगा। अब चलें चलिए। हमें लंबा सफ़र करना है।”

“जनाब, हम कहाँ जा रहे हैं?” मैंने सवाल किया।

बौना बोला, “फ़िकर मत करो। घबराने की कोई ज़रूरत नहीं। मैंने आपको पहले ही बताया कि बादशाह के तरीक़े हमारी समझ से बाहर हैं। वह ख़ुद हमारी मनज़िले-मक़सूद हैं। हमें किसी न किसी तरीक़े से आपको उन तक पहुँचाना है। लेकिन चिंता मत करना। वह क़दम बक़दम हमारी राहनुमाई करेंगे।” यह कहते ही वह मुझे नरमी से धकेलकर बाहर ले गया। हमारा पुरअसरार सफ़र शुरू हुआ।

सराय शुकूक

कमरे की मधम-सी रौशनी से बाहर आते ही हम पलकें झपकने लगे। सूरज की किरनें हवा में लहलहाते पौदों और पेड़ों के पत्तों के साथ कबड्डी खेल रही थीं। फ़िज़ा चिड़ियों की बश्शाश चहचहाहट से भरी हुई थी। "कितना दिलकश मंज़र," मैंने सोचा। "क्या यह पुरसुकून जगह सचमुच दुश्मन के क़ब्ज़े में है?"

मैं बोला, "दिल करता है कि कुछ देर ठहरकर इस सुंदर नज़ारे से लुत्फ़ उठाए।"

"टिक!" हम सब चौंक पड़े। एक तीर क़रीब के पेड़ में लगा हुआ अब तक हिल रहा था।

यह देखते ही वसीम मेरे हाथ को पकड़कर सर पर पाँव रखकर भागने लगा। कुछ फ़ासले पर हम हाँपते हुए एक घनी झाड़ी में घुस गए। वसीम ने भींचे हुए दाँतों में से सरगोशी की, "देखा आपने उस तीर का रंग।"

"जी," मैं बोला। "वह काले रंग का है।"

"यह हमारे दुश्मन का सरकारी रंग है। अब ख़ामोश। वह आपको तलाश कर रहे हैं।"

और सच, थोड़ी देर बाद सिपाहियों का दस्ता घोड़ों को दौड़ाते नज़र आया। परिंदों की चहचहाहट एकदम दब गई। एक काला बादल सूरज के सामने छा गया। मेरे दिल पर बेबयान दहशत तारी हुई। सिपाही काले काले ज़िरह-बकतर पहने हुए थे। उनके चेहरे निहायत सख़्त और ज़ालिम लग रहे थे। हमारे क़रीब रुककर वह इधर-उधर ढूँडने लगे। किसी सिपाही की नज़र अनवर पर पड़ी जो एक पेड़ की चोटी पर उड़कर बैठा था। "शूँ," उसने तीर चलाया। लेकिन कौअ एक तरफ़ फुदककर बच गया। महज़ एक छोटा-सा पर चक्कर काट काटकर आहिस्ता ज़मीन पर आ ठहरा।

"चल यार। छोड़ दे उसे। तफ़रीह करने नहीं आए," दस्ते का लीडर गरजा। फिर वह एड़ लगाकर आगे निकले। अजीब बात यह थी कि न फ़ौजियों न ही घोड़ों ने शोर-शराबा मचाया। वह ख़ामोशी से ग़ायब हुए।

"उफ़!" मैंने लंबी साँस खींच ली। हम झाड़ी से निकले, और कौए ने उतरकर दुबारा हमारा साथ दिया। अब मेरा चले जाने का कोई एतराज़ न रहा। हम दबे पाँव कौए के पीछे रवाना हो गए।

चलते चलते हम एक पहाड़ के दामन में पहुँचे। अब धूप काफ़ी तेज़ हो गई थी। एक पेड़ की छाँह में आराम करने के बाद हम चढ़ने लगे। मैं एक चौड़े रास्ते पर क़दम रखनेवाला था कि अनवर ने मुझे रोक दिया। "नहीं, इस पर मत जाओ।" उसे छोड़कर वह हमें एक छोटी टेढ़ी-मेढ़ी पगडंडी पर ले गया। "इस रास्ते में हम किसी को मिले बग़ैर चोटी तक पहुँचेंगे," उसने दबी आवाज़ में कहा।

पगडंडी साँप की तरह कभी इस तरफ़, कभी उस तरफ़ रेंगती हुई चढ़ती गई। चढ़ते चढ़ते हमारी साँस फूलने लगी। रंगारंग तितलियाँ क़िस्म क़िस्म के महकदार फूलों की चुसकी ले लेकर मस्ती से झूम रही थीं।नीला नीला आसमान हमारे ऊपर तबस्सुम कर रहा था। मैं और वसीम पसीने से शराबोर हो गए, और भिभिनाती मक्खियाँ हमें तंग करने लगीं। जब हम हाँपते हाँपते चोटी पर पहुँचे तो धूप की शिद्दत टूट गई थी। जहाँ रास्ता दूसरी तरफ़ उतरने लगा वहाँ फूलों से भरा हुआ बाग़ था। उसके बीच में एक सराय हमको आराम करने की दावत दे रही थी। इतनी मेहनत-मशक़्क़त के बाद यह कितना पुर-कशिश मंज़र था।

"हम रात को सराय में बिताएँगे," अनवर कौए ने फ़ैसला किया। हम बाग़ में से गुज़रकर दरवाज़े पर पहुँचे। एक और मेहमान हमसे पहले आ चुका था। वह दरवाज़े के सामने झिजकते हुए धीमी आवाज़ में कुछ दोहरा रहा था। मैंने दरवाज़े के ऊपर नज़र डाली तो वहाँ दीवार में कुछ कंदा किया गया था। मैंने आहिस्ता पढ़ा, "सराय शुकूक।" कान

लगाकर सुना तो दूसरा नौजवान बार बार बुड़बुड़ाते हुए कह रहा था, “अंदर जाऊँ कि न जाऊँ ... न जाऊँ कि जाऊँ?”

सलाम करके मैंने अपने और साथियों का तआरुफ़ कराया फिर पूछा, “आप क्या कर रहे हैं?”

“मैं इस कशमकश में फँसा हूँ कि अंदर जाऊँ या न,” उसने त्योरी चढ़ाकर जवाब दिया।

“क्यों नहीं?”

“हाँ, क्यों नहीं?” वह ख़ुशी से पुकारा। “आपकी बात भी सही है।”

मैंने दस्तक दी तो दरवाज़ा खुला। एक ख़ुशमिज़ाज आदमी दहलीज़ पर खड़ा हुआ। “ख़ुशआमदीद, ख़ुशआमदीद,” वह बोला और हाथ से अंदर आने का इशारा किया। “जंगल की तरफ़ से आए हुए होंगे ना?”

हम सबने हाँ में सर हिलाया। उसने हमें गोल कमरे में लेकर चारपाइयों पर बिठाया। हम शुक्रगुज़ारी की साँस लेकर बैठ गए।

“कुछ खाएँगे?” भठियारे ने पूछा। जवाब का इंतज़ार किए बग़ैर वह किचन में ग़ायब हुआ। कमरा सादा-सा लेकिन साफ़-सुथरा था। एक तरफ़ आतिशदान में आग भड़क रही थी। कुछ देर तक सिर्फ़ आग की चटख़ती आवाज़ सुनाई दी।

“आपका इस्मे-शरीफ़?” मैंने ख़ामोशी तोड़कर दूसरे मेहमान से पूछा जो झुकते हुए हमारे साथ दाख़िल हो गया था।

“तारिक़,” वह बोला। “तारिक़ तज़बज़ुब।”

“हैलो!” एक लंबे क़द के नौजवान ने खिड़की में से अंदर झाँककर आवाज़ दी। “कोई है?” हमें देखकर वह एक लंबी-दुबली टाँग अंदर डालकर कमरे में दाख़िल हुआ। लेकिन पहली टाँग दूसरी के साथ उलझ गई, और वह धड़ाम से ज़मीन पर गिर गया। ज़मीन पर बैठे उसकी बड़ी और नीली नीली आँखों ने संजीदगी से हमें देखा फिर कहा, “सलाम! मेरा नाम बीरबल है।”

“बीरबल? मैं तो सिर्फ़ अकबर बादशाह के वज़ीर बीरबल को जानता हूँ,” मैंने हैरानी से पूछा।

“हाँ, वही।” वह बोला। “मेरे चचा रामन को अकबर और बीरबल की कहानियाँ बड़ी पसंद थीं। वह बोले, ‘बीरबल नाम रखोगे तो क्या जाने यह बेटा कहाँ से कहाँ तक पहुँचेगा’।”

हम दूसरों ने अपना अपना तआरुफ़ कराया, और वह हमारे साथ चारपाई पर बैठ गया। वह कैसा अजीब बंदा था। उसकी गंजी खोपड़ी चमक रही थी जबकि चोंच जैसी नाक के नीचे पतले होंटों पर हमेशा एक कान से दूसरे तक मुसकान रहती थी। साथ साथ वह गपें मारने से कभी नहीं थकता था।

“लगता है कि आगे का सफ़र कुछ मुश्किल होगा,” तारिक़ बोला।

“आपकी बात बिलकुल दुरुस्त है,” भठियारे ने वापस आकर गरमागरम नान और लज़ीज़ सालन हमारे सामने मेज़ पर रखकर कहा। “आप ख़ुद देख लें।” उसने एक खिड़की खोलकर बाहर का मंज़र

दिखाया। सूरज डूबने को था। छोटी छोटी बदलियाँ उसे अलविदा कहने के लिए उफ़ुक़ पर जमा हो गई थीं। उस तरफ़ वही जंगल फैला हुआ था जिससे हम निकले थे। सूरज की आतिशीं किरनों में वह निहायत जादूफ़रेब लग रहा था। फिर उसने दूसरी तरफ़ की खिड़की खोली। उसका नज़ारा देखकर हम सख़्त घबरा गए। उफ़ुक़ तक रेत ही रेत फैली हुई थी। न कोई दरख़्त न कोई पौदा। उस तरफ़ नए चाँद का जाम उभर आया था। उसकी रुपहली चाँदनी में स्लेटी टीलों के भूत जैसे लंबे लंबे साय पहरा लगा रहे थे। हमारी परेशानी देखकर भठियारा मुसकराया।

“ज़ाहिर है कि अक़्लमंद इनसान कौन-सा रास्ता इख़्तियार करेगा,” उसने फ़तहमंदी से कहा।

“बिलकुल,” बीरबल चहचहाया। “रेगिस्तान ही जाना है।”

भठियारा बिफर गया। “आपके साथी कुछ भोले-भाले लगते हैं। उनको समझाना, ना। कि यह बहुत मुश्किल सफ़र है।”

बीरबल ने उसकी सुनी अनसुनी करके कहा, “मुझे रेगिस्तान बहुत पसंद है। कितने सुंदर टीले। उन पर चढ़कर कितना मज़ा आएगा। मेरे चचा रामन ने एक बार कहा, ‘बीरबल बेटा। रेगिस्तान निस्फ़े-जहान। उससे निपटो तो हर मसले से निपटोगे।’ यह उन्होंने उस वक़्त कहा जब रेगिस्तान में मारे मारे फिरकर अध-मुई हालत में गाँव वापस पहुँचे थे।”

तारिक़ शक में मुब्तला हो गया था। उसने पूछा, “क्या रेगिस्तान में से कोई रास्ता नहीं गुज़रता?”

“आप ख़ुद झाँक मारें। क्या कोई रास्ता नज़र आता है? नहीं। अगर आप मेरा मशवरा क़बूल फ़रमाएँ तो आप सीधा वापस चलेंगे।”

मैंने मायूसी से अपने दो साथियों पर नज़र डाली तो अनवर उड़कर मेरे कंधे पर बैठ गया और आहिस्ता से मेरे कान में बोला, “फ़िकर मत करना। इस आदमी से ख़बरदार रहना। बादशाह ने पहले से मुझे आगाह किया है। इसकी न मानना।”

यह सुनकर मुझे कुछ तसल्ली हुई। लेकिन तारिक़ की घबराहट बढ़ती गई।

“20 दिन हुए सिपाहियों के एक दस्ते ने मेरा मशवरा रद किया,” भठियारा बोला। “परसों एक बंदा वापस आया। यक़ीन करो, जनाब! दूसरे लोग सबके सब झुलसाती धूप में भटकते भटकते मर चुके थे। वाहिद एक ही बच निकला।” जब उसने महसूस किया कि मैं उसकी बात से मुतअस्सिर नहीं हो रहा तो वह मेरी तरफ़ ध्यान देकर कहने लगा, “मेरी मान लो। ज़रा सोचो। मुझे धोका देने की क्या ज़रूरत है। मेरे लिए झूट बोलने में क्या फ़ायदा होता?”

“सो क्या यह आप ही के सिपाही हैं जो काले ज़िरह-बकतर पहने बाहर घूमते-फिरते हैं?” बीरबल ने मासूमियत से पूछा।

"कौन-से सिपाही? मैंने तो नहीं देखा," भठियारे ने झुँझलाकर पूछा। उसने मुसकराने की कोशिश की, लेकिन आँखों में ग़ुस्सा साफ़ झलक रहा था।

बीरबल बोला, "मैं चौड़े रास्ते पर चढ़ रहा था कि काले ज़िरह-बकतर पहने दो सिपाहियों ने मुझे रोक दिया। कहा कि आगे मत जाओ, रास्ता बंद है। लेकिन मैं इतना बड़ा बेवुक़ूफ़ भी नहीं हूँ। मैंने नीचे की तरफ़ हाथ से इशारा करके चीख़ा, 'वह देखो!' उनको झटका लगा और उस तरफ़ देखने लगे तो मैं सीधे आगे भाग निकला। लेकिन अफ़सोस, उन्होंने मुझे पकड़ लिया।"

"फिर क्या हुआ?" मैंने पूछा।

"वह मुझे पीटने लगे। हाय हाय, मेरी हड्डी हड्डी दुख रही थी। शुक्र है कि मैं जंगली कुत्तों की वजह से बच गया।"

"जंगली कुत्तों की वजह से?" भठियारे ने ताज्जुब से पूछा।

"जी, बिलकुल। अचानक कुत्तों के दल ने हम पर वार किया। बड़ा शोर-शराबा मच गया। जब वह ग़ुर्राते और भौंकते हुए हमसे उलझ गए तो मुझे अपने चचा रामन का ख़याल आया।"

"चचा रामन?"

"हाँ। एक बार वह जंगल में केले उठाए चल रहे थे कि बंदर उन्हें तंग करने लगे। तब वह अपनी जान छुड़ाने के लिए कुछ केले फेंककर भागने लगे।"

“फिर क्या हुआ?”

“वह फेंकते गए और बंदर खाते गए। जब अगले गाँव पहुँचे तो केले तमाम हुए थे। वह कहा करते थे, ‘बीरबल बेटा, यह पूछा करो कि क्या केले ज़्यादा अहम हैं या मेरी जान’।” यह याद करके मैं सफ़र की रोटी सिपाहियों को थमाकर भाग गया। तब कुत्ते मुझे छोड़कर सिपाहियों पर टूट पड़े। उतने में मैं सुकून से सफ़र जारी रख सका।”

“कैसी बात!” वसीम बोला। “आप कहाँ जा रहे हो?”

बीरबल झिजका। “पता नहीं कि आप मेरी बात मानेंगे।”

“बताओ तो सही।” अनवर टर्राया।

“मैं बादशाहत की तलाश में हूँ। क्या आपने इसके बारे में कुछ सुन लिया है? अब मेरे दोस्त मुझे बीरबल बेवुक़ूफ़ कहते हैं। एक ने भी मेरी बात न मानी।”

“वाह जी वाह!” वसीम ने दाद दी। “बहुत ख़ूब। आप हमारा साथ दे सकते हैं। हम भी उस तरफ़ जा रहे हैं।”

यह सुनकर बीरबल फूले न समाया।

भठियारे ने जवाब न दिया। मालूम नहीं क्यों, वह निहायत नाख़ुश लग रहा था। हम मिलकर खाना खाने लगे।

तारिक़ बोला, “लेकिन हमें कोशिश तो करनी चाहिए कि नहीं? शायद कुछ देर करें? या शायद मज़ीद मालूमात हासिल करना चाहिए।”

भठियारा बोला, “ज़रूर देर करना चाहिए। तब आपको मालूम होगा कि आगे जाना फ़ज़ूल है।”

बीरबल चहका, “हाँ, हाँ। मैं तो कल सुबह-सवेरे ही चला जाऊँगा। कितना मज़ा लेंगे हम!”

भठियारा अपने अजीब मेहमान कोई जवाब न दे पाया, और वह ख़ामोश रहा।

हम सबने पेट भरकर खाना खाया, फिर अँगड़ाइयाँ लेते हुए इजाज़त माँगी। गोल कमरा ख़ाबगाह में बदल गया। भठियारे ने आग बुझा दी और प्लेटें लेकर चला गया। चारपाई पर अपने पाँव फैलाते ही मैं गहरी नींद सो गया। लेकिन सोते सोते अजीबो-ग़रीब ख़ाब मेरे सामने से गुज़रते हुए मुझे परेशान करने लगे।

एक ख़ाब में माँ-बाप ग़ुस्से से चीख़ते-चिल्लाते मुझे बुला रहे हैं। लेकिन पूरी जिद्दो-जहद के बावुजूद मैं उनके पास नहीं आ सकता। वह धमकियाँ देने लगते मगर बेफ़ायदा। फिर अब्बू जी मेरे बालों को पकड़कर मुझे अपनी तरफ़ घसीटने की कोशिश करते। लेकिन मेरे पाँव जम गए हैं। आख़िर में वह मायूस होकर चले जाते हैं। माँ के बहते आँसुओं को देखकर मेरा दिल टूट जाता है। अब मेरी प्यारी बहन नमूदार होकर इल्तिजा भरी नज़रों से मुझे अपने साथ जाने को कहती है। सिसकियाँ भर भरकर वह मेरे हाथ को पकड़ लेती है। मेरा दिल उसे राज़ी करने को करता है, और सचमुच मैं खिसकते खिसकते उसके पीछे

हो लेता हूँ। लेकिन अचानक एक चमकती हुई हस्ती रास्ते में हाइल हो जाती है। उसे देखकर मेरा जाने का इरादा जाता रहता, और मैं धड़ाम से बहन से अलग हो जाता हूँ। वह चीख़ती-चिल्लाती ग़ायब हो जाती है।

मैं जाग उठा। मेरा पूरा जिस्म पसीने में शराबोर था। फिर करवट बदलकर एक ज़्यादा डरावना ख़ाब देखने लगा।

मैं एक जंगल में हूँ। रास्ता कोई नहीं दिखता। तब एक साँप क़रीब के दरख़्त पर रेंगने लगता है। मेरी दहशतज़दा आँखों के सामने ही एक सुंदर रंगारंग पंछी उसकी लपेट में आ जाती है, और वह उसे घोंटते घोंटते ख़त्म कर देता है। आख़िर पंछी का बेजान जिस्म गीली घास पर गिरकर पड़ा रहता है।

अब साँप शाख़ से लटककर मुझसे मुख़ातिब होता है। "सी-सी, तू कौन है?" वह सिसकारता है। "मैं बताता हूँ तुझे। तू कुछ भी नहीं है। इतने ज़ोर से हाथ-पाँव मारना फ़ज़ूल है। छोड़ दे अपनी कोशिशें। ज़िंदगी के मज़े ले और बस। यह क्या वहम तेरे सर पर सवार हुआ है? बादशाहत? शहज़ादा? अगर हो भी तो तू कहाँ और वह कहाँ? सी-सी ... तू ख़ाक है और दुबारा ख़ाक में मिल जाएगा। बात ख़त्म। फ़ज़ूल हैं तेरी काविशें, फ़ज़ूल, फ़ज़ूल!"

साँप की सिसकारती आवाज़ गूँजती जाती। यकायक वह आगे लपकता है, और मेरा सुन्न बदन उसकी लपेट में आ जाता है। वह

बल खाते खाते मुझे घोंटने लगता। साथ साथ वह मुझे एक अंधेरे गढ़े में खींचता रहता है, एक ऐसे गढ़े में जिसकी कोई तह नहीं।

“सच है उसकी बात,” मैं मायूसी से सोचता हूँ। “मैं कौन हूँ? मैं कहाँ से आया हूँ? मैं कहाँ जा रहा हूँ?”

अचानक एक पुरसुकून आवाज़ फ़रमाती है, ”मैं ही ने तुझे जान लिया है।” नीचे देखता हूँ तो वही पुरनूर हस्ती बाँहों को फैलाकर खड़ी है। “वह मुझे पकड़कर बचाने के लिए खड़े हैं,” मैं हैरत से सोचता हूँ। साँप एकदम टुकड़े टुकड़े होकर ग़ायब हो जाता है, और मैं उस हस्ती के नरमो-मुलायम बाँहों में गिर जाता हूँ।

उसको मैं किस तरह बयान करूँ? अब उसके नरम हाथ मेरे माथे को छू देते हैं, और मेरे बेहिसो-हरकत आज़ा को नई ताक़त मिलती है। मेरा दिल इतमीनान और सुकून से भर जाता है। मैं अपना सर उठाता हूँ। यह हस्ती मेरी तरफ़ देखते हुए मुसकरा रही है। अचानक मैं उसे पहचान लेता हूँ। महल के मालिक हैं। उनके चेहरे को तकते तकते मैं उनकी मुस्कान में ग़रक़ हो जाता हूँ।

रेगिस्तान

मैं जाग उठा। अब तक अंधेरा था। बौना और कौअ सफ़र की तैयारियों में मसरूफ़ हो गए थे। तारिक़ अब तक घोड़े बेचकर सो रहा था। मैंने उसे हिलाया तो उसने सिर्फ़ "ओँ" कहकर करवटें बदलीं। ज़ोर से झँझोड़ा तो वह बुड़बुड़ाया, "छोड़ दो मुझे।"

हमारा अजीब साथी बीरबल पुश्ती थैला बाँधकर तैयार खड़ा था।

"आओ, चलें," वसीम ने सरगोशी की। अपना थोड़ा-सा सामान उठाकर मैं दरवाज़ा खोलने को था कि कौए ने मुझे रोक दिया। "इधर से," वह बोला और खिड़की को चोंच से खोलकर बाहर निकला। हम चुपके से उसके पीछे रवाना हो गए। अब तक बाग़ में ख़ामोशी फैली हुई थी। एक पत्ता भी नहीं हिल रहा था। हमने ओस से तर घास में से गुज़रकर रेगिस्तान का रुख़ लिया। दो-चार क़दम आगे बढ़े तो अचानक मुझे सर्दी लगी। एक तरफ़ कोई आदमी दबी आवाज़ में बोल रहा था। वहाँ झाँका तो धुँधलके में भठियारा चंद काले ज़िरह-बकतर पहने सिपाहियों के साथ बात कर रहा था। फिर 'झनक झनक' की

आवाज़। भठियारे ने अपनी जेब में चमकते हुए सिक्के डाल दिए। हम जल्दी जल्दी दबे पाँव आगे निकले।

उतरते वक़्त सूरज की चुटिया उफ़ुक़ पर दिखने लगी, फिर उसका लाल-पीला-सा मुँह। हमारे नीचे दूर दूर तक लक़ो-दक़ बयाबान बिछा हुआ था।

"ठहरो! ठहरो!" यकायक किसी की चीख़ती चिल्लाती आवाज़ हमारे कान में पड़ गई। मुड़कर देखा तो तारिक़ टूटकर हमारे पीछे दौड़े आ रहा है। "शुक्र है कि आपको मिला," वह पहुँचकर फूट पड़ा। पहले इतना परेशान था कि कोई साफ़ बात न निकल पाई। फिर हाँपते हुए हमें अपनी राम कहानी सुनाई। हमारे बाद उठा तो जल्दी जल्दी दरवाज़े से निकलने को था कि भठियारा काले ज़िरह-बकतर पहने सिपाहियों के साथ उसकी ताक में बैठा था। उसे पकड़कर पूछा कि दूसरे कहाँ हैं। जब वह कोई जवाब न दे सका तो ख़ूब मार-पीटकर दफ़ा कर दिया। "लगता था कि वह मुझमें कोई दिलचस्पी नहीं ले रहे थे। ज़्यादा आप ही के पीछे पड़े हुए हैं," वह बोला।

हम रेगिस्तान के किनारे तक पहुँचे। रेत धूप में झिलमिला रही थी।

अनवर बोला, "हमें जितनी जल्दी हो सके बयाबान को उबूर करना है।"

तारिक़ ने ग़मगीन होकर पूछा, "क्या कोई और रास्ता नहीं?"

"नहीं, सिर्फ़ यही एक रास्ता है।"

"अरे, यह क्या है?" नज़दीक ही रेत के एक टीले के पीछे कोई चीज़ चमक रही थी। आगे बढ़े तो वहाँ एक छोटी-सी जीप खड़ी थी। तारिक़ अपने आप पर क़ाबू न पा सका बल्कि जीप पर झपट पड़ा। चाबी लगी थी। उसने उस पर सवार होकर चाबी घुमाई। मोटर की गुड़-गुड़ की आवाज़ निकली। "ठीक ही चल रही है," तारिक़ ख़ुशी से ललकारा।

"आप इसे इस्तेमाल मत करना। जहाँ हम जाएँगे वहाँ रेत उतनी नरम है कि जीप उसमें धँस जाएगी।" अनवर उम्मीद ने तंबीह दी।

"फिर मैं सख़्त ज़मीन ढूँड ढूँडकर उसी पर से गुज़रूँगा," तारिक़ मोटर की आवाज़ का मुक़ाबला करते हुए चिल्लाया। फिर भी वह काफ़ी देर तक झिजकते हुए गाड़ी में बैठा रहा। लेकिन आख़िरकार वह धुएँ के बदबूदार बादल में छुपकर रवाना हुआ। मैं रश्क की नज़र से उसके पीछे तकता रहा। फिर अनवर कौए ने मुझे अपनी चोंच से कंधे पर थपकी देकर कहा, "चलें। आज लंबा रास्ता तय करना है।"

वसीम बीरबल से बोला, "भई, तुम्हारा पुश्ती थैला बहुत भारी है। उसमें क्या रखा है तुमने?"

बीरबल चहका, "यह सब बहुत ज़रूरी चीज़ें हैं। मैंने छोटा-सा चूल्हा और उसे चलाने के लिए मिट्टी के तेल का कनस्तर रखा है।"

वसीम बोला, "दोस्त, बेहतर है कि इसे यहीं छोड़ दो। यह भारी है और यहाँ काम नहीं आएगा।"

लेकिन बीरबल अड़ा रहा, तो हम ठंडी साँस भरकर रेगिस्तान पार करने लगे। नरम नरम रेत के टीलों पर क़दम रखकर पाँव अकसर एड़ी तक बल्कि कभी घुटने तक धँस जाता। घास का तिनका तक उस वीरान इलाक़े में नज़र न आया। चारों तरफ़ रेत के टीले ही टीले और ऊपर झुलसाती धूप। कहीं पनाह लेने की कोई जगह नहीं। कौअ कभी मेरे और कभी वसीम के कंधे पर उड़कर बैठ जाता। कभी हवा में उड़कर राह तलाश करता। एड़ियाँ रगड़ते रगड़ते मैंने अंदाज़ा लगाया कि आया हम राख बन जाएँगे या मोम की तरह पिघल जाएँगे। लेकिन अब मुड़ने का इमकान ही न था।

शुरू में बीरबल बड़ा मज़ा ले लेकर चल रहा था। कभी किसी टीले पर चढ़कर नज़ारे की तारीफ़ करता, कभी रेत की ख़ूबसूरती पर ध्यान देता। लेकिन हौले हौले उसका जोश मधम-सा पड़ गया, और आख़िरकार वह भी चुपके से चलता गया। उसका पुश्ती थैला उसे बहुत तंग करने लगा।

चलते चलते दिन ढलने लगा। बौने के पास पानी का जो कनस्तर था ख़ाली हो चुका था। अब वह एक टीले के पीछे गया और कुरेद कुरेदकर छोटा गढ़ा बनाया। “इस जगह से बद्दू सदियों से पानी निकालते हैं,” उसने विज़ाहत की। पहले कोई पानी दिखाई न दिया। मगर धीरे धीरे गढ़े की तह में नमी जमा होने लगी। और देखते देखते आधा गढ़ा भर गया। वहाँ हम रात के लिए ठहर गए। सूरज डूब गया और चाँद उभरने लगा। यहाँ लातादाद जगमगाते सितारों के नीचे इनसान अपने आपको कितना

छोटा और लाचार महसूस करता था। ठंड बढ़ गई। हमने करवटें बदलते सर्द ज़मीन पर रात गुज़ारी। सब ख़ुश हुए जब तड़के की नरम-मुलायम उँगलियाँ हमारे अकड़े आज़ा की मालिश करने लगी। अँगड़ाइयाँ लेते हुए हमने सफ़र जारी रखा। काफ़ी देर तक कोई क़ाबिले-ज़िक्र बात न हुई, और हम ख़ामोशी से पसीने में शराबोर आगे बढ़ते गए।

दोपहर के वक़्त उफ़ुक़ पर चंद बड़े बड़े परिंदे हवा में सुस्ती से मँडलाते हुए नज़र आए।

"गिद्ध," अनवर ने घिन से कहा। "यह ग़लीज़ क्या ढूँड रहे हैं? क्या कोई जंगली जानवर मरनेवाला है?"

नज़दीक आकर तो क्या देखते हैं। एक बेजान शक्ल रेत पर पड़ी है।

"तारिक़!" मैं चीख़ा।

बेचारे ने कोई जवाब न दिया। मैंने लपककर उसकी नब्ज़ देखी। "बेहोश है लेकिन ख़ुदा का शुक्र है ज़िंदा है। उसे पानी पिला देना।"

वसीम ने एहतियात से उसके मुँह में थोड़ा थोड़ा पानी डाला तो हौले हौले उसकी आँखें खुल गईं। "मैं ... मैं कहाँ हूँ?" उसने धीमी आवाज़ में पूछा।

"पहले आराम करो," बौने ने उसे तसल्ली देकर कहा।

तारिक़ ने अपनी आँखें बंद कीं। बौने ने उसे रुक रुककर और पानी पिलाया। फिर तारिक़ ने आहिस्ता कहा, "आपकी बात दुरुस्त निकली। कल दोपहर को जीप धँस गई, रेत में। फिर मैं पैदल चलने लगा ..."

"अब आराम करो," मैंने कहा।

हमने वहाँ पड़ाव डाला। फ़ैसला हुआ कि शाम के वक़्त सफ़र को जारी रखेंगे। सब धूप में बैठे बैठे ऊँघने लगे। यकायक मैं उठ बैठा। सूरज की आख़िरी ज़ालिम किरनें रेत को ख़ून में भिगो रही थीं। मैंने चारों तरफ़ झाँक मारी। तारिक़ ओझल हो गया था। मैं उछल पड़ा। बीरबल भी अँगड़ाइयाँ लेते हुए अपने पुश्ती थैले में टटोलने लगा। "मेरा कनस्तर कहाँ चला गया?" उसने हैरत से पूछा। हर तरफ़ ढूँडा, लेकिन मिट्टी के तेल का कनस्तर ग़ायब हो गया था।

"तारिक़ ने यह सोचकर कि उसमें पानी है उसे छीन लिया होगा," मैं बोला। "अब वह किस तरह बचेगा?"

दूसरे भी बेदार हो चुके थे। जब पता चला कि क्या हुआ है तो कौए ने कहा, "बेशक वह भाग गया है। सोचा होगा कि पानी कम है। बेचारा बेवुक़ूफ़। अब वह किस तरह रास्ता मालूम कर पाएगा? और पानी भी नहीं है।"

हम आगे बढ़े। रात की सियाहफ़ाम और मुलायम चादर हमारे इर्दगिर्द लिपट गई। चाँदनी और जगमगाते सितारों की रौशनी में काफ़ी देर चलते चलते आख़िरकार चंद काली देव जैसी शक्लें सामने नज़र आईं।

"शुक्र है! पहुँच गए हैं," कौए ने कहा।

छोटा-सा नख़लिस्तान था। खजूर के कुछ पेड़ एक गुनगुनाते चश्मे की ख़िदमत में हाज़िर थे। मीठे मीठे खजूरों और चाँदनी में चमकते पानी

से सेर होकर हमने नरमो-मुलायम घास में अपने पाँव फैलाए। अनवर कौअ एक छोटे-से दरख़्त पर बैठ गया। हलकी हलकी हवा नख़लिस्तान में फुसफुसा रही थी, और दरख़्त जवाब में आहें भर रहे थे।

"घास की कितनी उम्दा ख़ुशबू होती है," मैं बोला। बीरबल की तरफ़ देखा तो वह ख़र्राटे मारने लगा था।

कौअ टर्राया, "यहाँ बादशाह के फ़रज़ंद एक बार ठहरे। 40 दिन अकेले रहे।"

"क्यों?" मैंने दिलचस्पी से पूछा।

"वह रेगिस्तान को पार करके दुश्मन के इलाक़े में जाने का इरादा रखते थे," उसने जवाब दिया। दो-चार लमहों के लिए ख़ामोश रहा। सिर्फ़ चश्मे का गीत और दरख़्तों की आहो-नाला सुनाई दी।

"शाहज़ादे ने यहाँ अपना ज़िरह-बकतर, ढाल और तलवार उतारकर एक निहायत सादा-सा चरवाहे का लिबास पहन लिया। उनके मनसूबे समझ से बाहर हैं।" वह फिर ख़ामोश हुआ।

"फिर क्या हुआ?" मैंने बेक़रारी से सवाल किया।

"दुश्मन उनकी ताक में बैठा था। लेकिन चूँकि वह एक ज़बरदस्त सूरमे के इंतज़ार में थे इसलिए सिपाहियों ने उन पर ध्यान न दिया। यों वह चरवाहे के कपड़े पहने मुल्क में दाख़िल हुए।"

"क्या उन्होंने लोगों को बग़ावत के लिए उभारा?" मैंने पूछा।

“हरगिज़ नहीं। वह हर जगह घूमते-फिरते लोगों को अपनी बादशाही के बारे में सुनाने लगे। उनकी सीधी-सादी बातें सुनकर लोग उस बादशाहत में दिलचस्पी लेने लगे। शाहज़ादे में कोई जादू था जो सुननेवाले हुजूमों को अपनी तरफ़ खींच लाता था।”

“लेकिन इसका क्या मक़सद था?” मैंने पूछा। “क्या वह अपनी अज़ीम फ़ौज के साथ मुल्क पर क़ब्ज़ा नहीं कर सकते थे?”

वसीम नरमी से मुसकरा दिया। “आपको बहुत कुछ सीखने की ज़रूरत है। हमारे शाहज़ादा ऐसा बंदा नहीं हैं। वह ज़ालिम नहीं हैं। वह लोगों का माल नहीं चाहते बल्कि उनके दिल, उनकी मुहब्बत। बादशाहत को बयान करने से वह उम्मीद रखते थे कि लोगों के दिल जीत लेंगे। बहरहाल आख़िरकार दुश्मन के जासूस उन पर तवज्जुह देने लगे। अपने मालिक को इत्तला दी कि यह सादा-सा चरवाहा रिआया को बादशाह की तरफ़ मायल कर रहा है । फिर इस शरीर सरदार ने क्या किया? क्या उसने शहज़ादे को मार डाला? नहीं, उसके तरीक़े बहुत घटिया हैं। उसने अपने जासूस के ज़रीए लोगों को चरवाहे के ख़िलाफ़ उकसाया।”

“लेकिन वह तो शाहज़ादे के दोस्त थे,” मैंने एतराज़ किया।

“जी, ज़रूर। लेकिन इनसान की फ़ितरत के बारे में क्या बताऊँ,” कौए ने जवाब दिया। “जितना वह पहले उनके हक़ में थे उतना ही वह अब उनके ख़िलाफ़ नारे लगाने लगे। वह इतने तैश में आए कि आख़िर में उन्होंने उन्हें फाँसी दी। ”

“तो सब बेकार और फ़ज़ूल था!” मैंने मायूसी से कहा।

“यह सब कुछ बादशाह का मनसूबा था,” बौना बोला।

मैं बुड़बुड़ाया, “यह तो कोई अच्छा अंजाम नहीं था।”

कौए और बौने ने कोई जवाब न दिया। मैं बिफर गया। हमाक़त की ऐसी बातें कौन बरदाश्त कर सकता है? मैं ख़ामोशी से उठा और बेसोचे-समझे खजूर के पेड़ों में से घूमने लगा।

एक उम्दा तलवार

ख़ुदा जाने मैं क्यों इस क़दर नाराज़ हो गया था। मेरे साथियों ने बार बार अपनी ख़ालिस दोस्ती का इज़हार किया था। शायद मुझे उनकी इन अजीब बातों से यों लग रहा था जैसे वह मेरा मज़ाक़ उड़ा रहे हों। मैं अंधा-धुंद चलते चलते नख़लिस्तान के किनारे तक पहुँचा, फिर उसके किनारे किनारे टहलने लगा। अभी तक दिल परेशानी और ग़ुस्से से मुज़तरिब था। यों बेमक़सद घूमते-फिरते यकायक कुछ फ़ासले पर आग की रौशनी रात के अंधेरे में टिमटिमाती नज़र आई। मैंने नख़लिस्तान को छोड़कर उस तरफ़ रुख़ किया तो एक अजीब-सा मंज़र देखा। आग के इर्दगिर्द हौलनाक शक्लें नाच रही थीं। दूर से इनसान लगते तो थे लेकिन क़रीब आकर पता चला कि उनके सर मुख़्तलिफ़ वहशी जानवरों के-से थे। किसी का सर भेड़िये का था, दूसरे का लकड़बग्घे का, तीसरे का मुर्ग़ का। ग़ौर से देखा तो उनके हाथ और पाँव जानवरों के थे जबकि अकसरों के पीछे दुम लहरा रही थी। मेरे आते ही अचानक फ़िज़ा उनके बेबयान शोरो-ग़ुल से भर गई। मैं सख़्त घबरा गया। उनकी दहाड़ों, गरजों,

चिंघाड़ों, बाँगों और डकारों से यों लग रहा था कि दोज़ख़ फूटकर हँस रहा हो। लेकिन जो बात वह कह रहे थे उससे मेरे दाँत बजने लगे। वह चीख़ रहे थे, "वह आ गया है!" उनकी लड़खड़ाती नाच मज़ीद तेज़ हो गई। साथ साथ लाशों का ताफ़्फ़ुन फैल गया।

"ख़ामोश!" नागहाँ सुक़ूत तारी हो गई। उन अजीब ग़ोलों के दरमियान एक आदमी काला ज़िरह-बकतर पहने हुए खड़ा हुआ। उसका चेहरा ख़ुशनुमा था लेकिन उसकी आँखों में से ज़ुल्म, घमंड और सख़्ती टपक रही थी।

"बेटा, इधर आओ," उसने हुक्म दिया।

मैं सहम गया। दिल भागना चाह रहा था लेकिन उस आदमी के रोब से मेरा जिस्म हिचकिचाने लगा।

"आओ तो सही!" उसने दोहराया तो मैं बेइख़्तियार क़रीब आया।

"कहाँ जा रहे हो, बेटा?" उसने पूछा। "और यह क्या है?"

मैंने नीचे देखा तो हक्का-बक्का रह गया। यह क्या जादू था? मैंने बेइख़्तियार अपनी तलवार मियान से खींच ली थी।

"यह कहाँ से मिली है?" ग़ोलों के राहनुमा ने बेसब्री से पूछा। "कितनी ख़ूबसूरत है। मुझे दिखाओ।" वह आगे झपटकर तलवार को पकड़ने को था कि मुँह से चीख़ निकली। "आह!" तलवार को छूते ही वह पीछे लपका, यों जैसे तलवार सुलगता अंगारा हो। दर्द से अपने

हाथ को मल मलकर उसकी आँखों में एक लमहे के लिए शिकार की-सी झलक आई। फिर उसने सँभलकर कहा, “कहाँ से आए हो, बेटा?”

“पहाड़ की दूसरी तरफ़ से। हम बादशाह सलामत के हुज़ूर आना चाहते हैं,” मेरे मुँह से बेइख़्तियार निकला।

“बादशाह? कौन-सा बादशाह? क्या तुमने कभी देखा कोई बादशाह?” सारे ग़ोल ठहाके मारने लगे। फ़िज़ा उनके शोर-शराबे से लरज़ उठी।

“ख़ामोश!” राहनुमा की गरज से सुक़ूत दुबारा तारी हो गई।

मैंने अपना अकेलापन शिद्दत से महसूस किया। कौन मेरी मदद के लिए आएगा? वसीम और अनवर मेरे जाने से नावाक़िफ़ होंगे।

“वही बादशाह जिसने अपने फ़रज़ंद को दुश्मन के मुल्क में भेज दिया। जिसे मारा गया,” मैंने जवाब में कहा।

“फ़रज़ंद? मारा गया? यह क्या हमाक़त है? किसने तुमको ऐसी बेवुक़ूफियाँ सिखाईं?” उसने जोश में आकर अपनी ज़ाती तलवार को खींचकर हवा में लहराया।

मुझे ख़याल आया, “शाहज़ादे का ज़िक्र सुनते ही वह इतने तैश में क्यों आता है?”

“यहाँ सिर्फ़ एक हुकूमत चलती है। यहाँ मेरी ही सुनी जाती है और बस। किसी और की नहीं। समझ गए?” वह गरजा।

मैं ख़ामोश हो गया।

फिर रईस कुछ ठंडा होकर नरमी से बोलने लगा जैसे किसी बेवुक़ूफ़ बच्चे को समझा रहा हो, “देखो, बेटा। अक़्ल इस्तेमाल करके ज़रा सोचो। यह कैसे दुरुस्त हो सकता है? क्या तुमने पहले कभी कोई ऐसी बात देखी या सुनी है? क्या कोई बादशाह अपने फ़रज़ंद को दुश्मन के मुल्क में भेजेगा ताकि उसे क़त्ल किया जाए? और अगर ऐसा करता भी तो क्या उसका मिशन फ़ज़ूल न होता?”

“यह ... यह तो सच है,” मैंने हकलाते हुए कहा। “मतलब है कि कोई बादशाह नहीं है?”

“क्या तुमने उसे कभी देखा है? यह तो दादी-अम्माँ की फ़ज़ूल कहानियाँ हैं। बूढ़ी औरतों के कमज़ोर दिमाग़ों से उभर आई हैं ना।”

मैंने मदद के लिए इधर-उधर देखा। “हाँ, वैसे ही होगा,” मैंने सोचा। फिर अचानक एक ख़याल आया, “उसका महल ... मैंने तो उसे महल में देखा।”

“ख़ाब देखा तो क्या? ख़याली पुलाव है।”

“कोई शाहज़ादा नहीं?”

“यक़ीन जानो, अगर कोई बादशाह नहीं है तो शाहज़ादा कैसा? हाँ, ठहरो। काफ़ी साल पहले की बात है कि एक आदमी को लोगों से फाँसी दी गई। लेकिन वह तो कोई गंवार था जिसने नाजायज़ और बेतुकी-सी बातें सुनाईं।”

मेरा तनहाई का एहसास बढ़ गया। जैसे सारी दुनिया ने मुझे छोड़कर रद किया हो। क्या सब कुछ फ़ज़ूल था? क्या यह सफ़र बेमक़सद था?

"ठप!" कोई चीज़ मेरे पाँवों में गिर गई। नीचे देखा। मेरे बेहिस हाथ से तलवार फिसल गई थी।

"छोड़ दो इसे," सरकार ने करख़्त आवाज़ में कहा। "यह कैसे काम आएगी तुम्हें?"

"मंज़ूर! ऐ मंज़ूर!" क़रीब से किसी की आवाज़ बुलंद हुई। तब बीरबल दौड़े हुए नज़र आया। उसने हाँपते हुए दिलचस्पी से यह माजरा देखा, फिर बोला, "मिल गया आपको। मुझे डर लगा था कि आप भी तारिक़ की तरह गुम हो जाएँगे। क्या यह आपके नए यार-बेली हैं? बहुत ख़ूब, बहुत ख़ूब। कैसे अनोखे दोस्त हैं। और सरदार साहब भी साथ … अरे, आपकी तलवार ज़मीन पर पड़ी है। इसे सँभालकर रखना।" उसने उसे मुझे थमा दिया। "मेरे चचा रामन की एक कहानी याद आती है।"

"अच्छा? उसने क्या कहा?"

"वह जहाँ भी जाते हमेशा मोटा डंडा साथ ले जाया करते थे। लेकिन एक दिन वह लाठी को भूलकर गए तो शहद की मक्खियों के एक छत्ते से गुज़रे। यह देखकर उन्हें बड़ा लालच आया। 'बीरबल बेटे, वह कहा करते थे, शहद एक बड़ी अच्छी चीज़ है।' न डंडा था न कोई और चीज़ जिससे छत्ते को उतारे।"

"फिर क्या किया?"

"तब उन्होंने जुर्रत करके उसे अपने हाथों से उतारा। हश्र हुआ। उनके सूझे हुए चेहरे को देखकर चची को बड़ा ग़ुस्सा आया। 'बीरबल बेटा, वह कहा करते थे। 'धुएँ और डंडे से छत्ते को उतारना है। ख़ाली हाथों से नहीं'।"

सरदार बीरबल की सुनी अनसुनी करके बेसब्री से बोला, "छोड़ दो इसे तो सही।" अब उसकी आवाज़ में धमकी की झलक आ गई। "वरना ..."

लेकिन तलवार के दस्ते को छूते ही मेरे जिस्म में ताक़त की ज़ोरदार लहर आ गई। हैरान होकर मैंने फल पर नज़र डाली। यह क्या माजरा था? उस पर जलते हुरूफ़ में लिखा था, "राह और हक़ और ज़िंदगी मैं हूँ।"

"कमाल है। इसका क्या मतलब है?" मैं बोला।

सरकार का चेहरा ग़ुस्से से लाल-पीला हो गया, और वह हाकिमाना चिल्लाया, "फ़ौरन इसे फेंक दो!" सारे ग़ोल आहो-नाला करने लगे, लेकिन अब उसने उन्हें नहीं रोका बल्कि मुझे घूरता रहा।

"क्यों?" मैंने जुर्रत करके कहा। अजीब बात है कि अब मेरा डर जाता रहने लगा।

"हाँ, क्यों?" बीरबल ने हैरानी से पूछा।

सरकार धमकियाँ देते हुए मेरी तरफ़ लपका। दूसरी हस्तियाँ भी हमें घेरने लगीं। फ़िज़ा उनके शोर और बदबू से भर गई। गो मुझे घुटन-

सी महसूस हुई लेकिन मेरा हौसला बढ़ने लगा। अगरचे मैं तलवार को इस्तेमाल करने में माहिर नहीं था तो भी मैंने कोशिश करके उसे ख़ूब हवा में लहराया।

नागहाँ कहीं बादल ज़ोर से कड़के। इसके बाद ख़ामोशी ही ख़ामोशी। मैंने पलकें झपकीं। सारे ग़ोल सरदार समेत ग़ायब हो गए थे। आग बुझ गई। चारों तरफ़ दुबारा अंधेरा फैल गया था। मुझे चक्कर आए और मैं बेहोशी की मेहरबान गोद में गिर गया।

पुरअसरार मज़लूम

मैं न जाने कितनी देर सर्द रेत पर बेहिसो-हरकत पड़ा रहा। जब होश में आया तो अंधेरा ही अंधेरा था, चाँद और सितारे बादलों के पीछे छुप गए थे। उस वीरानो-सुनसान जगह में हलकी-सी हवा भी नहीं चल रही थी। यों लग रहा था कि पूरी दुनिया मुरदा पड़ी हो। सिर्फ़ बीरबल की साँस सुनाई दे रही थी जो क़रीब ही लेटे सोया हुआ था।

यकायक मैं गहरी नींद सो गया। तब मेरी सुन्न आँखों के सामने से एक डरावना ख़ाब गुज़रने लगा। क़रीब ही लकड़ी का खंबा ज़मीन में ठोंका गया था। वह मामूली लकड़ी का खंबा था, लेकिन जब मैंने उस पर ज़्यादा ध्यान दिया तो मेरे रोंगटे खड़े हो गए। कोई अध-मुई शक्ल उससे लटक रही थी। हाथों और पैरों में मोटे मोटे कील ठोंके गए थे। लातादाद चोटों से ख़ून की बूँदें टपकते टपकते ज़मीन पर गिर रही थीं। दिल नहीं करता था, ताहम मैं उस मुसीबतज़दा शक्ल को तकता रहा। “किसी मुजरिम को सज़ा मिली होगी,” मैंने हमदर्दी से सोचा।

अचानक उसका सर मेरी तरफ़ मुड़ा तो मैं चीख़ उठा। मैं उस चेहरे से ख़ूब वाक़िफ़ था। यह तो मेरा अपना ही चेहरा था। मैं बेइख़्तियार चिल्लाया, "यह कैसे हो सकता है? ऐसी ज़ालिम सज़ा कहाँ और मैं कहाँ? बेशक मुझसे ग़लतियाँ हुई हैं। लेकिन इतनी सख़्त सज़ा क्यों? क्यों?" मेरे अलफ़ाज़ बयाबान के अंधेरे में गूँजते गए। "क्यों ... क्यों ..."

तब मुझे शहज़ादे का महल याद आया। उनकी मुक़द्दस हालत, उनकी पाकीज़गी, हाँ उनकी पाक मुहब्बत भी। उनकी हुज़ूरी में मेरी गंदी, नापाक और क़ुसूरवार हालत कितनी शिद्दत से महसूस हुई थी। मैं ग़म से बोला, "हाँ, यह सच है। मैं नापाक हूँ। मैं नालायक़ हूँ।" इस ख़याल के बोझ तले दबकर मैं ज़ोर से कराहने लगा।

अचानक बादल गरजे, और एक सख़्त आवाज़ पुकारी, "जुर्म की सज़ा मौत है।"

मैं घबरा गया। "हाँ," मैंने सोचा। "मैं सचमुच मौत का हक़दार हूँ।" मैं मायूसी से रो पड़ा। अब क्या सहारा था?

सिसकियाँ भरते भरते अचानक मेरी नज़र ज़मीन पर पड़ी। वहाँ कोई चीज़ चमक रही थी। बहते आँसुओं को पोंछ पोंछकर मैं देखने के लिए झुक गया। मेरी तलवार चमक-दमक रही थी। "राह और हक़ और ज़िंदगी मैं हूँ," मैंने पढ़ा। हुरूफ़ आग की तरह दहक रहे थे। उन्हें पढ़कर मेरा हौसला थोड़ा-सा बढ़ गया। मैंने उसे पकड़ लिया और जुर्रत करके

अपनी आँखें उठाईं। तब मेरे रोंगटे नए सिरे से खड़े हो गए। वही शक्ल लटकी हुई थी लेकिन मेरा नहीं, किसी और का चेहरा नमूदार हुआ। उसमें जान-कनी और दुख के सख़्त निशान गढ़े हुए थे। लेकिन दर्द भरी आँखें प्यार के साथ मेरी तरफ़ देख रही थीं।

"कहाँ देखा उसे," मैंने सोचा। फिर भौचक्का हो गया। उसी शाहज़ादे का चेहरा था जिसके महल में मैं नाजायज़ तौर से घुस आया था।

"आप?" मैंने आँखें मलकर दुबारा ग़ौर से देखा। वह ख़ामोश रहे, लेकिन उनके तरस और रहम ने मेरे दिल को छेद दिया। मैं उनकी मुहब्बत भरी निगाह कैसे बयान करूँ?

"लेकिन क्यों?" मैं चीख़ा। "क्यों?"

उनका मुँह खुल गया लेकिन कोई आवाज़ न निकली ... होंटों पर ध्यान दिया तो दो अलफ़ाज़ ज़ेरे-लब दोहरा रहे थे, "तेरे लिए। तेरे लिए। तेरे लिए।"

मेरे दिल में शक और बेयक़ीनी ज़ोर से प्यार के जज़बात के साथ हाथा-पाई करने लगी। मैं काफ़ी देर तक इस कशमकश में मुब्तला रहा। साथ ही मेरे अंदर से एक धीमी-सी आवाज़ उभरने लगी। एक आवाज़ जो कह रही थी, "मेरे पास आ! मैं तुझे आराम दूँगा। मेरा जुआ मुलायम और मेरा बोझ हलका है।"

फिर खंबे के पीछे सूरज तुलू होने लगा। जब उसकी किरनों ने ख़ून के टपकते क़तरों को छू दिया तो वह दहकने लगे। दहकते दहकते पूरा

जिस्म सितारा बन गया। खंबे से आज़ाद होकर वह हौले हौले उड़ते उड़ते ग़ायब हो गया। बादल फिर ज़ोर से कड़के।

मैं जाग उठा। आँखें मलीं। सूरज निकला था। क़रीब ही राख का ढेर पड़ा था। कोई चीज़ मेरी कमर को चुभ रही थी। टटोलकर पता किया तो तलवार का दस्ता था। "राह और हक़ और ज़िंदगी मैं हूँ," मैंने धीमी आवाज़ में पढ़ा। क़रीब से कोई ज़ोरदार ख़र्राटे मार रहा था। बीरबल ज़मीन पर लेटे घोड़े बेचकर सो रहा था।

"ओए" अनवर और वसीम रेत के टीले के पीछे से नुमायाँ हुए। वह दौड़े हुए हमारे पास आए।

शहरे-ऐयाश

"अनवर," मैंने कहा। "'मैं' का क्या मतलब है?"

हम रेगिस्तान के किनारे तक पहुँचकर हरे-भरे पौदों और पेड़ों के झुंडों में से गुज़रने लगे थे। रेत के बाद यह कितने ख़ूबसूरत और ख़ुशगवार लग रहे थे। पंछियों की नग़मा-संजी से हमारे दिल तरो-ताज़ा हुए।

"मैं?" अनवर का चेहरा सवालिया निशान बन गया।

"तलवार पर लिखा है कि 'राह और हक़ और ज़िंदगी मैं हूँ।' 'मैं' कौन है?"

अनवर ने बड़े एहतराम से कहा,"'मैं' से मुराद हमारे शहज़ादा है। इनसान सिर्फ़ उन्हीं के वसीले से बादशाहत में दाख़िल हो जाता है। हमने कल आपको बताया था ना कि उन्हें दुश्मन के मुल्क में क़त्ल किया गया।"

मैंने सर हिलाया।

वसीम ने विज़ाहत की, "बादशाह सलामत के रास्ते हमारी समझ से बाहर हैं। उनकी लाश को ग़ार में रखा गया, और दुश्मन ने उस पर

पहरेदारों की ड्यूटी लगाई। फिर भी वह मोजिज़ाना तौर पर दुबारा ज़िंदा हुए। उस वक़्त ज़ाहिर हुआ कि हक़ीक़त में बादशाह का मक़सद शहज़ादे की मौत से ही पूरा हुआ।" वह चंद लमहों के लिए चुप रहा। "उन्होंने न सिर्फ़ बादशाहत का रास्ता दिखाया। वह जानते थे कि दुश्मन के हवाले लोग इतने ख़राब और बिगड़े हुए हैं कि वह अपनी ताक़त से बादशाहत में नहीं पहुँच सकते। अकेला वही बादशाहत में दाख़िल हो सकता है जो सरासर पाक और गुनाह से आज़ाद हो। सबसे मासूम बच्चा भी इतना पाक नहीं कि वह बादशाहत में दाख़िल होने के लायक़ हो। सबके सब सज़ा के लायक़ हैं।"

अनवर ने बात जारी रखी, "बात यह है कि बादशाह न सिर्फ़ पाक हैं बल्कि वह बड़े रहमदिल भी हैं। वह लोगों को दुश्मन के क़ब्ज़े में छोड़ने के लिए तैयार न थे। लेकिन शाही क़ानून का तक़ाज़ा यह था कि हर शहरी बादशाह जैसा पाक और बेगुनाह हो, और इसमें लचक मुमकिन ही न थी। वह क्या कर सकते थे? यह बड़ा उलझा हुआ मसला था। आख़िर में शहज़ादे ने एक निहायत मुश्किल क़दम उठाया ताकि लोगों को दुश्मन के हवाले से छुड़ाएँ। उन्होंने अपने आपको क़ुरबान किया। वह न सिर्फ़ इसलिए दुश्मन के मुल्क में गए कि लोगों को बादशाहत का रास्ता दिखाएँ। बल्कि जाने का एक और मक़सद था, एक हौलनाक मक़सद। वह जानते थे कि उन्हें अपनी जान को क़ुरबान करना है। कि वह इनसान की सज़ा अपने ऊपर उठाएँगे ताकि बादशाहत का रास्ता

उनके लिए खुल जाए। सिर्फ़ इसी तरीक़े से बादशाहत का क़ानून पूरा हो सकता था।”

हम ख़ामोशी से आगे बढ़े। हर एक अपने ख़यालात में महव हो गया। चलते चलते सामने एक शहर नज़र आया।

“इस शहर का क्या नाम है?” बीरबल ने पूछा।

“ऐयाश,” बौने ने जवाब दिया। “लाज़िम है कि हम उसमें से गुज़रें। लेकिन ख़बरदार। यहाँ के बाशिंदे बड़े बदमाश हैं।”

हम क़रीब आए। फाटक के अंदर एक इस्तिक़बालिया कमेटी खड़ी थी। “ख़ुशआमदीद, ख़ुशआमदीद,” वह पुकारे और हमारे गलों में हार डाले।

“इनकी मत सुनना,” अनवर ने ज़ेरे-लब कहा।

“क्यों नहीं?” मैंने ला-परवाई से पूछा। हक़ीक़त में शहर की गहमा-गहमी देखकर मैं बड़ा ख़ुश हो गया था।

बीरबल ने चहकते हुए अपना हार उतारकर एक गुज़रनेवाले गधे के गले में डाल दिया। “यह ज़्यादा इसके लायक़ है,” वह बोला। “और सोच लो, यह इसे बाद में खाएगा भी। डबल फ़ायदा मिलेगा।”

एक बड़ा-सा मेला उरूज पर पहुँच गया था। गलियों में लोग दीवाना होकर नाच रहे थे। ढोलकों की आवाज़ें शहर के कोने कोने से गूँज रही थीं। हर चौक में बाज़ीगर और फ़ाल खोलनेवाले अपनी महारत दिखाते हुए हुजूम को अपनी तरफ़ खींच रहे थे। फेरीवाले बाज़ार की रौनक़ में

इज़ाफ़ा कर रहे थे जबकि भिकारी और जेबकतरे तमाशाइयों की जेबें हलकी करने में लगे हुए थे।

हम एक दुकान से गुज़र रहे थे कि एक लड़की ने मुझे आँख मारी। मैं ठिठककर रुक गया। बीरबल कहने लगा, "चचा रामन की बात याद आती है। वह कहा करते थे, 'बीरबल बेटा, अजनबी औरत से बात तक मत करना'।"

"यह क्यों?" मैंने हैरानी से पूछा।

"एक बार वह कश्ती में एक दरिया को पार कर रहे थे तो एक अजनबी औरत से बात करने लगे। वह औरत बड़ी हश्शाश-बश्शाश थी। उसकी चिकनी-चुपड़ी बातों से चचा बड़े ख़ुश हुए। उन्होंने कुछ अपनी ज़िंदगी के बारे में बताया, वह औरत भी कोई राम कहानी सुनाने लगी। जब दूसरे किनारे पर सफ़र जारी रखा तो क्या देखता है। बटवा ग़ायब, वह औरत भी ग़ायब। 'बीरबल बेटा,' वह कहा करते थे, 'मैं अपनी घरवाली को क्या बताऊँ? कि एक औरत ने मेरा बटवा छीन लिया? घर पहुँचकर बड़ी दिक़्क़त हुई'।"

हम आगे बढ़े। रास्तों के किनारों पर लगी रेहड़ियाँ और होटल अपने लज़ीज़ खानों की ख़ुशबुओं से भीड़ों को लुभा रहे थे। हम मुँह फाड़ फाड़कर इधर-उधर घूमे-फिरे। मैंने कभी इतनी आबो-ताब नहीं देखी थी।

एक चौक में एक जादूगर अपना फ़न दिखा रहा था। जब क़रीब आए तो वह बुलंद आवाज़ में कह रहा था, “हज़रात, ताश का यह पत्ता देखो। मैं इसे अपनी जेब में डाल देता हूँ। अब गुज़ारिश है कि आप मेरे पास आओ।” उसने हाथ से इशारा करके बीरबल को बुलाया। बीरबल झिजकते हुए सामने आया। जादूगर ने उसकी वास्कट से ताश का वही पत्ता निकाला।

बीरबल को झटका लगा, फिर बोला, “मेरे पास और भी है।” उसने मुसकराते हुए दूसरी जेब से लंबा रंगदार कपड़ा खींच खींचकर निकाल दिया और जादूगर के सुपुर्द किया। फिर एक ज़िंदा ख़रगोश और एक बटवा। “क्या यह भी आपका सामान है?”

अब जादूगर को सख़्त सदमा हुआ। वह चीख़ा, “चोर, चोर! हज़रात, क्या आपने देखा इसको? इसने मेरा बटवा तक चोरी किया है। उसे पकड़ लो!”

भीड़ में शोर मच गया। एक यह कहने लगा, दूसरा वह। लोग एक दूसरे को धक्के देने लगे बल्कि कुछ ग़लती से एक दूसरे से लड़ने भी लगे। होते होते बीरबल की लंबी-पतली शक्ल और चमकती खोपड़ी हंगामे में ओझल हो गई। मैं भी धक्के खा खाकर दूसरे साथियों से अलग हो गया। जब हालात कुछ सँभल गए तो वह कब के हुजूम में ग़ायब हो चुके थे। मैंने इधर-उधर नज़र दौड़ाई मगर बेसूद। मायूसी के

आलम में मैं हुजूम के धारे के साथ साथ बहने लगा। कितने शानदार मकान थे। उनकी खिड़कियाँ डूबते सूरज की किरनों में दहक रही थीं।

“आओ भई, आओ।”

एक आलीशान महल के खुले दरवाज़े में एक मुलाज़िम खड़े ज़ोर से अंदर आने का इशारा कर रहा था। मैंने क़रीब आकर अंदर झाँका। ख़ुशो-ख़ुर्रम लोग उम्दा लिबास पहने मुँह में पानी भरनेवाले खाने खा रहे थे। मैं दाख़िल होकर ज़ियाफ़त में शामिल हुआ। कितनी रौनक़ थी! मौसीक़ार एक कोने में मीठे मीठे राग अलाप रहे थे। मेरे सामने लज़ीज़ मै जाम में चमक रही थी। खाना खाते और मै पीते मेरी पूरी एहतियात जाती रही, और मैं भी नशे में धुत दूसरों की तरह हँसने-नाचने लगा। फिर याद नहीं कि क्या हुआ। हाँ, इतना मुझे याद है कि मस्ती में आकर इर्दगिर्द के लोगों की शक्लें बदलने लगीं। जिस औरत के साथ मैं नाच रहा था उसकी नाज़ुक नाक चोंच में बदल गई, और जानवर की वहशी आँखें मुझे तकने लगीं। साथवाला आदमी एक लमहा ठहाके मार रहा था और दूसरे लमहे लकड़बग्घे की अजीब हँसी निकाल रहा था। साथ साथ उसकी लंबी नाक बढ़ती बढ़ती लकड़बग्घे के थूथन में बदल गया। मौसीक़ारों की तरफ़ से भी अजीब अजीब आवाज़ें निकलने लगीं। मीठे रागों की जगह फ़िज़ा ग़ुर्राहट, दहाड़ों और चीख़ों से भर गई। “क्या

अजब।” मैंने काहिली से सोचा, “यह काले ज़िरह-बकतरवाले कहाँ से आ गए हैं?” फिर मेरे हवास उड़ गए।

जब मैं होश में आया तो ठंडे पत्थर के फ़र्श पर पड़ा था। हज़ार जिन मेरे सर को अपनी सुइयों से चुभो रहे थे। चारों तरफ़ सुकूत तारी थी। सिर्फ़ “टप-टप” की आवाज़ सुनाई दे रही थी। हौले हौले मैं उठ बैठा। एक मोमबत्ती दीवार पर लगा हुआ था जिसकी मधम रौशनी में ज़ाहिर हुआ कि मैं किसी कोठरी में पड़ा हूँ। दीवारें गीली थीं, और छत से पानी टपक रहा था। मैं लड़खड़ाकर दरवाज़े के पास गया। बेफ़ायदा। ताला लगा हुआ था। मायूस होकर मैं फिर सर्द ज़मीन पर बैठ गया। तब मैंने देखा कि मैं अकेला नहीं हूँ।

“बीरबल! आपको भी पकड़ा गया!” मैं बोला।

बीरबल अपने गंजे सर को पकड़े कराहने लगा। “हाय, क्या हुआ? पहले इतनी रौनक़ और अब यह तारीक कोठरी।”

“अब हम सचमुच फँस गए हैं,” मैं बोला। “क्या हमारे साथियों ने हमें ख़बरदार नहीं किया था? अब तलवार भी गुम हो गई है।” उदासी का आलम मुझ पर तारी हो गया। न जाने कितने घंटे फ़र्श पर बैठा रहा कि चरचराहट की आवाज़ सुनाई दी। मैंने सर उठाया। दरवाज़ा चरचराते हुए खुल रहा था। बाहर झाँका तो एक चूही दहलीज़ पर खड़े मुझे तक रही है।

"बेचारी," मैंने कहा। "हमें क्या बताना चाह रही है?"

चूही पिछले पाँवों पर बैठकर संजीदगी से अपनी मूँछें साफ़ करने लगी। फिर कुछ आगे जाकर दुबारा रुक गई और हमारी तरफ़ देखने लगी।

"क्या हम तेरे पीछे चलें?" मैंने पूछा। "क्यों नहीं? पहले भी काफ़ी अजीबो-ग़रीब बातें देखने में आई हैं।"

टिमटिमाती मोमबत्ती उठाकर हम उसके पीछे चलने लगे। यों दबे पाँव चलते चलते हम एक छोटे कमरे में पहुँचे। उसमें एक गार्ड एक मेज़ के पीछे बैठे ख़र्राटे मार रहा था। ख़र्राटों के तूफ़ान से उसकी लंबी लंबी मूँछें ज़ोर से हिल रही थीं। लेकिन मेज़ पर एक चीज़ चमक रही थी जिसे देखकर मेरा दिल उछल पड़ा : मेरी तलवार! फल पर वही अलफ़ाज़ दहक रहे थे, "राह और हक़ और ज़िंदगी मैं हूँ।" मैंने आगे लपककर उसे ख़ामोशी से पकड़ लिया। उसे छूते ही मेरा हौसला बढ़ने लगा।

मैं आगे निकलनेवाला था कि बीरबल ने इशारे से मुझे रोका। वह झुक गया, और मैंने देखा कि वह गार्ड के तसमे एक दूसरे के साथ बाँध रहा है। लेकिन उस अजीब बंदे ने एक और काम किया। मेरी तलवार लेकर गार्ड की मूँछें काट डालीं। "अब तूफ़ान के ज़ोर से कुछ नहीं होगा," उसने सरगोशी की।

हम आगे चलकर एक गलियारे में से गुज़रने लगे। चलते चलते गलियारा ख़त्म हुआ। अचानक चूही ओझल हो गई।

"यह क्या जादू है?" मैंने ज़ेरे-लब कहा। क़रीब आकर दीवार को जाँचने लगा। उँगलियों से टटोल टटोलकर एक छोटी-सी दराड़ मालूम हुई। "हम इसमें से कैसे निकलेंगे?" मैंने मोमबत्ती को क़रीब लाकर ध्यान से देखा।

"ओए!" अचानक हमारे पीछे एक करख़्त आवाज़ गरजी। सर मुड़ा तो गार्ड का ग़ुस्से से लाल-पीला मुँह दिखाई दिया। वह हाँपते हुए हमारी तरफ़ लपकने को था कि बँधे हुए जूतों के बाइस धड़ाम से गिर गया।

गार्ड को देखकर बीरबल दीवाना हो गया। उसने तलवार को मुझसे छीनकर दराड़ में ठूँस दिया, फिर वहशत से उसे चौड़ी बनाने की कोशिश करने लगा। यकायक दराड़ बढ़ने लगी और बढ़ती बढ़ती इतनी चौड़ी हो गई कि हम आसानी से गुज़र सके। गार्ड दहाड़ें मार मारकर हम पर झपट पड़ा, लेकिन ऐन वक़्त पर हम दराड़ में घुसकर बच गए। दराड़ चुपके से हमारे पीछे बंद हो गई। गार्ड की गरजें धीमी हो गईं। हम अपनी पलकें झपकने लगे। हमारे सामने बड़ी सुरंग थी जिसकी दीवारें किसी क़ुदरती चीज़ से चमक रही थीं। कुछ आगे लोगों का एक गुरोह सादे-से कपड़े पहने बैठा था। मुझे देखकर वह खड़े हो गए।

"ख़ुशआमदीद" एक बुज़ुर्ग ने आगे बढ़कर हाथ मिलाया।

"आप कौन हैं?" हैरानी के बाइस मैं अदब से बात करना भी भूल गया।

“हम शहर के असल बाशिंदे हैं,” वह बोला। “शुरू में यह बादशाह का गढ़ था। लेकिन हमारी ला-परवाई के बाइस दुश्मन के एजंट इसमें घुस आए, और धीरे धीरे लोगों का रुख़ बादशाह के ख़िलाफ़ हुआ। अब यह चंद साल हुए दुश्मन के क़ब्ज़े में आ गया। हम जो थोड़े बहुत रह गए हैं इस कोशिश में लगे रहते हैं कि जितने हो सके लोगों को बचाएँ।” चंद लमहों के लिए ख़ामोश रहा फिर कहने लगा। “अब जल्दी से चले जाएँ। दुश्मन के जासूस हर तरफ़ मौजूद हैं।” ख़ुशी से फूले न समाकर हम बुज़ुर्ग के पीछे चल दिए।

शायद हम घंटा-भर यों मधम-सी क़ुदरती रौशनी में फिरे, फिर सुरंग का मुँह नज़र आया। जब निकले तो जंगल का मंज़र नमूदार हुआ। तड़के का वक़्त था, और दो शक्लें नज़र आईं जिनसे हम ख़ूब वाक़िफ़ थे। “अनवर! वसीम!” मैं पुकारा।

कोहे-दानिश

हम आगे निकले। अब पहाड़ी इलाक़े में से गुज़र रहे थे। चलते चलते पसीना आने लगा। अनवर “काँव-काँव” करते हुए हमारे इर्दगिर्द परवाज़ कर रहा था। दोपहर के वक़्त हम एक पहाड़ के दामन में रुक गए।

“यह कैसा पहाड़ है?” मैंने पूछा।

“लोग इसको कोहे-दानिश कहते हैं,” वसीम ने कहा।

“क्या यह पहाड़ ख़तरनाक है?” अब मैं कुछ ज़्यादा मुहतात होने लगा था।

वसीम बौना बोला, “एक लिहाज़ से यह ज़रूर ख़तरनाक है। सिर्फ़ वह जिसे चढ़ने का अच्छा-ख़ासा तजरिबा है कामयाब रहता है। चढ़ने का माहिर तो अपनी हदों को जानता है। वह न सिर्फ़ हर ख़तरे से वाक़िफ़ है बल्कि अपने जिस्म की ख़ूबियों और ख़ामियों से भी। एक ही ग़लती काफ़ी है कि फिसलकर किसी खड में जा गिरे।”

मुझे पहले से चढ़ने का बड़ा शौक़ था। मैं बोला, “मैं कोशिश तो करूँगा।”

“मैं भी साथ जाऊँगा,” बीरबल चहचहाया।

हमारे साथी हिचकिचाते रहे, लेकिन मेरी ज़िद को देखकर उन्होंने मुझे चढ़ने दिया। वसीम बोला, “लेकिन आँख खुली रखना। पहाड़ की चोटी पर आक्सीजन बहुत कम है। अकसर लोग अगर देर से चोटी पर ठहरें बीमार बल्कि बेहोश हो जाते हैं। बहुतों को यह बीमारी महसूस भी नहीं होती, और जब उतरने की कोशिश करते तो उनका जिस्म जवाब दे जाता है, और वह वहीं के वहीं मर जाते हैं।”

हम उन्हें वहाँ आराम करते छोड़कर चढ़ने लगे। ढलान चढ़ना सचमुच दुश्वार था। लेकिन साथ ही मुझे बड़ा मज़ा आया। चढ़ते चढ़ते दूर तक इर्दगिर्द के देहात नमूदार हुए। मेरी साँस फूलने लगी लेकिन अब मज़ीद मालूम करने, मज़ीद दरियाफ़्त करने का लालच मेरे दिल पर ग़ालिब आया था। “बेशक यहाँ से बादशाह का महल नज़र आएगा,” मैंने सोचा। कुछ और चढ़ा तो ऊँचाई की वजह से चक्कर आने लगे।

“अब मैं आगे नहीं जा सकता,” बीरबल ने हाँपते हुए कहा। वह बड़े पत्थर पर बैठ गया जबकि मैं क़दम बक़दम लड़खड़ाते हुए आख़िर में चोटी पर पहुँच गया। कितनी ख़ुशी का एहसास हुआ। रूए-ज़मीन मेरे नीचे बिछी हुई थी। पीछे रेगिस्तान की रेत धूप में झिलमिला रही थी। सामने जंगली पहाड़ियाँ किसी देव से तरतीब से तह की गई थीं। लेकिन अफ़सोस—जहाँ भी देखा बादशाह का कोई महल नज़र न आया।

चोटी पर मुझे धूप की तेज़ी महसूस हुई। मेरे ऊपर एक नन्ही-सी सफ़ेद बदली नीले नीले आसमान को सुस्ती से उबूर कर रही थे। यकायक किसी की जोशीली आवाज़ सुनाई दी। मैंने नीचे झाँका। एक हट्टा-कट्टा आदमी गुनगुनाते हुए मेरे पास चढ़ता आ रहा था। मुझे देखकर उसने अदब से सलाम किया। “कहाँ से आए हो?”

मैंने अपने पिछले तलख़ तजरिबात याद करके गोल-मोल-सा जवाब दिया।

“यह क्या है?” उसने दिलचस्पी से तलवार की तरफ़ इशारा किया।

“मेरी तलवार, और क्या?”

“अरे, बेशक तलवार है। लेकिन किस मक़सद के लिए?”

“ज़ाहिर है कि यह मेरी हिफ़ाज़त के लिए है।”

“अच्छा ... तो इस पर क्या लिखा है?”

“राह और हक़ और ज़िंदगी मैं हूँ।”

“इसका क्या मतलब?”

लगता था कि वह बुरी नीयत से नहीं पूछ रहा हो, इसलिए मैंने कुछ झिजकते हुए कहा, “मैं समझता हूँ कि यह शहज़ादे के अपने बारे में अलफ़ाज़ हैं।”

“कमाल है!” वह ख़ुशी से चहचहाया। “बात सुनें। मेरे पास एक चीज़ है जो आपको बहुत काम आएगी।” उसने अपनी थैली में टटोल

टटोलकर एक ख़ूबसूरत चादर निकाली। कुछ हुरूफ़ बड़ी महारत से कपड़े में काढ़े गए थे।

"हमारी अज़ीम तहज़ीब के नाम," मैंने पढ़ा।

"आप इसे ले लो। मेरी तरफ़ से मुफ़्त। इस क़दर ख़ूबसूरत तलवार को मियान के अलावा किसी अच्छे कपड़े में भी लपेटना चाहिए।"

मैंने सोचा, "उसकी यह बात सच है। ऐसी ख़ूबसूरत तलवार को इस जैसी अच्छी चादर के लायक़ है।"

"बहुत शुक्रिया," मैंने कहा और तलवार को मियान समेत एहतियात से चादर में लपेटकर कमर से बाँध लिया।

"अब आप इसको बेहतरीन तरीक़े से सँभाल सकेंगे। और यह भी साथ लेकर चलें।" उसने मुझे एक काली-सी लाठी दी जिसका दस्ता उक़ाब के चंगुल की शक्ल में तराशा हुआ था। उस पर लिखा था, "हमारी अज़ीम क़ौम के नाम।" फिर वह अलविदा करके पहाड़ की दूसरी तरफ़ उतर गया।

मैं ख़ुश होकर चोटी से उतरा। "दुनिया की बुराई के बावुजूद कुछ नेक लोग भी बाक़ी रह गए हैं," मैंने सोचा। जब पहाड़ के दामन में पहुँचा तो पुकारा, "ओए, अनवर! वसीम! बीरबल!" पहाड़ की तरफ़ से मेरी आवाज़ की बाज़गश्त गूँजी, "अनवर ... अनवर ... वसीम ... वसीम ... बीरबल ... बीरबल ..." लेकिन कोई जवाब न मिला।

ग़ार

मैंने चारों तरफ़ देखा। बौना और कौअ कहाँ थे? बीरबल का भी नामो-निशान न था।

कुछ फ़ासले पर एक छोटी शक्ल नज़र आई। “वसीम!” मैंने ख़ुशी से पुकारा और उसके पास लपका। लेकिन वसीम नहीं था। कोई और बौना था, जिसके लंबे काले बाल और काली दाढ़ी कमर तक पहुँचती थी। वह पेड़ के मुढ पर बैठे छुरी से लकड़ी का टुकड़ा तराश रहा था। जब ग़ौर किया तो देखा कि वह एक डरावने अज़दहे की शक्ल तराश रहा है।

मेरे सलाम पर उसने ताज्जुब से पूछा, “आप यहाँ क्यों अकेले फिर रहे हैं? क्या आपको मालूम नहीं कि यह जगह बहुत ख़तरनाक है? यहाँ क़रीब ही अज़दहे का अड्डा है। वह रोज़ाना इसी पहाड़ के दामन में शिकार करने घूमता-फिरता है। यहाँ कई-एक चढ़नेवालों का अंजाम हुआ है। मैं भी सिर्फ़ इसी लिए यहाँ बैठा हूँ कि लोगों को ख़बरदार करूँ। लेकिन लगता है कि आप मेरी ग़ैरमौजूदगी में आगे निकले थे।”

मैं सख़्त घबरा गया। मुझे चक्कर आने लगे, और दिल करता था कि सीधे भाग जाऊँ। तब मेरे साथी याद आए। उन्हें मैं कैसे छोड़कर आगे बढ़ सकता था? मैंने पूछा, "अज़दहे का अड्डा कहाँ है?"

बौने ने लकड़ी के टुकड़े से इशारा किया, और मैं उस तरफ़ बढ़ा। कुछ फ़ासले पर बीरबल की लंबी-पतली शक्ल नज़र आई। वह ज़मीन की तरफ़ झुका हुआ किसी चीज़ पर ग़ौर कर रहा था। मुझे देखकर उसने बेक़रारी से ज़मीन की तरफ़ इशारा किया, "यह देखो!"

किसी भारी जानवर के लंबे-चौड़े नक़्शे-क़दम दिखाई दिए।

हम डरे हुए उनका खोज लगाने लगे। उनके पीछे चलते चलते हम सीधे पहाड़ी जंगल की एक वीरान जगह पर पहुँच गए जहाँ एक ग़ार का मुँह नमूदार हुआ। मेरा दिल ज़ोर से धड़कने लगा। हम दबे पाँव मुँह पर पहुँचे। लेकिन जब अंदर झाँक मारी तो धचका लगा। आँखें मलीं। अंदर कोई वहशी दरिंदा नज़र न आया बल्कि एक ख़ुशनुमा गोल कमरा। पिछली तरफ़ आतिशदान में आग ख़ूब भड़क रही। उस पर केतली बुलबुले उठाते हुए खिलखिला रही। सामने कमरे के बीच में एक बुज़ुर्ग आलिम मेज़ पर बैठा कोई मोटी मोटी किताब पढ़ने में ग़रक़ था। बार बार उसकी ऐनक लंबी नाक पर से फिसलती रहती तो वह एक उँगली से उसे वापस अपनी जगह पर लगाता। मग़रिबी लिबास पहने और छोटी मूँछें रखे वह बड़ा दानिशमंद लगता था। गोद में एक काली बिल्ली बड़े इतमीनान के साथ ख़रख़रा रही जबकि कुरसी के पीछे दीवार से लगी

लकड़ी का बड़ा घड़ियाल खट-खट खट-खट कर रहा था। यह पुरसुकून माहौल देखकर हम दोनों कंफ़्यूज़ हो गए। हमारे दोस्त कहाँ हैं? दरिंदा कहाँ ग़ायब हो गया है?

"अस्सलामु अलैकुम, बेटो। अंदर आओ।"

"व-अलैकुम," मैं अदब के साथ बोला और दाख़िल हुआ। बीरबल भी चहचहाते हुए अंदर आकर हर तरफ़ देखने लगा।

"बैठो।" वह हमारे लिए दो कुरसियाँ अपने क़रीब खिसका लाया। "किस हादिसे ने तुमको इस वीरान जगह पर पहुँचाया?" उसने हमें ग़ौर से देखने के लिए अपनी ऐनक उतारी।

"हम अपने दो साथी ढूँड रहे हैं," मैंने जवाब दिया। "एक बौना और एक कौअ। क्या आपने उन्हें कहीं देखा है?"

"बौना और कौअ?" वह हँस पड़ा। "कितने अजीब साथी। नहीं, इधर से नहीं गुज़रे।" फिर कुछ ख़ामोश रहा। सिर्फ़ आग की भड़कती और बिल्ली की ख़रख़राती आवाज़ सुनाई दी।

बीरबल ने बिल्ली पर हाथ फेर दिया, लेकिन उसने सिसकारकर अपने दाँत निकोसे। बीरबल ने फुरती से अपना हाथ छुड़ा लिया। फिर चहका, "मेरे चचा रामन भी आलिम थे, बिलकुल आपकी तरह।"

"अच्छा?" बुज़ुर्ग ख़ुश होकर मुसकराया।

"हाँ, वह बहुत उम्दा क़िस्म के आलिम थे। अरे, जो कुछ भी पूछो वह सब कुछ जानते थे। अफ़सोस, दिन-रात किताबें पढ़ पढ़कर उनके

होश उड़ गए। एक दिन वह अपने कमरे से हँसते-हँसाते निकले और एलान किया कि अब मुझे तमाम मसलों का हल मालूम है।"

"सच? क्या हल था?"

"हल यह था कि तालाब के मेंढकों की पूरी पूरी गिनती हो जाए तो दुनिया के तमाम मसले-मसायल हल हो जाएँगे।" बीरबल ने ठंडी साँस भरी। "बेचारी चची। वह बड़ी परेशान हुई।"

प्रोफ़ेसर ने झुँझलाकर मज़मून को बदल दिया। "बेटा। यह मुझे ज़रा दिखाओ," उसने मेरी चादर में लिपटी हुई तलवार की तरफ़ इशारा किया। मैंने झिजकते हुए अपना असला उसे थमा दिया।

"कितनी अच्छी तलवार।" उसने चादर उतारकर और ऐनक लगाकर उसे ग़ौर से परखा।

"हाँ, हाँ," बीरबल पुकारा, "बहुत काम आई है।"

उसकी सुनी अनसुनी करके बुज़ुर्ग ने क़रार दिया, "पुराने ज़माने की अच्छी गवाही देती है। ख़ैर आजकल कौन इसे इस्तेमाल करता है!"

"क्या मतलब?" मैंने पूछा। "इसका इस्तेमाल आजकल क्यों नहीं होता?"

"जनाब, यह तो बहुत ही ज़्यादा इस्तेमाल हुआ है," बीरबल ने एतराज़ किया।

"बेशक वह आजकल भी इस्तेमाल होता है," उसने मेरी परेशानी भाँपकर मुझे तसल्ली दी। "लोग अकसर इसे पालिश करके कमरे को

सजाने के लिए दीवार पर लगाते हैं। तुमने ख़ुद इसे ख़ूबसूरत चादर में लपेटकर रखा है। ज़ाहिर ही है कि तुम इसे ज़्यादातर सजावट के लिए इस्तेमाल करते हो। नहीं, बेटा।" उसने नफ़ी में सर हिलाया। "यक़ीन करो कि आज के जदीद दौर में बंदूक़, कलाशनिकोफ़, दस्ती बम जैसी चीज़ें काम आती हैं। तलवार, ज़िरह-बकतर और ढाल का दौर गुज़र चुका है। अब यह सिर्फ़ हमारी सक़ाफ़त का दिल बहलाने के लिए रखी जाती हैं।

"लेकिन फिर शहज़ादे के इन अलफ़ाज़ का क्या मतलब है?" मैंने फल की तरफ़ इशारा करके पूछा।

"राह और हक़ और ज़िंदगी मैं हूँ," उसने पुर-वक़ार अंदाज़ में पढ़ा, फिर झिजका। "लाज़िम है कि एक वक़्त था जब यह फ़िकरा दुरुस्त था। लेकिन वह ज़माना बदल गया है।" वह नरमी से मुसकराया। "देखो ना, मैंने बेशुमार किताबों का मुतालआ किया है। बेशुमार राहनुमाओं ने दावा किया है कि मैं असली राह हूँ। क्या मालूम कि तुम्हारे शहज़ादे की बात सही हो या किसी और का दावा। इसकी हक़ीक़त किस तरह साबित हो सकती है?"

बीरबल प्रोफ़ेसर की बातों से बोर होकर कुरसी से उठा और कमरे की छोटी-मोटी चीज़ों को उठा उठाकर देखने लगा।

प्रोफ़ेसर अपनी ऐनक दुबारा उतारकर उसे अपने रूमाल से साफ़ करते हुए अपनी तेज़ और नीली नीली आँखों से मुझे तकता रहा। मैंने

कोई जवाब न दिया। आग कड़कड़ा रही थी। बिल्ली अँगड़ाइयाँ लेते हुए अपने सर से प्रोफ़ेसर के पेट को रगड़ने लगी। उसने जवाब में अपना हाथ उसकी पीठ पर फेर दिया।

"क्या तुमने इस नाम-निहाद शहज़ादे को कभी देखा है?" उसने ख़ामोशी तोड़कर पूछा। "फिर भी ... फिर भी ... फ़र्ज़ करो कि ऐसा आदमी सचमुच हो। तो वह कैसे दावा कर सकता है कि मैं वाहिद राह हूँ? मुमकिन है कि बहुत-सारी राहें हों या कि कोई भी न हो।"

"यह सच है," मैंने सर हिलाया। उसकी दलीलें माक़ूल-सी लगती थीं।

बीरबल ने बेध्यानी से तलवार को उठाकर हवा में लहराया। उसकी सनसनाती आवाज़ कमरे में गूँज उठी। "ठाह!" मेज़ पर रखा गुलदान धड़ाम से गिर गया।

"अरे, ध्यान से," बुज़ुर्ग चीख़ा, और मुझे लगा कि उसकी आवाज़ में डर की झलक आ गई।

"शूँ-शूँ। कितनी अच्छी तरह चमकती-दमकती है," बीरबल चहचहाया। "हाँ, इसने बहुत काम किया है।"

मैं ख़ामोश पड़ गया। यों सोचते सोचते इत्तफ़ाक़न मेरी नज़र घड़ियाल पर पड़ी। पुराने तर्ज़ का घड़ियाल था। उसकी लकड़ी में अजीबो-ग़रीब शक्लें तराशी गई थीं। ख़ासकर एक चेहरे ने मेरी तवज्जुह अपनी तरफ़ खींची। मैं कहीं उससे वाक़िफ़ हो चुका था लेकिन याद नहीं आ रहा था

कि कहाँ।घड़ियाल के मुँह के दरमियान एक छोटा-सा दरवाज़ा था। मैंने इस क़िस्म के घड़ियाल मिल्ट्री में होते हुए देखे थे। उमूमन एक नन्हा-सा पपीहा हर घंटे का एलान करने के लिए उस दरवाज़े से निकलता है। बीरबल भी अपनी उँगलियाँ उस पर फेर फेरकर उसे ग़ौर से देखने लगा था।

प्रोफ़ेसर बोल उठा, “क्या तुमने कभी इस पर ग़ौर किया है कि अगर सिर्फ़ एक सही राह होती तो फिर दुनिया की राहें अकसर क्यों एक दूसरे से झगड़ती रहती हैं? क्या दाल में कुछ काला नहीं?” उसने धड़ाम से अपनी किताब बंद की, “हर कोई अपने मन-घड़त ख़यालात जोड़ जोड़कर अपनी ‘राह’ पेश करता है ताकि उसे कुछ तसल्ली, कुछ सुकून हासिल हो।”

बीरबल बेध्यानी से कहने लगा, “मेरे चचा रामन को एक दिन एक बड़ी अजीब-सी बात पेश आई। उन्हें घने जंगल में से एक पहाड़ पर जाना था। वह एक चौक पर आए जहाँ से छः रास्ते आगे निकलते थे। कोई बात नहीं, उन्होंने सोचा। मुझे शिमाल की तरफ़ जाना है, तो शिमाली रास्ता ही इख़्तियार करूँगा। उस पर चल पड़े तो वह एकदम ख़त्म हुआ। तब वापस आकर अगली राह चुन ली। यह इधर-उधर घूमकर आख़िर में उसी चौक पर वापस पहुँची।”

“फिर क्या हुआ?” मैंने तजस्सुस से पूछा।

"शायद आप यक़ीन न करें, लेकिन हर एक रास्ते को आज़मा आज़माकर आख़िरी सही निकला, वह जो बिलकुल ठीक नहीं लग रहा था। हाँ, मेरे चचा उस दिन बहुत थके-हारे वापस घर पहुँचे।"

प्रोफ़ेसर बिफर गया। वह बेक़रारी से बोला, "मेहरबानी करके तलवार को दुबारा मियान में डालकर चादर में लपेट लो।"

मैंने तलवार को बीरबल से लेकर मियान में डाल दिया और एहतियात से चादर में लपेट लिया। मेरे दिल पर कोई भारी बोझ उतर आया जिससे जान को घुटन-सी महसूस होने लगी। मैंने आग की तरफ़ देखा। "हाँ," मैंने सोचा। "हाँ, ऐसा ही होगा। प्रोफ़ेसर की बातें ठीक ही लगती हैं।" मेरे पैरों तले ज़मीन खिसक गई।

लिपटी हुई तलवार को देखकर आलिम की बेक़रारी कम हुई। "कुछ चाय पी लो," उसने केतली उठाकर प्याले भर दिए और हमें पिदराना अंदाज़ में पेश किए। साथ ही मेज़ पर कुछ बिस्कुट प्लेट पर रख दिए।

बीरबल आह भरकर दुबारा कुरसी पर बैठ गया। उसकी गंजी खोपड़ी आग की रौशनी में दमक रही थी, और उसकी लंबी-पतली टाँगें बेइख़्तियार मेज़ से टकरा गईं।

मैं प्याला उठाकर चाय पीने को था कि अचानक घड़ियाल से आवाज़ आई।

"कितनी अजीब बात है," मुझे ख़याल आया। "यह कैसा घड़ियाल है? काँव-काँव की आवाज़ निकाल रहा है।"

बीरबल चीख़ उठा। उसने ठरठराते हाथ से घड़ियाल की तरफ़ इशारा किया। मैं चौंक पड़ा। जो परिंदा घड़ियाल के दरवाज़े से निकल आया था अब वापस जा रहा था। यह कोई पपीहा नहीं था। कौए की शक्ल ओझल हो रही थी। मैंने आँखें मलीं फिर दुबारा देखा। दरवाज़ा बंद हो चुका था। फिर यकायक मुझे एक हैबतनाक ख़याल आया। तराशे हुए मानूस चेहरे पर दुबारा नज़र डाली तो उसे पहचान लिया। मेरे दोस्त वसीम का चेहरा था!

मेरे मुँह से चाय का घूँट उगल पड़ा। प्याला ज़मीन पर खड़खड़ाया। मुझे सख़्त सदमा पहुँचा। मैंने घबराते हुए प्रोफ़ेसर को घूरा। उसकी आँखें बाहर निकलने को थीं। लगता था कि वह फटेंगी। उसका चेहरा बदलने लगा। गाल सुर्ख़ हो गए। नाक बढ़ने लगी। जब नज़र उसके हाथों पर पड़ी तो देखा कि नोकदार नाख़ुन उग रहे हैं। इसी तरह जहाँ पाँव थे अब पंजे नज़र आ रहे हैं। पूरा जिस्म बढ़ते बढ़ते बदलता रहा। चंद लमहों के अंदर अंदर प्रोफ़ेसर एक हैबतनाक अज़दहे में बदल गया।

काली बिल्ली भी ग़ायब हो गई थी। उसकी जगह एक काले लिबास पहने सूखी हुई चुड़ैल खड़ी थी। घड़ियाल की जगह मेरे दो साथी हथकड़ियों से बँधे हुए ज़मीन पर पड़े थे। ग़ार के दरमियान ज़ोरदार आग भड़क रही थी।

“हा हा हा,” चुड़ैल ने बेहूदा हँसी निकाली। “बेचारे बेवुक़ूफ़।” अज़दहे के मुँह से आग और धुआँ निकला। “ठाह!” उसने अपनी लंबी मोटी दुम धड़ाम से फ़र्श पर मारी।

“हम कौन और तुम कौन? क्या तुम अभी तक शक में हो कि हम तुम पर ग़ालिब आएँगे?”

“कड़क,” उसने एक कोड़ा हवा में लहराया। अज़दहा चिंघाड़ा। ग़ार हिल गया और धुएँ से भर गया। मेरे घुटने पिघलने लगे। मैंने अपनी लाठी उठाई जो मुसाफ़िर ने मुझे दिया था लेकिन अफ़सोस, वह अज़दहे की आग में फ़ौरन राख हो गई।

“काँव-काँव। तलवार को उठाओ! तलवार को इस्तेमाल करो,” अनवर की टरटराती आवाज़ पीछे से सुनाई दी।

तलवार को निकालते हुए मैं चादर से उलझ गया और ठोकर खाकर गिर गया। यह देखकर बीरबल ने लपककर चादर उतारी और तलवार खींचकर मेरे हाथ में थमा दी। फिर उसने ज़ोर से अपना प्याला चुड़ैल के मुँह में फेंक दिया। उसने हँसकर उसे एक फूँक से भस्म कर दिया।

लेकिन उतने में मैं उठकर अज़दहे का सामना करने में कामयाब हुआ। ऐन वक़्त पर मैंने तलवार उठाई। अज़दहा गरजते हुए आगे लपका, और उसका भारी जिस्म मुझसे टकराया। मैं लड़खड़ाया। अज़दहे का बदबूदार जिस्म मुझ पर गिर गया।

“यह मेरा अंजाम है।” मैं ने सोचा, फिर मैं बेहोश हो गया।

एक सौदा

न जाने मैं कितनी देर तक वहाँ पड़ा रहा। जब मैंने आँखें खोल दीं तो कौए, बौने और बीरबल के फ़िकरमंद चेहरे धुंद में से जैसे मेरे ऊपर नमूदार हुए। मैं उठ बैठा और हैरानी से अपना सर खुजलाया। चुड़ैल और अज़दहा कहीं मौजूद नहीं थे। जहाँ पहले अज़दहा था वहाँ फ़क़त मोम के दो-चार क़तरे फ़र्श पर पड़े थे। जब मेरे साथियों ने देखा कि मैं होश में आ गया हूँ तो उनके चेहरे खिल उठे।

"शुक्र है कि आप बच गए।"

"चुड़ैल कहाँ ...?" कमज़ोरी के बाइस मेरा गला बैठ गया।

वसीम बोला, "जब अज़दहा आपसे टकराया तो उस वक़्त आपने तलवार उसके जिस्म में घोंप डाला। तब वह तड़प तड़पकर मर गया और उसका जादू एकदम टूट गया। चुड़ैल चीख़ती चीख़ती भाग गई।"

बीरबल छोटे बच्चे की तरह उछलते-कूदते चहक उठा, "भाई, आपने ज़बरदस्त फ़तह पाई है। कैसी बात!"

"अब आराम करें," अनवर बोला।

मैंने सुकून की साँस लेकर आँखें बंद कीं और गहरी नींद सो गया।

रात वहीं बीत गई। फिर हम सुबह-सवेरे उठकर सफ़र पर रवाना हुए। अब हम ख़ुशगवार मैदानी इलाक़े में से गुज़रने लगे। चारों तरफ़ शादाब घास और क़िस्म क़िस्म के फूल हवा के हलके से झोंकों से लहलहा रहे थे। नशे में धुत तितलियाँ धूप में जगमगा रही थीं। शहद की मक्खियाँ अपने छत्तों के लिए ख़ज़ाना जमा करते हुए गाहे बगाहे भिभिना रही थीं। शबनम के मोटे मोटे क़तरे आफ़ताब की किरनें इधर-उधर बिखेर रहे थे।

हम एक चौराहे पर पहुँचे। एक तरफ़ दुकान थी। बाहर कुछ चीज़ें लटकी हुई और कुछ ज़मीन पर पड़ी नज़र आईं। तार, ज़ंजीरें, झाड़ू, बालटियाँ, कुदाल और बेलचे ऐसी चीज़ें इश्तहार का काम करते हुए हर गुज़रनेवाले को अंदर आने की दावत दे रही थीं। हम भी उनके जादू में आकर दाख़िल हुए।

"जी सर।" एक छोटे क़द का चुस्तो-चालाक आदमी फुरती से हमारी तरफ़ लपका। उसकी चूहे जैसी छोटी और गोल आँखें ख़ुशी से चमक रही थीं। "आपको क्या चाहिए? मैं आपकी ख़िदमत में हाज़िर हूँ।" वह इधर-उधर तेज़ी से मुख़्तलिफ़ क़िस्म की चीज़ें निकालने लगा। "यह कपड़ा अपनी अहलिया के लिए ख़रीद लीजिए ... नहीं? फिर यह

देखो साहब : यह उम्दा जूते ख़ासकर आपके लिए बनाए गए हैं। लेकिन शायद साहबान को औज़ार की ज़रूरत हो ... यह साबुन सूँघना। कैसी अच्छी ख़ुशबू ...” यों चूँ-चूँ करते हुए वह हमें दुकान की सारी अशया दिखाता गया। अचानक वह रुक गया।

“क्या आपके पास तलवार है?”

बीरबल ने एहतजाज किया, “जनाब! उसकी ज़बरदस्त तलवार है।”

मैंने अपनी तलवार दिखाई तो उसने उसे ग़ौर से परखा। “पुराने तर्ज़ की है ना। धार कुछ कुंद है। ख़ैर।”

“यह लो,” बीरबल ने तलवार को हवा में लहराकर और आगे पीछे लपककर किसी ख़याली दुश्मन के पेट में घोंप दिया। तब उसकी लंबी-पतली टाँगें एक दूसरी के साथ उलझ गईं और वह खड़खड़ाकर फ़र्श पर गिर गया।

मैंने तलवार उसके हाथ से ले ली। अब तक मैंने इस पर ग़ौर नहीं किया था, लेकिन सचमुच वह कुछ पुरानी और ज़्यादा इस्तेमालशुदा नज़र आई।

“मेरी बात सुनो,” सौदागर बोला। “आप मुझे यह तलवार दें तो आपको नई बेहतरीन तलवार रिआयत पर मिलेगी। आइए तशरीफ़ लाइए।” वह पिछली दीवार की तरफ़ इठलाते हुए चला। दीवार से तलवारों की क़तार लगी हुई थी। “क्या आपने कभी ऐसी उम्दा ए-वन

तलवारें देखी हैं?” मोमबत्ती की टिमटिमाती रौशनी में वह पुर-कशिश अंदाज़ में चमक रही थीं। “यह लो।” उसने एक तलवार दीवार से उतारी। “यह कैसा शाहकार है। मज़बूत और तेज़ धार। कोई मुख़ालिफ़ आप पर ग़ालिब नहीं आएगा। जदीदतरीन तर्ज़ पर बनाई गई है।”

“साईं-साईं।” उसने तलवार से किसी फ़रज़ी मुख़ालिफ़ का सर काट डाला।

“हमारी इज़्ज़त और शान के नाम,” मैंने फल पर पढ़ा। “कितने पैसे लेंगे?”

“बस फ़क़त पाँच हज़ार। लेकिन अगर आप मुझे अपनी तलवार दें तो चार हज़ार में मिलेगी।”

“काँव-काँव। उसे मोल मत लेना।” अनवर बेक़रारी से अपने पर फड़फड़ाते हुए बोला। “बाद में पछताएँगे।”

लेकिन पता नहीं क्यों, मेरा लालच इतना बढ़ गया कि मैं इनकार न कर सका। अपनी तलवार सौदागर को देकर मैंने नई तलवार ख़रीद ली।

“ठहरो,” बीरबल पुकारा। उसने एक चीज़ काउंटर पर रख दी—पानी की पिस्तौल।

“यह क्यों ख़रीद रहे हो?” मैंने ताज्जुब से पूछा।

“पता नहीं, मुझे पसंद आई है,” वह मुसकराया और पैसे अदा किए।

फिर हम दुकान से निकलकर आगे बढ़े। बीरबल मामूल के मुताबिक़ उछलता-कूदता अपना नया खिलौना आज़माता रहा कि कितनी दूर तक पानी पहुँचा सके। लेकिन दूसरे ख़ुश न थे। बौना कुछ ज़ेरे-लब बुड़बुड़ाता रहा जबकि अनवर उदासी के आलम में मेरे कंधे पर बैठा रहा।

अब मौसम बदल गया। काले काले बादल छा गए और बूँदा-बाँदी शुरू हुई। थोड़ी देर के बाद एक नदी नज़र आई। उसे पार करने का पुल क़रीब ही था।

"कौन?!" एक ग़लीज़ आवाज़ गरजी। एक देव दूसरे किनारे के पेड़ के साय में से लपककर पुल पर आ गया। "दफ़ा हो जाओ," वह ललकारा। "तुम यहाँ से नहीं गुज़र सकते।"

मैं अपनी नई चमकदार तलवार निकालकर आगे बढ़ा। पेड़ की लंबी शाख़ से बना डंडा हाथ में भाले की तरह पकड़े देव मेरी तरफ़ झपटा। "मैं तुम सबको कच्चा चबा लूँगा!" वह गरजा। फिर न मालूम कि क्या हुआ। हाथा-पाई में मैंने 'छिन' की आवाज़ सुनी और मेरी तलवार उड़कर नदी में गिर गई।

एक और वार

मेरे पाँव दहशत से जम गए। “कड़क।” देव का डंडा मेरे कंधे से टकरा गया। मैं लड़खड़ाकर पीछे हट गया। दर्द की लहर जिस्म में से गुज़री। अब देव मुझे पकड़ने को था कि बीरबल रास्ते में आ गया। उसने अपनी पिस्तौल खींचकर देव की आँखों में पानी का धारा चलाया। देव को धचका लगा, और वह रुक गया। “काँव-काँव।” अनवर कौअ उड़कर उसके सर को अपने पंजों से नोचने लगा।

“लानत!” देव दहाड़ा और अपना डंडा हवा में वहशत से लहराया। तब वह दर्द से चीख़ उठा। वसीम बौने ने चुपके से पीछे से आकर उसकी टाँग में अपनी छोटी मगर तेज़ तलवार घोंपी थी। अनवर उड़कर बच गया और मेरे दूसरे दो साथियों ने भी भागकर अपनी जान छुड़ाई। उनके हमले से मुझे भी बच निकलने का मौक़ा मिला।

मैं डगमगाते हुए दुकान पर वापस पहुँचा। मेरी हालत बहुत बुरी थी। अब तक शदीद दर्द मेरे कंधे को तकलीफ़ दे रहा था। सौदागर किसी

गाहक के सामने अपने सौदे की तारीफ़ कर रहा था। मैं सीधे उसके पास गया।

“जी सर, कुछ और चाहिए?” वह मेरी तरफ़ रुजू हुआ।

“मुझे मेरी तलवार वापस देना,” मैंने हाँपते हुए कहा।

“हाँ, बिलकुल।” बीरबल पुकारा। “अभी अभी इसे वापस कर दो!”

“क्या? अच्छा … यह तो मुश्किल है,” वह मुसकराया। “वह तो किसी गाहक को बहुत पसंद आई।”

यह सुनकर मैं चकरा गया। “वह कहाँ गया? कौन था?” मैंने बेचैनी से पूछा।

दुकानदार ला-परवाई से बोला, “क्या मालूम? मैं हर एक पर ध्यान नहीं देता जो मेरे पास आता है।”

मैं उदास हालत में निकलने को था कि बीरबल बोला, “एक बात मुझे अजीब ही लगती है। दुकानदार के वह लड़के देखो!”

एक कोने में दो मुलाज़िम काम कर रहे थे। एक जब झुक गया तो मैं चौंक पड़ा। कुरते के नीचे एक काले ज़िरह-बकतर की झलक साफ़ दिखाई दी।

दुकानदार अब तक गाहक से गपें मार रहा था। हम चुपके से वापस मुड़कर उस दीवार के पास गए जहाँ चमकती तलवारों की लंबी क़तार लटकी हुई थी। मैंने हर एक को ध्यान से देखा मगर अपनी तलवार कहीं न मिली। मैं मायूस होकर चलने को था कि बीरबल जो कोने में लटकी

हुई तलवारों को जाँच रहा था किसी चीज़ से ठोकर खाकर गिर गया। वह फ़र्श पर बैठे अपने पाँव को मलने लगा कि अचानक पुकार उठा, "ज़बरदस्त! यह क्या है?" उसने फ़र्श पर पड़े उन मैले-कुचैले चीथड़ों की तरफ़ इशारा किया जिनसे उसने ठोकर खाया था। कोई चीज़ उनमें लिपटी हुई चमक रही थी। मैंने लपककर चीथड़ों को उतारा तो मेरी तलवार चमकती-दमकती निकली। "राह और हक़ और ज़िंदगी मैं हूँ," मैंने ज़ेरे-लब पढ़ा।

"अरे, यह क्या है?" बीरबल बोला। चीथड़ों में एक और तलवार थी, बिलकुल मेरी जैसी। उसका जुड़वाँ भाई।

"यह अब तुम्हारी ही है," मैंने उसे उसके हाथ में थमाकर कहा। फिर हम दोनों दुकानदार के पास गए।

तलवार को देखकर दुकानदार खिलखिलाकर हँस पड़ा। ख़ामोशी से सिक्के काउंटर पर फेंककर हम दुकान से निकले। दोनों मुलाज़िम लपककर हमारे पीछे आन पड़े। लेकिन हमारी तलवारों को देखकर वह रुक गए, फिर दुकानदार के इशारे पर वापस लौटे।

"देखा आपने?" बीरबल ललकारा। "मेरी पिस्तौल को देखकर वह पीछे हट गए।"

"अरे, तुम कैसे अजीब बंदे हो। वह तुम्हारी तलवार से डरते हैं।"

पुल के क़रीब कौअ और बौना हमारे इंतज़ार में थे।

तलवार को मेरे हाथ में चमकती-दमकती देखकर वसीम ने कहा, “ज़बरदस्त! अब हम ज़रूर जीत जाएँगे।”

“देखा आपने कि मुझे क्या मिल गया है?” बीरबल चहका।

दोनों राज़दाराना मुसकराए। “यह तोह्फ़ा शहज़ादे की तरफ़ से है,” वसीम बोला। “उनको मालूम था कि आपको ज़रूरत पड़ेगी।”

मेरा हौसला बढ़ गया। देव दुबारा गरजते हुए निकला। लेकिन इस बार मैं पहले लपका। “साईं-साईं।” तलवार डंडे से टकराई तो डंडा मोम की तरह कट गया। देव चीख़कर भाग गया, और हम पुल को आराम से पार कर सके।

नादान किसान

“आख़िर हमारी शहज़ादे से मुलाक़ात कब होगी?” हम एक पक्के रास्ते पर चल रहे थे। मेरा यह सवाल सुनकर वसीम और अनवर सिर्फ़ मुसकराए। बीरबल कोई बेतुका-सा नग़मा गुनगुना रहा था।

“हाँ, मुझे मालूम है। बादशाह के तौर-तरीक़े हमारी समझ से बाहर हैं,” मैं फूट पड़ा। “ताहम कुछ न कुछ अंदाज़ा लगा सकते हैं कि नहीं?” मेरा बिफर जाने का कोई इरादा नहीं था, लेकिन मेरा दिल शहज़ादे को देखने के लिए तड़प रहा था।

“सब्र, यार। सब्र” वसीम ने हँसी रोक रोककर कहा। “फ़िकर मत करना। मुनासिब वक़्त पर तुम्हारी ख़ाहिश ज़रूर पूरी हो जाएगी।”

मैं ख़ामोश हो गया लेकिन दिल को तसल्ली न मिली।

“रास्ता! हट जाओ!” हमारे पीछे से आवाज़ आई। एक किसान धोती और पगड़ी पहने बैलगाड़ी पर सवार था। बैलों का पुरसुकून जोड़ा आराम से उसे खींच रहा था। एक हाथ में गुड़गुड़ाता हुक़्क़ा पकड़े

किसान के नथनों से धुएँ के दो साँप निकलकर काहिली से ऊपर मँडला रहे थे। पीछे गंदुम की भारी बोरियों का ढेर पड़ा था।

"क्या गाड़ी में जगह है?" वसीम पुकारा।

किसान ने जवाब में हुक़्क़े से बैलगाड़ी की जानिब इशारा किया। मैं और वसीम छलाँग लगाकर सामने बैठ गए जबकि अनवर उड़कर किसी बोरी पर पहरा लगाने लगा। बीरबल भी एक बोरी पर बैठ गया। काफ़ी देर तक सिर्फ़ गाड़ी की 'छिन-छिन' और हुक़्क़े की गुड़-गुड़ की आवाज़ सुनाई दी। फिर किसान ने ख़ामोशी को तोड़ा। "कहाँ जा रहे हो?"

"शहज़ादे की तलाश में हैं," मैंने जवाब दिया।

"क्यों?"

"वह तो राह और हक़ और ज़िंदगी हैं।"

"क्या बात कर रहे हो?" किसान ने नथने फुलाकर कहा। "राह? यह मेरी राह है।" उसने अपने ज़ोरदार बाज़ुओं के पट्ठे कसकर फ़ख़्र से दिखाए। "हक़? मेरी दो आँखें और तनदुरुस्त अक़्ल है। किसी और हक़ या सच्चाई की क्या ज़रूरत है!" उसने अपने माथे पर उँगली रखी। "और जो ज़िंदगी की बात है : मेरे पीछे जो कुछ पड़ा है वह काफ़ी है।" उसने बोरियों की तरफ़ इशारा किया।

हम ख़ामोश रहे।

मगर बीरबल जोश से बोला, "आप बिलकुल ठीक कह रहे हो। वाह जी वाह, कितने मोटे मोटे पट्ठे। क्या बात है! किसी वक़्त आपका

मुक़ाबला करूँगा। हाँ, ठीक कह रहे हो। आप बैलगाड़ी को सीधे रास्ते पर चला सकते हो! बड़ी बात है। और गंदुम भी जमा किया है। आप ही ने उसे पाला-पोसा है। मिट्टी और पानी अलग।"

किसान ने उस पर शक की नज़र डाली, मगर बीरबल बड़ी मासूमियत से गपें मार रहा था। किसान ख़ामोशी से अपना हुक़्क़ा पीता गया। "गुड़-गुड़, छिन-छिन।"

कुछ देर के बाद दो और मुसाफ़िर रास्ते पर चलते नज़र आए। "ओए," एक ने बैलगाड़ी को रोक दिया। "क्या मंडी की तरफ़ जा रहे हो?" किसान ने हाँ में सर हिलाया। "हमें भी ले चलो। हम पैसे भी देंगे।"

"सभों को नहीं बिठा सकता," किसान बुड़बुड़ाया।

"चलो, हम उतरेंगे," वसीम ने जल्दी से कहा। किसान ने एतराज़ न किया। हम उतर गए और दूसरे हमारी जगह चढ़ गए।

"यह लोग बड़े मशकूक हैं," वसीम ने कहा जब बैलगाड़ी खड़कती खड़कती ओझल हो गई। "यह मुसाफ़िर क़ाबिले-एतमाद नहीं हैं।"

दोपहर के वक़्त हम खुले मैदान को छोड़कर सायदार जंगल में दाख़िल हुए। बाँस के घने झुंडों ने सूरज की एक किरन भी अंदर आने न दी। रास्ता पुरअसरार तरीक़े से बल खाते हुए सरसराते हुए बाँस में से

गुज़र रहा था। मैं कुछ काँपने लगा। ख़ुदा जाने कितने डाकू इस जंगल में ताक में बैठे हों।

अचानक हम चौंक पड़े। रास्ते के किनारे से कुछ दूर किसी के पाँव दिखाई दिए। हम दबे पाँव उस तरफ़ बढ़े तो क्या देखते हैं : किसान अपने सर को खुजलाते हुए ज़मीन पर बैठा है।

"हाय हाय, क्या हुआ?" उसने कराहते हुए कहा। कुछ कंफ़्यूज़ लग रहा था।

वसीम ने जेब से कुप्पी निकालकर किसान को उसमें से चंद क़तरे पिलाए। जब देखा कि कोई ज़ख़म नहीं है तो वह धीरे धीरे उठा और अपनी पगड़ी तरतीब से बाँधकर सर पर रखा। फिर हमें अपनी राम कहानी सुनाई। जंगल में पहुँचते ही वह अचानक बेहोश हो गया था।

"क्या मुसाफ़िरों ने आपको कुछ खिलाया-पिलाया तो नहीं?" अनवर ने पूछा।

"हाँ... उन्होंने मुझे कुछ शराब पिलाई," उसने शर्मसार होकर कहा।

"फिर बात साफ़ है। उन्होंने शराब में कुछ डाल दिया होगा।"

बीरबल चहक उठा, "आपकी ज़िंदगी कहाँ गई?"

किसान चौंक पड़ा। चारों तरफ़ नज़रें दौड़ाकर चिल्लाया, "बैलगाड़ी कहाँ है?"

वसीम बोला, "अब तलाश करने का क्या फ़ायदा? उन मुसाफ़िरों से पूछ लो। उनको ज़रूर पता होगा।"

किसान ग़ुस्से से लाल-पीला हो गया। लेकिन चीख़ने-चिल्लाने से भी बैलगाड़ी वापस नहीं लाई जा सकती थी। आख़िरकार वह बुड़बुड़ाते हुए हमारे साथ चल दिया।

दिन ढलने को था जब हम मंडी पर पहुँचे। दुकानों के बेशुमार चराग़ टिमटिमा रहे थे। किसान हमसे अलग हो गया। हम काफ़ी देर तक इधर-उधर मंडी की चीज़ें देखते हुए घूमे-फिरे।

“देखो, तनदुरुस्त अक़्ल उधर फिर रही है,” वसीम ने मुझे हलका-सा धक्का देकर कहा।

कुछ आगे किसान नशे में धुत चल> रहा था। एक हाथ में खुली पगड़ी लहरा रही थी, दूसरे से वह बेहूदे से इशारे कर रहा था जबकि मुँह से राल टपक रही थी।

“ओए, मेरे दोस्तो,” हमें पहचानकर वह डगमगाते हुए हमारे पास आया। “ठीक ठीक हो? ... मैं आपको एक बड़ा राज़ बताऊँ? बड़ी हिकमतवाली बात है। किसी दुकानदार के पास मेरी बोरियाँ पड़ी हैं। उसने कहा कि मेरी नहीं ... हा हा हा ... क्या ख़ूब ना?” जवाब का इंतज़ार किए बग़ैर वह लड़खड़ाते हुए आगे निकला।

बीरबल ने उसके पीछे पुकारा, “मत भूलना कि किसी वक़्त आपसे कुश्ती लड़ेंगे।”

रसूमाबाद

मंडी के क़रीब एक खुली जगह थी। वहाँ हम चादर बिछाकर रात के लिए टिक गए। फिर अगले दिन सुबह-सवेरे उठकर रवाना हुए। अब हर तरफ़ पहाड़ियाँ बिछी हुई थीं। रास्ता वादियों में से गुज़रकर कभी खुले मैदान को पार करता और कभी फलदार दरख़्तों के झुंडों में घुस जाता। उसके किनारे किनारे एक नदी सूरज की किरनों के साथ नाचती-कूदती ग़रग़रा रही थी। पेड़ों की टहनियों पर रंगारंग परिंदे चहचहा रहे थे। इस अनोखे और हरे-भरे माहौल में हमारी जान में जान आई, और हमारी रफ़्तार धीरे धीरे सुस्त होती गई।

दोपहर के वक़्त हमारे सामने एक शहर नज़र आया। उसके बीच में एक ऊँचा पहाड़ तेज़ धूप में जगमगा रहा था। इर्दगिर्द मज़बूत और मोटी मोटी फ़सील दुश्मन की हौसलाशिकनी के लिए बनाई गई थी। मेरा दिल तेज़ी से धड़कने लगा।

“क्या यह तो बादशाह का शहर नहीं है?” मैंने सवाल किया।

कौए और बौने दोनों ने ज़ोर से नफ़ी में सर हिलाया। "इस शहर में हमें ज़्यादा ख़बरदार रहना है," अनवर बोला।

यह सुनकर मेरी आँखों में आँसू भर आए। "शहर का नाम क्या है?"

"रसूमाबाद।"

हम दाख़िल हुए। सड़कें साफ़-सुथरी थीं। हर तरफ़ शानदार मकान हम पर रोब डाल रहे थे।

अरे, यह बदबू कहाँ से आ रही है?" बीरबल चिल्ला उठा। वह सूँघ सूँघकर साथवाली एक छोटी-सी गली में घुस गया। "यह क्या माजरा है!" वह पुकारा। हम दौड़कर उसके पास चले। उसने हाथ से इशारा किया। "यह देखो!" हर तरफ़ कूड़े-कचरे के बड़े बड़े ढेर बिखरे पड़े थे। उन्हीं से बदबू आ रही थी।

"यह है इस शहर की आदत," अनवर हिक़ारत से टर्राया। "बड़ी सड़कें दिखावे के लिए साफ़ रखे जाते हैं, लेकिन इन सबके पीछे कूड़ा-कचरा पड़ा ही रहता है।"

"रास्ता दो! रास्ता दो!" एक जुलूस बड़ी धूमधाम के साथ कहीं से निकल रहा था। लोग उम्दा क़िस्म के चोग़े पहने बड़े शरीफ़ और दीनदार लग रहे थे। हाथों में धुआँदान पकड़े वह किसी अजनबी ज़बान में मज़हबी गीत गा रहे थे। फ़िज़ा ख़ुशबूदार धुएँ से बोझल थी।

बीरबल ज़ोर से खाँसने लगा, "अरे, लोग धुआँ छोड़ रहे हैं।"

हम जुलूस से जान छुड़ाने के लिए एक तंग गली में घुस गए। मगर दाख़िल होते ही मैंने एक लंबी दाढ़ीवाले से टक्कर खाई। वहाँ से भी पुर-वक़ार जुलूस ढोलक बजाते बजाते निकल रहा था। हम वापस मुड़े तो बीरबल बेचारा सीधे केसिरया रंग के लिबास पहने एक मर्द से टकरा गया जिसके पीछे पुजारी तानता बँधे चल रहे थे। पूरा शहर मसजिदों, मंदिरों और गिरजों से भरा पड़ा था। हर कोने से गीतों, नमाज़ों, अज़ानों और घंटियों की आवाज़ें गूँज रही थीं।

जुलूसों से कतराते कतराते हम एक खुले चौक में पहुँच गए। “हज़रात, कान धरो!” एक लंबी दाढ़ीवाला खड़ा हो गया था। वह खंखारा। “हज़रात, तुम सबको पता है कि आईन को हर तरह से पूरा करना है, वरना जहन्नुम यक़ीनी है। सो चोरी मत करना। झूट मत बोलना। क़त्ल मत करना। ज़िना मत करना। ...” यों वह ऊँची आवाज़ में एक लंबी चौड़ी फ़हरिस्त की तिलावत करता गया।

हम तमाशाइयों में शामिल हुए और ग़ौर से सुनने लगे। उसकी बातें माक़ूल और ज़रूरी लग रही थीं। क्या वह मुझे बादशाहत के बारे में नहीं बता सकता था? जब वह फ़ारिग़ होकर बड़े रोब से जाने लगा तो मैं उससे मिलने के लिए आगे लपका। “उस्ताद, क्या आप मुझे बादशाहत के बारे में बता सकते हैं?”

बुज़ुर्ग संजीदगी से बोला, “बेटा, बड़ी ख़ुशी की बात है। मैं तुमको ज़रूर बहुत कुछ बताऊँगा। मेरे साथ आओ।” हम उनके पीछे पीछे

चलकर एक टेढ़ी-मेढ़ी गली में पहुँच गए। बुज़ुर्ग बोला, “हमारी गली में सिर्फ़ पक्के पक्के दीनदार रहते हैं। इसमें तुमको कोई भी बेदीन नहीं मिलेगा।” गली इतनी तंग थी कि पूरे दिन धुँधलका-सा छाया रहता था। हम एक मकान के सामने रुक गए जो ज़बरदस्त ढंग में बनाया गया था। उसकी आराइश संगे-मरमर से की गई थी। शानदार दरवाज़े के ऊपर सुनहरी हुरूफ़ में लिखा था, “आईन महल।” उसे देखते ही हम काफ़ी मुतअस्सिर हुए।

बीरबल हैरानी से बोला, “कैसी अजीब इमारत है! यह बिलकुल टेढ़ी-मेढ़ी है।”

बुज़ुर्ग ने सोने की एक बड़ी चाबी जेब से निकालकर दरवाज़े को खोल दिया।

हम एक तंग और अंधेरे बैठक में दाख़िल हुए। दीवारों के साथ क़दीम और क़ीमती क़ालीन लगे थे। कोने में एक बड़ी अलमारी पड़ी थी। सजावट के लिए लकड़ी की तीन छोटी मेज़ें, गुलदान और मज़ीद छोटी-मोटी चीज़ें बिखरी पड़ी थीं।

बीरबल मामूल के मुताबिक़ कमरे में फिर फिरकर हर चीज़ को परखने लगा। फिर छत की तरफ़ इशारा किया, “उस्ताद, आपने बड़े ख़ूबसूरत जाले रखे हैं।”

मैंने छत की सिम्त देखा तो झटका लगा। सच, हर कोने में मकड़ियों के जाले लगे हुए थे।

बीरबल गपें मारते मारते बोला, “यह आपका क़ालीन भी कितना अनोखा है।”

हक़ीक़त में जिस क़ालीन पर हमें बिठाया गया था वह घिसा-फटा और मैला-सा था।

बुज़ुर्ग ख़फ़ा से जवाब देने लगा लेकिन बीरबल का भोला-भाला चेहरा देखकर उसने माज़रत चाहते हुए कहा, “हमारे नौकर बहुत मसरूफ़ रहते हैं। लेकिन चिंता मत करना, मैं तुमको सब कुछ सिखाता हूँ।”

कहीं से चाय के टूटे-फूटे प्याले और बासी पुरानी रोटी पहुँच आई।

“क्या ख़ूब!” बीरबल बड़े मज़े से चुसकी लेता और रोटी को चपड़-चपड़ खाता गया।

तब बुज़ुर्ग ने एक किताब एहतराम से ताक़ से उतारकर मुझे पेश की। “पहली बात, पाक नविश्ते को हिफ़्ज़ करना है। इसे याद करोगे तो बादशाहत में दाख़िल होना ज़्यादा आसान हो जाएगा।”

मैंने किताब पर नज़र दौड़ाकर उसे पढ़ने की कोशिश की। “मगर यह बातें मेरी समझ में नहीं आतीं।”

बुज़ुर्ग कुछ झुँझलाकर बोला, “बेशक तुम यह नहीं समझ सकते। यह तो पाक ज़बान में क़लमबंद हुआ है। लेकिन इसे पढ़ते जाओ तो बहुत बरकत मिलेगी।”

“तो क्या आप इसे समझ सकते हैं?” मैंने हैरत से पूछा।

"ऊपरवाले की यह बातें कौन पूरे तौर से समझ सकता है? देखो, मैंने इसे हिफ़्ज़ कर लिया है। और मेरा मशवरा है कि तुम भी यह करो।"

"लेकिन अगर आप इसे नहीं समझ सकते तो इसका क्या फ़ायदा है?"

बुज़ुर्ग हाकिमाना बोला, "देखो न, यह तो बहुत ज़रूरी है। वरना तुम किस तरह बादशाहत में पहुँचोगे?"

बादशाहत की बात सुनकर मैंने जोश से पूछा, "उस्ताद, क्या आप गए हैं? वह कहाँ है?"

उसने बात से कतराना चाहा, मगर मैं अड़ा रहा। तब बोला, "फ़िलहाल मैं तो यहाँ बहुत मसरूफ़ हूँ। जाने की फ़ुरसत न मिली। लेकिन तुमने तो शहर के बीच में पड़े पहाड़ को देखा है। वही सबकी मनज़िले-मक़सूद है। हम तो क़रीब ही रहते हैं। क्या यह बड़ी बात नहीं? हाँ, इंशाल्लाह हम किसी दिन उस पर जा बसेंगे। बेशक, बेशक। इस वक़्त तो यहाँ मेरा बहुत काम है। लोगों को सिराते-मुस्तक़ीम पर लाना है। हाय हाय, बहुत ही ज़्यादा काम है।" उसने ठंडी आह भरी।

"हाय हाय," बीरबल ने भी ठंडी आह भरी। "इतना काम कि आप ख़ुद भी न जा सके। बड़े अफ़सोस की बात है।"

बुज़ुर्ग के जवाब से मुझे तसल्ली न हुई, लेकिन मैं उसे नाराज़ नहीं करना चाहता था, इसलिए मैंने आजिज़ी से सवाल किया, "उस्ताद,

इसके अलावा मुझे क्या करना है ताकि बादशाहत के लिए तैयार हो जाऊँ?"

वह कुछ देर अपनी दाढ़ी थपथपाता रहा, तब बीरबल ने उसकी दाढ़ी पकड़कर पूछा, "मेरे चचा रामन ने एक बार भी इस तरह की दाढ़ी रखी। क्या यह सचमुच लगी भी है? मेरे चचा ने कहा कि खुजली बहुत होती है। क्या आपको भी खुजली होती है?"

बुज़ुर्ग ने झटके से अपनी दाढ़ी छुड़ाई फिर बोला, "देखो, बादशाहत के शहरी के लिए बहुत-सारे फ़रायज़ भी अदा करने हैं। दाढ़ी की सही काँट-छाँट, कपड़ों की ठीक तरतीब, हराम चीज़ों से परहेज़, नमाज़ का सही तरीक़ा, हाजत रफ़ा करने का तर्ज़ वग़ैरा वग़ैरा। बहुत-सारी और ऐसी बातें हैं। यह देखो।" उसने मुझे अलमारी की तरफ़ इशारा किया जो बोसीदा मटमैली किताबों से खिचाखिच भरी पड़ी थी। "यह सब कुछ करोगे तो बेहतर रहेगा।"

बीरबल उठकर अलमारी के पास गया। अलमारी को खोला, लेकिन एकदम पीछे लपका। दर्जनों मोटी मोटी किताबें धड़ाम से फ़र्श पर गिर पड़ीं। धूल का बादल उड़ गया। बुज़ुर्ग की आँखें ग़ुस्से से चमकने लगीं। वह उछलकर किताबें दुबारा अलमारी में ठूँसने लगा।

"अब वह ज्वालामुखी की तरह फटेगा," मैंने सोचा।

लेकिन अपने आप पर क़ाबू पाकर वह मुलायम अंदाज़ में बोला, “मेरा शागिर्द बनो तो मैं आराम से तुम्हें सब कुछ समझा दूँगा। तुम्हें खाना-पीना भी मिलेगा, साथ साथ सोने की जगह भी।”

बुज़ुर्ग की बातें सुन सुनकर मुझे चक्कर आने लगे। क्या यह सब कुछ सचमुच पूरा करना था ताकि बादशाहत में दाख़िल हो सकूँ? मैंने मायूस आवाज़ में पूछा, “उस्ताद, मुझे नहीं लगता कि मैं यह कर पाऊँगा। क्या कोई भी यह तमाम हिदायात पूरी कर सकता है?”

“क्यों नहीं? यह हर एक का फ़र्ज़ है। वरना ...”

वह बात कर ही रहा था कि दरवाज़ा धड़ाम से खुल गया और एक आदमी अंदर आ घुसा। वह ग़ुस्से से लाल-पीला था। “लो, इधर है हरामज़ादा!” वह चीख़ा, और बुज़ुर्ग पर झपट पड़ा। “क्या तेरा दिमाग़ ख़राब है? इस बार हमने तेरे नौकरों को रँगे हाथों पकड़ लिया जब वह मेरी दुकान में घुसकर चोरी कर रहे थे। और एक और बात। मेरी घरवाली कहती है कि तू आँखें मारता है। यह लो इसका अज्र।” वह उसके गले को घोंटने लगा। दोनों एक दूसरे से लिपटकर ज़ोर से लड़ने लगे। उनके उलझे हुए जिस्म कभी इधर लड़खड़ाए, कभी उधर। चूँकि वह बाहर के दरवाज़े के सामने ही एक दूसरे को घूँसे मार रहे थे इसलिए हम एकदम दूसरे दरवाज़े से निकले। वहाँ से एक सीढ़ी ऊपरवाली मनज़िल तक पहुँचाती थी। हम अंधे-धुंद ऊपर चढ़ने लगे। लेकिन यह सीढ़ी बड़ी

अजीब थी। वह बिलकुल टेढ़ी-मेढ़ी थी, और मैं कुछ लड़खड़ाते हुए ऊपर पहुँचा।

वहाँ का नज़ारा देखकर हम घबराहट से रुक गए।

बीरबल चहचहाया, “कैसी बात! क्लास रूम हॉल में आ गए हैं!”

एक बड़े हॉल में सौ के ऊपर बच्चे लंबी क़तारों में आलती-पालती मारे कुछ जप रहे थे। उनकी आवाज़ें हॉल में गूँज रही थीं। हर एक के सामने पानी का गलास और सूखी रोटी का टुकड़ा था। उन्हें देखकर मुझे सख़्त सदमा पहुँचा। हर एक ज़ंजीरों से बँधा हुआ था। हर एक कुछ दुबला-पतला बल्कि बीमार-सा लग रहा था।

“रुको!” हमारे पीछे एक सिपाही दौड़कर आया। वह काला ज़िरह-बकतर पहने हुआ था। हम लपककर बच्चों की क़तारों में से आगे गुज़रे। दूसरी तरफ़ दरवाज़ा था जिससे एक सीढ़ी उतरती हुई नज़र आई। जब उतरे तो एक किचन में पहुँचे। हर तरफ़ गंदे बरतन, देग, प्लेटें और गलास बिखरे पड़े थे। साथ साथ गला-सड़ा खाना और बासी रोटी के ढेर। “ठन-ठन!” बीरबल किसी देग से टकरा गया तो चूहे और लाल बैगों के दल बरतनों में से भाग निकले। किचन से दरवाज़ा बाहर की तरफ़ आधा खुला था। हम उसमें से निकले और अंधे-धुंद दौड़ते गए।

लेकिन जब हम कुछ फ़ासले पर रुक गए और मैं अपने साथियों की तरफ़ मुड़ा तो सिर्फ़ अनवर और वसीम थे। बीरबल का नामो-निशान तक नहीं था।

“पीछे रह गया है!” मैं चीख़ा। “हमें उसे हर सूरत में निकलवाना है। उसके बग़ैर किस तरह आगे निकल सकते हैं?”

हम दिले-नख़ास्ता वापस किचन के दरवाज़े पर पहुँचे। अब सब कुछ ख़ामोश था, लेकिन दरवाज़ा बंद था। मैंने तलवार को दरवाज़े में घोंपा तो वह मक्खन में छुरी जैसी आसानी से गुज़र गई। यों रास्ता बनाकर हम अंदर गए और दबे पाँव सीढ़ी पर चढ़कर ऊपर पहुँचे। तालिब-इल्मों की वही क़तारें नज़र आईं। मगर अब कोने में हमारे साथी की बश्शाश शक्ल ज़ंजीरों में बँधी हुई नज़र आई। वह आलती-पालती मारकर बैठा था और बड़े जोश से एक पहरेदार से गपें मार रहा था। उसकी तलवार साथ ही कोने में रखी गई थी, जहाँ वह अंधेरे में चमक रही थी।

“यह तो बड़ा दिलचस्प निज़ाम है। पढ़ने का यह तरीक़ा मैंने कभी नहीं देखा। क्या यह भी मांटेसरी तरीक़ाए-तालीम है? और यह खाना का इंतज़ाम! वाह जी वाह! तालिब-इल्म पढ़ते हुए खा-पी सकते हैं। क्या बात है। तक़वियत भी पाते हैं और सीखते भी हैं। वह कब के शाही पहाड़ पर चढ़ने के क़ाबिल हो गए होंगे।”

तालिब-इल्म उसके जादू में आकर मज़े से सुन रहे थे। पहरेदार ने यह देखकर कोड़ा लहराया तो वह फुरती से दुबारा जपने लगे।

“ज़बरदस्त।” बीरबल की चहचहाहट बुलंद हुई। “तालीम देने का यह तरीक़ा कितना मुअस्सर है। मेरे चचा रामन भी यही तरीक़ा पसंद करते थे। मुझे याद है जब मैंने एक बार उनका पसंददीदा बिस्कुट चोरी

किया। जब पता चला तो उन्होंने मुझे इसी तरह सीधा किया। 'बीरबल,' उन्होंने कहा, 'तुझे सज़ा देकर मुझे तुझसे ज़्यादा दुख हो रहा है।' हाँ, मेरे चचा बड़ी लगन से पिटाई करते थे।"

"फँस गया!" किसी ने मुझे पीछे से ज़ोर से पकड़कर फ़र्श पर पटख़ दिया। मैं दर्द से तड़प उठा। मेरे ऊपर एक पहरेदार काला ज़िरह-बकतर पहने फ़तहमंदी से ललकार रहा था। "अब हम तुझे सबक़ सिखाएँगे।" उसके हाथ में कोड़ा लहरा रहा था। "यह ले—" लेकिन अचानक वह चीख़ उठा। कोड़ा गिर गया, और वह लड़खड़ाने लगा। उसके पीछे वसीम की तलवार कभी इधर कभी उधर चमक रही थी। पहरेदार उसका सामना करने मुड़ गया। दूसरा पहरेदार भी लपक कर उस की मदद करने आया। उतने में मैं सँभलकर उठा और अपनी तलवार पकड़कर तेज़ी से बीरबल की ज़ंजीरों को काट डाला। वह अपने बाज़ुओं और पाँवों को मलते मलते उछल पड़ा।

लेकिन अब पहरेदार की गरजें सुनकर दो और पहरेदार खट-खट खट-खट दूसरी सीढ़ी से चढ़ आने लगे। मैंने मदद के लिए चारों तरफ़ देखा। तमाम तालिब-इल्म तमाशा का मज़ा ले रहे थे। तब बीरबल ने लपककर अपनी तलवार को पकड़ लिया और हर एक की ज़ंजीरें काटने लगा। क़तारों के साथ साथ दौड़ते हुए चंद लमहों में सब ज़ंजीरें कट गईं। कुछ बच्चे सुन्न पत्थरों की मानिंद बैठे रहे, मगर ज़्यादातर उछलते-कूदते पहरेदारों से उलझ गए। पहरेदार ज़ोर के धक्के दे देकर हम तक पहुँचने

की कोशिश करते गए, लेकिन उतने में हम बच्चों के धारे में बहते हुए सीढ़ी पर से उतरकर बाहर निकले। जितने बच्चे हमारे साथ निकले थे वह अब कूदते-नाचते गलियों में बिखर गए।

हमने हाँपते हुए अपना सफ़र जारी रखा। वसीम बौना कड़वाहट से बोला, “यह है इस शहर का मरज़। उन्होंने ज़िंदगी के हर पहलू के लिए क़वानीन और सज़ाएँ मुक़र्रर की हैं। लेकिन क्या आपने देखा इसका असर?”

“तो यहाँ के लोग अच्छे क्यों नहीं होते?” मैंने मायूसी से पूछा।

“देखो,” वसीम ने इशारा किया। कुछ फ़ासले पर एक बच्चा किसी अमीर की जेब कतर रहा था। क़रीब ही एक मज़हबी राहनुमा शानदार चोग़ा पहने किसी औरत को आँखें मार रहा था। साथवाली सब्ज़ी की दुकान में दुकानदार गाहक के लिए सेब चुनकर दो-एक गले-सड़े दाने डाल रहा था।

अनवर टर्राया, “शहर का एक चकला भी नहीं है। लेकिन घरों की हालत देखो तो और बात है। पसे-परदा हर गुनाह सरज़द होता है। और जेल मासूम शरीफ़ लोगों से भरे पड़े हैं जबकि पैसेवालों की कोई चिंता नहीं। रिश्वतखोरी ने ऊपर से नीचे तक सबमें सरायत की है।”

“ऊँची दुकान फीका पकवान,” वसीम ने अपने दोस्त की तसदीक़ करके कहा। “इन अहकाम से वह अंदर से तबदील नहीं हो सकते। लाज़िम है कि पहले इनसान का दिल बदल जाए।”

हम एक तालाब से गुज़रे। वहाँ एक नौजवान बच्चों को आगाह कर रहा था, "बच्चो, इस जगह ग़ोता मत मारना। यहाँ पानी में बड़ा पत्थर है। ग़ोता लगाओगे तो तुम्हारा बुरा अंजाम होगा।"

वसीम बोला, "ज़रा रुको। देखते हैं कि क्या होगा।"

बच्चे सबके सब तालाब के दूसरे किनारे पर जाकर नहाने लगे। कुछ देर बाद नौजवान ने एहतियात से एक पाँव पानी में डालकर उसकी गहराई आज़माई। फिर तसल्ली पाकर उसने ग़ोता लगाया। "ठाह!" वह पानी की लहर में डूब गया। ख़ामोशी।

"उसे निकलना चाहिए," मैं फ़िकरमंदी से बोला। मगर वह न निकला।

बीरबल लपककर किनारे पर पहुँचा और पुकारा, "मैं उसे देख सकता हूँ। वह ज़ख़मी लगता है।" वह पानी में खिसककर ओझल हो गया और थोड़ी देर के बाद नौजवान का बेहोश जिस्म पकड़े किनारे पर वापस लौट आया। हमने लड़के को किनारे पर लिटाकर जो कर सके किया। उसके सर पर बड़ा ज़ख़म था जहाँ वह पत्थर से टकरा गया था। थोड़ी देर के बाद उसकी आँखें खुल गईं, और उसने कमज़ोर आवाज़ में पूछा, "मैं कहाँ हूँ?"

बीरबल बोला, "शुक्र है तुम बच गए हो। अगर तुम सोना चाहो तो अपने ही घर में सोया करो। तालाब में गुज़ारा मुश्किल ही है। मेरे चचा रामन कहा करते थे, 'बीरबल, पहला उसूल : अपनी ही चारपाई पर

सोना। एक बार मैं शराब पीकर नशे में आया तो पूरी की पूरी रात नाली में बीत गई। यक़ीन मानो, मज़ा न आया, बिलकुल नहीं। चची का क़हर अलग'।"

लड़के के दोस्त दौड़कर आए तो हम उसे उनके हवाले करके आगे निकले।

"याद रखो," वसीम बौने ने कहा, "बादशाह के सिर्फ़ दो हुक्म हैं : बादशाह से और एक दूसरे से मुहब्बत रखना। यह काफ़ी हैं बल्कि यही तो सबसे मुश्किल हैं। अगर हम इन्हीं को पूरा करें तो बाक़ी तमाम अहकाम पूरे करेंगे। न हम झूट बोलेंगे, न चोरी करेंगे और न ही ज़िना करेंगे। सवाल यह है : हम इन दो हकमों को किस तरह पूरा कर सकते हैं?"

अब हम टेढ़ी-मेढ़ी गलियों में से घूमते-फिरते बीच के पहाड़ के दामन में आ पहुँचे।

शाही पहाड़

पहाड़ का दामन वीरानो-सुनसान था। न कोई इनसान न हैवान दिखाई दे रहा था। किसी ने भी वहाँ अपना डेरा नहीं लगाया था। लगता था कि लोग जान-बूझकर पहाड़ से कुछ दूर बसते हैं। लेकिन क़रीब ही बरगद का एक घना दरख़्त था जिसके साय में नाई का सामान तरतीब से रखा गया था। हज्जाम कुरसी भी पड़ी थी, जबकि पेड़ के पीछे एक छोटा कच्चा-सा हम्माम खड़ा किया गया था। हमें देखकर एक मोटा हट्टा-कट्टा-सा नाई बड़े जोश से आगे लपका। एक हाथ में क़ैंची पकड़े और दूसरे में ज़ोर से तौलिया लहराते हुए वह पुकारा, “हज़रात, आइए, तशरीफ़ लाइए!”

मैं बोला, “माफ़ करें, हमें ज़रूरत नहीं। हमें आगे पहाड़ पर चढ़ना है।”

“सच!?” नाई ख़ुश होकर चहचहाया। “बहुत ख़ूब, बहुत ख़ूब। आजकल कम ही लोग इस तरफ़ आते हैं। यक़ीन मानो, अकसर लोग अपना मज़हबी रंग दिखाने में ख़ुश रहते हैं। उन्हें और कोई फ़िकर नहीं।

असली चीज़ को छोड़ वह अपनी नक़ली चीज़ों से ख़ुश रहते हैं। और क्या आपने उनका चाल-चलन देखा? वह काफ़िरों से भी बदतर हैं। तौबा तौबा।" इतने जोश से बात करते करते नाई को पसीना आया। उसने एक बड़ा चमकीला रूमाल जेब से निकालकर अपनी पेशानी को पोंछ लिया। "आजकल कोई बादशाह के हुज़ूर आने की आरज़ू नहीं रखता। हर एक अपना अपना रास्ता निकालकर घूमता-फिरता है।"

बादशाह का ज़िक्र सुनते ही मेरा दिल उछल पड़ा। "क्या आप बादशाह के हुज़ूर पहुँचे हैं?" मैंने सरगरमी से पूछा।

"हाँ, हाँ। क्यों नहीं?" वह ला-परवाई से बोला। "क्या आपने नहीं देखा मेरा इश्तहार-तख़्ता?" सचमुच पेड़ के तने के साथ एक तख़्ता लगा था जिस पर लिखा था, "शाही हज्जाम।"

"क्या आप बादशाह के हज्जाम हैं?" मैंने हैरानी से सवाल किया।

"जी, जी। सबके सब पहाड़ पर चढ़ने से पहले मेरे पास आते हैं। सभी को ज़रूरत पड़ती है।"

अब वसीम बौने ने दख़ल दिया। "चलो, चलिए। यह बकवास कर रहा है। उसकी गपें मत मानना। यह झूट ही झूट है," उसने धीमी आवाज़ में कहा।

नाई की सुनी अनसुनी करके हम आगे बढ़ने को थे कि उसने फिर से हमें रोका। "ठहरो, साहबान! इतनी क्या जल्दी है? क्या आप इसी हालत में बादशाह के हुज़ूर जाना चाहेंगे? क्या आपने अपने आपको

देखा है?” उसने कहीं से एक बड़ा आईना लाकर मेरे सामने रखा। मैं चौंक पड़ा। मेरी हालत क़ाबिले-रहम थी। कपड़े कीचड़ से लतपत, बाल लंबे और बेतरतीब, साथ साथ कुछ दिनों की दाढ़ी।

बीरबल भी मुड़ मुड़कर अपने आपको आईने में देखने लगा। “बहुत अच्छा। यह कपड़े मुझे बहुत जचते हैं,” वह बोला। मैंने हैरानी से उसे देखा। वह तो मुझ जैसा मैला-कुचैला था।

मेरी परेशानी को भाँपकर नाई मुसकराया। “सोच तो लें। बादशाह के हुज़ूर जाना है तो इसी हालत में? मेरी सुनो और पहले नहाकर शेव कराओ, बाल बनवाओ। उतने में हम हुज़ूर के कपड़े धुलाकर सुखाएँगे। तब ही बादशाह सलामत आपको ज़रूर मंज़ूर करेंगे।”

नाई की बात ठीक लग रही थी। शायद अगर मैं साफ़-सुथरा बादशाह सलामत के हुज़ूर आऊँ तो वह मुझे क़बूल करें। मुझे झिजकते हुए देखकर बौना और कौअ एतराज़ करने लगे। वसीम बोला, “उसकी बात मत मानना। यह करने से कोई फ़ायदा नहीं।”

लेकिन मैं अड़ा रहा। “भाइयो, साफ़-सुथरा होने में क्या नुक़सान है?”

“बिलकुल,” बीरबल बोला। “सफ़ाई तो निस्फ़े-ईमान है।”

मैं कुरसी पर बैठ गया, जबकि कौअ और बौना बुड़बुड़ाते हुए कुछ दूर आराम करने गए। बीरबल हम्माम में गया। लगता था कि उसे मज़ा आ रहा है। पानी के छींटों के साथ साथ उसकी गुनगुनाती आवाज़ बुलंद

हुई। अचानक हम्माम की एक दीवार धड़ाम से गिर गई, और बीरबल की लंबी-दुबली टाँग नज़र आई। "ओ, माज़रत।" वह पुकारा।

नाई ने लपककर दीवार को दुबारा खड़ा किया। फिर कपड़ा गले से लगाकर मेरे बाल काटने लगा। मैंने पूछा, "यहाँ पहाड़ के दामन में आबादी नहीं है। यह क्यों?"

नाई ने क़ैंची को रोककर कहा, "क्या आपको नहीं पता? किसी को जुर्रत नहीं। सबको मालूम है कि बादशाह के क़रीब रहना बड़ा मुश्किल है। वह तो जाहो-जलाल का बादशाह है। वह इतना आला है, इतना अज़ीमो-बुलंद, इतना पाको-मुक़द्दस। मानो वह आग बरसनेवाली ज्वालामुखी है। कौन उसके क़रीब रह सकता है?" यह कहते हुए उसके चेहरे पर शदीद दहशत की झलक नज़र आई। उसने आहिस्ता अपनी बात जारी रखी, "एक बार एक खाते-पीते ख़ानदान ने वहाँ अपना आलीशान मकान बनाया। उस बंदे के दिमाग़ में फ़ुतूर था। उसे किसी से डर नहीं था, क्योंकि वह कारोबार की कामयाबी के बाइस बेहद फूल गया था। वह बोला कि मुझे कौन छेड़ेगा। लेकिन पता है क्या हुआ?" नाई की आवाज़ मज़ीद धीमी हो गई। "जिस दिन ख़ानदान मकान में शिफ़्ट हुआ ज़ोर की कड़क सुनाई दी और वह मकान ख़ानदान समेत राख हो गया।" नाई ने आह भरी, "हाँ, बादशाह के जलाल के सामने इनसान नेस्तो-नाबूद हो जाता है।"

यह बातें सुनकर मुझ पर सख़्त उदासी तारी हुई। "फिर जाने का कोई फ़ायदा नहीं," में बोला। "हम तो आगे जाकर राख हो जाएँगे।"

हम्माम की तरफ़ से बीरबल की गुनगुनाती हुई आवाज़ बुलंद हुई, "जलाल का बादशाह ... जलाल का बादशाह ..."

मेरी मायूसी भाँपकर नाई दुबारा चहचहाने लगा। "नहीं नहीं, आप तो फ़रक़ हैं। आप नेक-नीयत हैं, आप पाक-साफ़ होकर उससे मिलना चाहते हैं। शायद आप उसके हुज़ूर आने में कामयाब हो जाएँ।"

"यह तो कमाल है," मैंने झुँझलाकर कहा। "पहले आप कह रहे थे कि मैं ज़रूर बादशाह के हुज़ूर पहुँचूँगा, और अब यह नामुमकिन ही लग रहा है। अब साफ़ बताओ। क्या मैं चोटी तक पहुँच सकता हूँ? और हाँ, क्या आपने नहीं कहा कि आप ख़ुद बादशाह के हुज़ूर तक पहुँचे हैं?"

नाई को कुछ शर्म-सी आई। वह दबी ज़बान में बोला, "शायद मैं कुछ नमक-मिर्च लगाकर बात कर रहा था। बेशक मैं एक तरह से ज़रूर उनके हुज़ूर आया हूँ। देखो, एक दिन एक बड़ा रोबदार रईस मेरी दुकान पर आया। बोला कि बादशाह की तरफ़ से है। फिर पैसे देकर मुझे कहा कि हर एक को पहाड़ पर जाने के लिए तैयार करो। ध्यान दो कि हर एक साफ़-सुथरी हालत में आगे चले। क्या यह ग़लत है?"

"सीधी-सी बात यह है," मैं बोला। "क्या मुसाफ़िरों में से कोई बादशाह के हुज़ूर पहुँच गया है?"

अब नाई कुछ सँभलकर दुबारा मेरे बाल कतरने लगा। "देखो, बात इतनी सीधी-सी नहीं है। सब कुछ बादशाह सलामत के हाथ में है, और वह सब कुछ जानता है। फिर भी यह चोटी बहुत ही ऊँची है। वह हमसे दूर ही रहता है। उसका जलाल तो इनसान को भस्म करता है। वह भड़कती आग है। मुसाफ़िरों की कोशिश यह होती है कि जितना ही क़रीब हो सके उसके क़रीब आएँ।"

मैं बोला, "लेकिन मैंने उसके शहज़ादे का महल देखा है, जिसमें मुसाफ़िरों की ज़ियाफ़त हो रही थी। शहज़ादा भी उसमें शरीक थे।"

"ज़ियाफ़त!!? शहज़ादा!? यह कैसी बकवास है?" नाई बिफरकर चीख़ा। उसकी आँखें नाराज़ी के मारे चमक उठीं। "एक बात यक़ीनी है और वह यह कि न उसका कोई शहज़ादा है न कोई ज़ियाफ़त। वह तो इन चीज़ों से बुलंदो-बरतर है। एक बार ऊपर नज़र डालो।"

उसने मेरी कुरसी को यों घुमाया कि मैं पहाड़ की चोटी देख सकूँ। "सुना आपने यह कड़क की आवाज़ें? देखा आपने बादलों की चमक-दमक और गरज? महसूस किया आपने लरज़ती ज़मीन?"

अब तक मैंने यह कुछ महसूस नहीं किया था, लेकिन सचमुच ज़मीन हलकी हलकी हिल रही थी। और चोटी सचमुच ख़ौफ़नाक दिखाई दे रही थी।

"नहीं नहीं। आपने ख़ाब देखा है। ऐसी कोई बात नहीं। साफ़ बताऊँ तो बादशाह से डरना बल्कि दहशत खाना है।"

“तो फिर आगे जाने का क्या फ़ायदा?” मैंने मायूसी से कहा।

नाई जल्दी से बोला, “ऐसी कोई बात नहीं। हर इनसान का फ़र्ज़ है कि वह पूरी जिद्दो-जहद करे। बेशक वह बादशाह के हुज़ूर तो नहीं आ सकता, लेकिन वह देखो।” उसने हाथ से पहाड़ की तरफ़ इशारा किया। पहले मुझे सिर्फ़ धुँधला-सा कुछ नज़र आया। “यह लो,” नाई ने मेरे हाथ में दूरबीन थमा दी। उसकी मदद से अब मैंने कुछ ऊपर ढलान पर एक शादाब सब्ज़ाज़ार देखा जिसमें फलदार दरख़्त हवा में झूल रहे और ताज़े ताज़े चश्मे उबल रहे थे। रंगारंग मोर पंख फैलाकर नाच रहे थे। ग़रज़ यह जगह निहायत प्यारी लग रही थी। लेकिन एक बात तो कुछ खटकती थी।

“उसमें लोग क्यों नहीं दिखते?” मैंने पूछा।

नाई शेविंग-क्रीम छोटे बाउल में घुमा घुमाकर मेरे चेहरे पर लगाने में जुट गया था। तब बोला, “यह मुर्ग़ज़ार तैयार तो किया गया है। बस थोड़ी देर बाद मुक़र्ररा वक़्त पर लायक़ मुसाफ़िर उसमें जा बसेंगे। वहाँ तो हर सहूलत होगी, हर आसाइश। यही आपकी मनज़िले-मक़सूद है, ख़ुद बादशाह के हुज़ूर पहुँचना तो मुमकिन ही नहीं।”

नाई शेव करता गया और मैं सब्ज़ाज़ार को देखता और सोचता रहा। जगह तो बेशक ख़ूबसूरत और अच्छी लग रही थी। तो भी अंदर ही अंदर मेरा दुख बढ़ता गया। कोई क़ुरबत नहीं? कोई शहज़ादा नहीं? इन

चीज़ों के बग़ैर सब कुछ ख़ाली-सा लग रहा था। मैं बोला, “तो उसमें कौन दाख़िल हो सकता है?”

नाई कुछ देर ख़यालों में मगन-सा रहा, फिर बोला, “देखो, इसमें भी बादशाह का एक राज़ है। कहते हैं कि लोग उसी की मरज़ी से दाख़िल होते हैं। बल्कि कभी यह भी हो सकता है कि ज़्यादा रास्तबाज़ आदमी को रद किया जाए जबकि डाकू और दग़ाबाज़ को उसमें रहने की जगह मिले।”

मैंने झुँझलाकर कहा, “यह किस तरह हो सकता है? अगर बादशाह आदिल और रास्तबाज़ है तो यह किस तरह उसकी मरज़ी हो सकती है? अगर यह बाग़ चोरों, ज़िनाकारों, दग़ाबाज़ों और क़ातिलों से भरा पड़ा हो तो उसमें दाख़िल होने का क्या फ़ायदा है? और वैसे, मुझे किस तरह यक़ीन है कि वहाँ तक पहुँचूँगा?”

नाई ने सर्द आह भरी। “बादशाह के तरीक़े और इरादे हमारी समझ से बाहर हैं। वह जो गरजते बादलों में रहता है सब कुछ कंट्रोल करता है। उसकी मरज़ी को तसलीम करना ही है और बस।”

यह सुनकर मेरी परेशानी मज़ीद बढ़ गई। “मतलब है कि न मैं बादशाह के हुज़ूर आ सकता हूँ, न ही कोई यक़ीन है कि उस बाग़ तक पहुँचूँगा।”

नाई ने हामी भरकर सर हिलाया। “लेकिन फ़िकर मत करना। उम्मीद है कि आप पहुँचेंगे ... इंशाल्लाह। पत्थर की तख़्तियाँ तो आपके पास होंगी।”

“पत्थर की तख़्तियाँ? यह क्या हैं?”

“अच्छा, आपको नहीं मालूम? पत्थर की तख़्तियों के बग़ैर बादशाह सलामत के बाग़ में पहुँचना सख़्त मना है।”

“लेकिन यह तख़्तियाँ कहाँ से मिलती हैं?” मैंने घबराकर पूछा।

“अगर आपके पास न हों तो कोई बात नहीं। मेरे पास एक फ़ालतू सेट है। बाद में आपको दूँगा।”

यों गपें मारते हुए उसने मेरे बाल काट काटकर और दाढ़ी को मूँड मूँडकर मुझे फ़ारिग़ कर दिया।

उतने में बीरबल हम्माम से निकल आया था, और मैं हम्माम में जाकर नहाया। जब साफ़-सुथरा निकला तो कपड़े भी सूख गए थे। बीरबल नाई की पुरानी शलवार पहने शेव करवाने से फ़ारिग़ हो रहा था। वह कुरसी पर बैठे दूरबीन से पहाड़ को देख रहा था।

“वह बाग़ तो कुछ भी नहीं है!” उसने क़रार दिया।

“उसके पीछे बहुत कुछ नज़र नहीं आता,” नाई ने जवाब दिया। तब मुझे देखकर बोला, “यह लो।” उसने मेरे हाथ में पुश्ती थैला थमा दिया।

“उफ़! यह तो हद से ज़्यादा भारी है,” मैंने कहा और उसे मुश्किल से उठाकर पुश्त से बाँधा।

“बेशक। लेकिन इसके बग़ैर गुज़ारा मुश्किल ही है।” नाई ने जवाब दिया।

मैंने सवाल किया, “इन पर क्या लिखा है?”

“यह तो बादशाह का क़ानून है।” उसने एक तख़्ती निकालकर ऊँची आवाज़ में पढ़ा, “चोरी न करना, ज़िना न करना, झूटी गवाही न देना, माँ-बाप की इज़्ज़त करना।” फिर उसे वापस थैले में डालकर बोला, “इस तरह की बहुत-सी बातें दर्ज हैं। बीच में वक़्त निकालकर इसको पढ़ना और याद करना है। ज़ाहिर है कि आप सिर्फ़ क़ानून की बुनियाद पर ही बाग़ में दाख़िल हो सकते हैं। लेकिन फ़िकर मत करना। अब आप साफ़-सुथरे हैं, और आपके पास क़ानून की तख़्तियाँ भी हैं। क्या यह देखकर बादशाह सलामत आपको मंज़ूर नहीं करेंगे? ... इंशाल्लाह।”

नाई ने बीरबल को भी पुश्ती थैला पेश किया, लेकिन उसने चट से इनकार किया। “शुक्रिया, मुझे नहीं चाहिए। मुझे पहले से बुरा तजरिबा हुआ है। जो कनस्तर मैं रेगिस्तान में उठाए फिरा वह काफ़ी था।”

नाई ने बहुत ज़ोर दिया, लेकिन वह अड़ा रहा।

मैंने पूछा, “तो जिनको रद किए गए हैं उनका क्या अंजाम होगा?”

नाई झिजका फिर दबी आवाज़ में बोला, “वह मरदूद और लानती हैं। जिस जगह उन्हें धकेलकर फेंका जाएगा उसके बारे में आप जानना नहीं चाहेंगे।”

एक काला बादल सूरज पर से गुज़रा। परिंदों की चहचहाहट भी मधम-सी हो गई। मुझ पर कपकपी तारी हुई। फिर अपने आप पर क़ाबू पाकर बोला, "चलो, फिर चलते हैं।" मैं पैसे नाई के हाथ में थमाकर अपने हमसफ़रों के साथ रवाना हुआ। वसीम और अनवर ख़ामोश रहे, लेकिन मुझे मालूम था कि वह ख़ुश नहीं हैं।

अब चलना मुश्किल हो गया था, क्योंकि पत्थर की भारी तख़्तियाँ मुझे दबा रही थीं। रास्ता चढ़ने लगा। मेरी रफ़्तार आहिस्ता हुई, और मैं रुक रुककर चढ़ने लगा।

"कम से कम इन तख़्तियों को तो छोड़ दो," वसीम ने मुझे मनवाने की कोशिश की।

मैंने एतराज़ किया, "हरगिज़ नहीं। यह बहुत ज़रूरी हैं। क्या आपने नाई की बात नहीं सुनी?"

कौअ और बौना चुप रहे।

मेरी साँस ख़ूब फूलने लगी। शुरू में हलकी हलकी चढ़ाई थी, लेकिन ज्यों-ज्यों हम आगे बढ़े चढ़ना निहायत कठिन होती गई। मैंने रश्क भरी नज़र बीरबल पर डाली जो छोटे बच्चे की तरह उछलते-कूदते कभी इधर कोई पत्थर उठाकर जाँचता, कभी उधर दरख़्त के किसी फल को चुनकर देखता। साथ साथ गपें हाँकता रहता।

सूरज जल्द ही ढलनेवाला था, और अब तक पहाड़ की चोटी उतनी ही ऊँची और दूर लग रही थी। रास्ता भी सिर्फ़ बराए-नाम निकला बल्कि

अब झाड़ियों में से गुज़रना पड़ा। काँटेदार पौदे बदन को चुभोते रहे, और चेहरे, बाज़ुओं और टाँगों से ख़ून रिसने लगा।

"काँव, आगे धुआँ है," अनवर बोला।

बुज़ुर्ग की हिदायत

और सच, कुछ देर के बाद हम एक पेड़ के पास रुके जिसके सामने एक बुज़ुर्ग आलती-पालती मारकर बैठा था। उसकी लंबी सफ़ेद दाढ़ी सूरज की आख़िरी किरनों में चमक रही थी। आग पर सादा-सा खाना पक रहा था। हमें देखकर वह मुसकराया। “ख़ुशआमदीद, ख़ुशआमदीद। कहाँ जा रहे हो?”

“हम पहाड़ के बाग़ में जाना चाहते हैं,” बीरबल चहचहाया।

“अच्छा? कैसी बात!” वह खिलकर हँस पड़ा।

“क्यों? क्या यह मज़ाक़वाली कोई बात है?” मैं बिफरकर बोला।

बुज़ुर्ग ने जवाब न दिया बल्कि बोला, “थोड़ा आगे जाकर तुमको पता चलेगी बात। वापसी पर मेरे पास रुकना।”

उसकी बात हमारी समझ में न आई। हमने सफ़र जारी रखा। अब तख़्तियों का बोझ उठाना बरदाश्त से बाहर हो रहा था। फिर भी मेरे अंदर इतनी शदीद आरज़ू थी कि मैं लड़खड़ाते हुए आगे बढ़ा। मेरे साफ़-सुथरे कपड़े पसीने से शराबोर और काँटों से घिसते-फटते जा रहे थे।

मेरे सँवरे बाल बिखरकर गर्द से मैले-कुचैले हो गए थे। तिनके और पत्ते उनमें उलझ गए थे।

कुछ आगे जाकर भड़कती आग दूर से नज़र आई। मेरे क़दम कुछ तेज़ हुए, और हम जल्दी जल्दी एक अजीब-से नज़ारे के पास पहुँचे। हमारे रास्ते में एक वसी और गहरा गढ़ा था, जिसमें गरम लावा उबल रहा था। जगह जगह भड़कते लावा के फ़व्वारे फूट निकल रहे थे। पार करने का रास्ता था ही नहीं। यह देखकर हम उसके किनारे किनारे टहलने लगे। लेकिन बेफ़ायदा। हाँ, एक जगह एक पुल था, लेकिन वह तार जैसा चौड़ा था। फिर भी मैंने उस पर पाँव रखा बल्कि दो-एक क़दम उस पर चलने की कोशिश भी की। लेकिन तार ज़ोर से हिलने लगा, और मैं डरकर फुरती से वापस किनारे पर आ गया। "इस पर से गुज़रने की कोशिश करूँगा तो यक़ीनन गढ़े में गिर जाऊँगा," मैंने आह भरकर कहा।

बीरबल लावा को देखकर दूर ही रहा। अनवर और वसीम चुप रहे, लेकिन उनके चेहरों के अंदाज़ से पता चला कि उन्हें यह कुछ पहले से मालूम था।

आख़िर में हम मायूस होकर मुड़े और दुबारा बुज़ुर्ग के पास पहुँचे। खाना तैयार हो चुका था, और उसने हमें खाने की दावत दी। हम ख़ुशी से यह क़बूल करके बैठ गए। जंगल की जड़ी-बूटियों से बना यह खाना सादा और फीका था, लेकिन मरता क्या न करता।

खाना खाते वक़्त मेरी नज़र बार बार बुज़ुर्ग पर पड़ी। आख़िर में बात मेरे मुँह से फूट निकली, "उस्ताद, आप यहाँ क्या कर रहे हैं? दूसरे सब मायूस होकर वापस चले गए हैं लेकिन आप यहाँ टिककर रह गए हैं।"

बुज़ुर्ग कुछ देर ख़यालों में मगन रहा, फिर बात करने लगा, "जब मैं जवान था तो मैं भी तुम लोगों की तरह बादशाह की तलाश में घर से निकला। मैं भी यहाँ तक पहुँचकर मायूस हो गया।" उसने सर्द आह भरी, और यादों में ग़रक़ ख़ामोश हो गया। फिर बोला, "न बादशाह के हुज़ूर पहुँचना मुमकिन लगता था और न ही उसके बाग़ के पास। और यह भारी तख़्तियाँ—कौन इनको उठाकर साथ ले जा सकता है? क्या तुमने देखा वह गढ़े का पुल? उसे पार करना पहले से मुश्किल है तो तख़्तियों के साथ नामुमकिन ही है। नहीं बेटा, यह तरीक़ा सरासर ग़लत है, यह कभी तुम्हें आगे नहीं पहुँचा सकता। दूसरे, इसका फ़ायदा क्या है? क्या इससे तुम शाही क़ानून पर चलोगे? हरगिज़ नहीं! क्या तुमने शहर में लोगों की हालत नहीं देखी? और जो यह तख़्तियाँ अपने पास रखते वह भी उनकी हिदायात पर नहीं चलते। क्यों? इसका सीधा-सा जवाब है। यह तख़्तियाँ उनके दिलों में नक़्श नहीं हुईं। वह बैरूनी और दिल से अलग रहे हैं।"

मैं बोला, "उस्ताद, आप ठीक कह रहे हैं। यह तख़्तियाँ बहुत भारी हैं, और फिर भी दिल पर कोई असर नहीं। लेकिन इसका क्या हल है?"

बुज़ुर्ग ने जवाब दिया, “तुम ख़ुद उनकी तिलावत करो। न सिर्फ़ यह बल्कि उन पर ग़ौरो-ख़ौज़ करो। उनको दोहराते हुए बादशाह की पुर-जलाल और अज़ीम ज़ात में मगन हो जाओ।”

“हाँ, हाँ, यह ठीक ही है,” बीरबल ने उछलकर कहा। उसके मायूस चेहरे में जोश आ गया।

मेरा हौसला कुछ बढ़ने लगा। “लेकिन इसका क्या तरीक़ा अपनाऊँ? मैं किस तरह इसमें कामयाब हो सकता हूँ?”

बुज़ुर्ग नरमी से मुसकराया। “पहला उसूल : दुनिया को तर्क करना। बहुत ज़रूरी है कि दुनिया के शोर-शराबे से दूर रहना ताकि अंदरूनी बातों तक पहुँच सको। यह इसमें तुम्हारी मदद करेगी।” उसने मेरे हाथ में एक किताब थमा दी। “इसको पढ़ो। इसमें सब कुछ तफ़सील से बयान किया गया है। यह हमेशा तुम्हारे साथ हो तो बेहतर रहेगा।”

मेरी आँखों में आँसू भर आए—ग़म के नहीं बल्कि ख़ुशी और शुक्रगुज़ारी के। कुछ लमहे पहले दुनिया अंधेरी और दुखी नज़र आ रही थी, लेकिन अब इस अंधेरे में उम्मीद की रौशन किरन पड़ गई। एक नई दुनिया मेरी आँखों के सामने खुल गई। “बहुत, बहुत शुक्रिया। क्या आप मेरी हिदायत करते रहेंगे?”

बुज़ुर्ग नरमी से बोला, “बेटा, मैं ख़ुद मुतलाशी हूँ। मैं ख़ुद भी गढ़े को पार करने की कोशिश में लगा हूँ। मैंने बहुत मेहनत-मशक़्क़त तो की है, बहुत फेरे लगाए हैं, सालों से ज़िक्र करता आया हूँ। मगर बेफ़ायदा।

और यह क्यों? मैं इस नतीजे तक पहुँच गया हूँ कि मुझे एक मुरशिद की अशद ज़रूरत है।

"मुरशिद?" बीरबल ने अचंभे में आकर पूछा। "मतलब है कोई राहनुमा?"

"हाँ, एक राहनुमा, एक हादी जिसके ज़रीए हम बादशाह के हुज़ूर पहुँचें। अब मैं उसी की तलाश में हूँ। मेरा मशवरा है कि तुम भी यही करो।"

बीरबल बोला, "ठीक, ठीक। मैं रूहानी मेहनत-मशक़्क़त करूँ। बिलकुल दुरुस्त। फिर भी मुरशिद के बग़ैर नजात नामुमकिन। कैसी बात है।"

बुज़ुर्ग की इन बातों ने मेरी सारी उम्मीदों पर पानी फेर दिया। फिर भी आगे का रास्ता कुछ न कुछ साफ़ था। खाने के बाद बुज़ुर्ग ने हमें ज़िक्र और विर्द के बारे में बहुत कुछ सिखाया। रात गए हम दोनों सो गए। बौना और कौअ पहले से सोए हुए थे।

सुबह-सवेरे हम अलविदा करके रवाना हुए। अब कौन-सा रास्ता इख़्तियार करना था? दिल नहीं करता था कि दुबारा उतरकर आबादी में जाए। मैं किसी पुरसुकून जगह में अपना नया ख़ज़ाना पढ़ना और ज़िक्र के तरीक़े अमल में लाना चाहता था। चुनाँचे हम दुबारा गढ़े के किनारे किनारे चलने लगे। कुछ फ़ासले पर एक छोटा-सा उबलता चश्मा और दो-चार पेड़ नज़र आए। मैं एक के साय में बैठकर ज़िक्रे-बादशाह में

मगन हो गया। मैं ख़यालों में खो गया। मेरी अंदरूनी आँखों के सामने बादशाह का दहशतनाक जलाल ज़ोर से उभर आया।

बीरबल भी साथवाले दरख़्त के साय में आलती-पालती मारकर बैठ गया। वह त्योरी चढ़ाकर ज़िक्र में ग़रक़ हुआ। उसका गंजा सर चाँद की तरह उसके लंबी-दुबली टाँगों के ऊपर चमक-दमक रहा था।

मेरे साथी हमसे मायूस हो गए थे। वसीम बौना आग लगाने की लकड़ी चुनने के लिए इर्दगिर्द के झुंडों में फिरने लगा जबकि अनवर कौअ पेड़ में उड़कर ऊँघने लगा।

दो-एक घंटे के बाद बीरबल उकता गया। “यह मेरे बस की बात नहीं,” वह उठा और इर्दगिर्द टहलने लगा।

मैं किताब को खोलकर पढ़ने लगा। उसमें बादशाह की सिफ़ात की लंबी-सी फ़हरिस्त दर्ज थी। मैं हर एक सिफ़त को दोहराते हुए ख़यालों में डूब गया।

तब बीरबल की चहकती आवाज़ ने ख़ामोशी को तोड़ दिया। बुज़ुर्ग बीरबल को साथ लेकर मेरे पास पहुँचा।

मैं एहतराम से उछल पड़ा। “उस्ताद, आप क्यों तशरीफ़ लाए हैं?”

“यह लड़का मेरे पास आकर ख़ामोश नहीं रह सकता। यह गपें हाँकते हुए मेरी जान नहीं छोड़ता।”

“मैं उस्ताद को अपने चचा रामन के बारे में बता रहा था,” बीरबल ने विज़ाहत की।

“न मैं रामन न जामन के बारे में सुनना चाहता हूँ,” बुज़ुर्ग बुड़बुड़ाया। “मेरा वक़्त क़ीमती है। मेहरबानी करके मुझे इस बला से दूर रखो!” वह झींकते हुए वापस चला गया।

तब बीरबल वसीम के साथ मिलकर लकड़ी चुनने लगा।

मैं दुबारा सिफ़ात का ज़िक्र करने में जुट गया। हर एक सिफ़त मेरी अंदरूनी आँख से गुज़रती गई, और मैं उस पर ध्यान दे देकर उसे दोहराता रहा। लेकिन न जाने क्यों, मुझे सुकून नहीं मिल रहा था। इसके बरअक्स जितना ही मैं यह सिफ़ात जपता गया उतना ही मेरी घबराहट और बेचैनी बढ़ती गई। रफ़्ता रफ़्ता सख़्त दहशत और ख़ौफ़ मुझ पर तारी हुआ। और जब भी मैं इनसे बचने की कोशिश करता तो गढ़े की तरफ़ से अजीबो-ग़रीब घूँ-घूँ और सी-सी मुझे बादशाह के जलाल की याद दिलाती। ज़मीन का ठरठराना इसमें इज़ाफ़ा करता। मुझे चक्कर आने लगे। यों लगा जैसे कोई मेरे गले को घोंट रहा हो। वहशी एहसासात मेरे दिल को झँझोड़ने लगे। तब एक धीमी आवाज़ मेरे अंदर उभरकर मुझे मलामत करने लगी, “तू निकम्मा है, तू कभी बादशाह के क़रीब नहीं पहुँचेगा। देख तो सही अपनी बिगड़ी हालत।” और यह आवाज़ बढ़ती बढ़ती मेरे अंदर ज़ोर से गूँजने लगी।

मैं उछलकर ज़ोर से चीख़ा और अंधा-धुंद भागने लगा। एक ही ख़याल सर पर सवार था, यह कि किसी न किसी तरह इन हौलनाक आवाज़ों और जज़बात से सुकून पाऊँ। वसीम बौना और अनवर कौए

की पुकारें मेरे पीछे बुलंद हुईं लेकिन मैंने परवा न की। मैं धुँधलेपन में पहाड़ से उतरते उतरते नाई की दुकान से गुज़रा। शहर की टिमटिमाती रौशनियाँ मेरे सामने नज़र आईं। मैं दीवाने की तरह झपटकर उसकी गलियों में घुस गया। तब कुछ सँभलकर चलने लगा। चलते चलते मैं एक चौक में बैठ गया। अब तक बाज़ार में गहमा-गहमी थी। लोग अपना दिल बहलाने और दुकानों में सौदा ख़रीदने के लिए घूम रहे थे। उनका इतमीनान देखकर मैंने सोचा, "अब से पहाड़ और बादशाह की तलाश से दूर रहूँगा। या तो सब रास्ते आख़िर में बादशाह तक पहुँचते हैं या यह सारी जिद्दो-जहद बेसूद है। बेहतर है कि कुछ दूर रहकर टिक जाऊँ। नेक काम करूँ और यह बातें भूल जाऊँ। जो भी हो सो हो। तमाम दिन दुख और रंजीदगी से भरे रहते हैं। सब कुछ बातिल ही है। इनसान के लिए सबसे अच्छी बात यह है कि खाए-पिए और अपनी मेहनत-मशक़्क़त के फल से लुत्फ़ उठाए।" तब मैं थककर सो गया।

एक अनोखा ख़ाब

सोते सोते मेरे मुज़तरिब ज़हन में अजीबो-ग़रीब तस्वीरें उभरने लगीं। चचा की डरावनी मौत। अम्मी की सख़्त बीमारी। स्कूल में दूसरे बच्चों की ठट्ठाबाज़ी। उस्ताद की मार-पीट। जवानी का उतार-चढ़ाओ। अपनी सख़्त बीमारी। यह कुछ ख़ाब में देखते देखते मेरी परेशानी बढ़ती गई। कभी मैं किसी ऊँचे पहाड़ पर चढ़ते चढ़ते पहुँचनेवाला होता कि अचानक ही फिसलते फिसलते दामन में गिर पड़ता। कभी क्लास रूम में कोई उलझा हुआ रियाज़ी मसला हल करते करते थक जाता। कभी दरिया में तैरते तैरते दूसरे किनारे तक पहुँचने की कोशिश करता, लेकिन बेफ़ायदा।

अचानक ख़ाब का रुख़ बदल गया।

एक अज़ीम हस्ती झील के किनारे किनारे चल रही है। कुछ जाल बिछे हुए नज़र आते हैं। दो-चार मर्द उनकी मरम्मत कर रहे हैं। तब यह हस्ती उनको बुलाती है, और वह फ़ौरन उनके पीछे हो लेते हैं।

फिर वही हस्ती। हज़ारों मर्दों, औरतों और बच्चों से घिरी हुई। सब बेचैनी से उनकी बातें सुन रहे हैं। अजीब अजीब क़िस्म के लोग उनके हुज़ूर लाए जा रहे हैं। लंगड़े जो क़रीब आकर उछल पड़ते और चलते-कूदते चले जाते। मरीज़ जो एकदम शफ़ा पाकर अपनी चटाइयों को उठाकर ले जाते। अंधे जो टटोल टटोलकर पास आकर बीना हो जाते हैं।

खाने-पीने की जो थोड़ी बहुत चीज़ें लोग अपने साथ लाए हैं वह ख़त्म हो गई हैं। लेकिन कोई भी जाने का क़दम नहीं उठाता। बाल-बच्चे निढाल हो रहे हैं, लेकिन कोई भी वक़्त का लिहाज़ नहीं करता। तमाम निगाहें उस हस्ती पर लगी हुई हैं। भीड़ ने तीन दिन से उन्हें यों घेरे रखा है। उनमें क्या जादू है?

तब वह कहीं से दो-चार रोटियाँ और मछलियाँ लेकर उन्हें टुकड़े टुकड़े करने लगते हैं। लेकिन यह क्या माजरा है? यह रोटियाँ और मछलियाँ कम नहीं हो रहीं। टुकड़ों का ढेर हो गया है, और मज़ीद टुकड़े बनते जा रहे हैं। तब उनके साथी यह टुकड़े टोकरों में डालकर बाँटने लगते। पहला टोकरा, दूसरा टोकरा, तीसरा टोकरा, हाँ बहुत-सारे टोकरे भर जाते। सबके सब पेट भरकर खाना खाते हैं।

अब वह अपने क़रीबी साथियों को एक कश्ती पर बिठाकर जाने का इशारा देते हैं। ख़ुद वह पीछे रहकर अकेले एक पहाड़ पर चढ़ जाते हैं। वहाँ वह दुआ में लग जाते हैं। लेकिन ऐसी गहरी और पुर-ख़ुलूस दुआ

मैंने कभी नहीं सुनी। अब सूरज डूब गया है, और अंधेरे में वह झील के किनारे पर लौट आते हैं। उनके साथी अब खेते खेते झील के बीचों-बीच पहुँच गए हैं। लेकिन वह सख़्त डरे हुए हैं। तूफ़ानी हवा चल रही है, और कश्ती पहाड़ों जैसी लहरों से टकराते टकराते डूबने के ख़तरे में है।

अब यह हस्ती पानी पर क़दम रखकर उस पर चल पड़ती है। यों ही जैसा कि ज़मीन पर। वह आगे बढ़ते हुए कश्ती के क़रीब आती। कश्ती के सवारी उनको देखकर डर के मारे चीख़ उठते। वह समझते हैं कि कोई भूत-प्रेत उन पर चढ़ आया है। लेकिन वह आवाज़ देकर उन्हें तसल्ली देते हैं। तब एक हट्टा-कट्टा साथी दिलेरी से कश्ती पर से उतरकर उनकी तरफ़ चलने लगता है। लेकिन अचानक वह घबरा जाता, फिर चीख़ते-चिल्लाते पानी में धँसने लगता है।

उसी लमहे यह हस्ती डूबनेवाले का हाथ पकड़कर उसे वापस कश्ती पर ले जाती है। अचानक वह मेरी तरफ़ देखकर हाथ से इशारा करती है। मैं सख़्त घबरा जाता हूँ। वही मुहब्बत भरी हस्ती है जो मैंने पहले ख़ाब में खंबे पर लटकी हुई देखी थी। वही शहज़ादा जिसे मैंने महल में देखा था। “वह मुझे बुला रहे हैं!” यह सोचकर मैं ख़ाब में उनकी तरफ़ चल देता हूँ। लेकिन अफ़सोस, जितना मैं आगे बढ़ने की कोशिश करता उतना ही वह मुझसे दूर होते जाते हैं। आहिस्ता आहिस्ता वह ओझल हो जाते हैं।

ख़ाब का रुख़ दुबारा बदल गया।

अब मैं चील की तरह हवाओं में मँडलाते हुए एक ऊँचे पहाड़ की चोटी पर झपट रहा हूँ। क़रीब पहुँचकर वही हस्ती दिखती है जो मैंने पहले देखी है। उनके तीन साथी हैं। एकदम उनकी शक्लो-सूरत बदलने लगती है। बदलती बदलती वह सूरज की तरह चमकने लगती है। अचानक दो और अज़ीम हस्तियाँ ज़ाहिर हो जाती हैं जो उनसे बातें करने लगती हैं। वह भी चमकते-दमकते हैं।

तब एक बादल चोटी पर छा जाता और एक पुर-वक़ार आवाज़ फ़रमाती है, “यह मेरा प्यारा फ़रज़ंद है, जिससे मैं ख़ुश हूँ। इसकी सुनो।”

मैं उस हस्ती के क़रीब आना चाहता हूँ, लेकिन मेरे पट्ठे काम नहीं कर रहे। मैं ज़ोर से पुकारने लगता, मिन्नत करके अपने बाज़ू उनकी तरफ़ फैलाता हूँ। लेकिन वह दुबारा ग़ायब होने लगते हैं, और मैं अकेला ही रह जाता हूँ। मैं अंधेरे में डूबता जाता, डूबता जाता हूँ।

चोटी पर

“मंज़ूर, मंज़ूर!” कोई मुझे झँझोड़ रहा था। मैं अब तक गहरी नींद की लपेट में पड़ा था। फिर मेरी आँखें धीरे धीरे खुल गईं। चौक वीरानो-सुनसान था। कौन मुझे जगाने की कोशिश कर रहा था? मैं यह आवाज़ कहाँ से जानता था?

“तारिक़! आप!??”

“हाँ, मंज़ूर। मैं तारिक़ ही हूँ। आपको यक़ीन तो नहीं आ रहा।” तारिक़ का फ़िकरमंद चेहरा मेरे ऊपर झुका हुआ था।

“सो आप रेगिस्तान में न मरे? आप किस तरह बच गए?”

तारिक़ मेरे पास बैठकर नरमी से कहने लगा, “मुझे ख़ूब मालूम है कि आप क्या सोच रहे हैं। आप लोगों ने मेरी जान बचाई थी, और फिर भी मैं कनस्तर लेकर भाग गया था। यह तो बड़ी अहमक़ और ख़ुदग़रज़ हरकत थी। उस वक़्त मैंने आपकी मुहब्बत को पाँव तले रौंदा। इसके लिए मैं दिल से आपसे माफ़ी चाहता हूँ। हाँ, इसी लिए मुझे आपके पास भेजा गया है।”

“भेजा गया? किसने आपको भेज दिया?”

“मेरे आक़ा, मेरे मुरशिद ने मुझे भेजा।”

“मुरशिद? तारिक़, होश में आओ! कोई मुरशिद नहीं। कोई शहज़ादा नहीं, हाँ बादशाह का कोई भी रास्ता नहीं। मुझे मालूम है। मैंने हर तरीक़ा, हर रास्ता आज़माया है। मेरी तमाम उम्मीदों पर पानी फेर दिया गया है।”

तारिक़ नरमी से मुसकराया और बोला, “मैं आपके जज़बात को जानता हूँ। मैं भी ऐसा ही सोचता था। मुझे भी पक्का यक़ीन नहीं आ रहा था कि बादशाह और शाहज़ादा क्या चीज़ है। इसी लिए मैं झिजकता रहा, हर बात पर शक करता रहा। इसी लिए मैं बार बार सिराते-मुस्तक़ीम से दूर हो गया, कभी इधर कभी उधर भटकता फिरा। लेकिन पता है, आख़िर में उन्होंने ख़ुद अपनी राह और अपने आपको मुझ पर ज़ाहिर किया।”

“कौन? किसने ख़ुद को ज़ाहिर किया?”

मेरी सुनी अनसुनी करके तारिक़ बोला, “उन्हीं ने मुझे रात के वक़्त उस रेगिस्तान से निकाला। वही मेरी राहनुमाई करके अपने साथ ले गए।”

“तो बताओ तो सही, आप किसकी बात कर रहे हैं?”

“सिर्फ़ एक ही यह कुछ कर सकता है। मेरे मुरशिद।”

“सच?! तो वह कहाँ है? वह मैं भी ढूँड रहा हूँ लेकिन बेफ़ायदा।”

तारिक़ बोला, “इसी मक़सद से मुझे आपके पास भेज दिया गया है। मुरशिद के पास लाने के लिए। आओ मेरे साथ।” तारिक़ ने मेरे हाथ को पकड़कर खींचने की कोशिश की।

“नहीं नहीं, यह सब कुछ बकवास है। मैं आपकी इस चाल में नहीं आऊँगा। आप भी मेरे कान में कुछ फुसफुसाकर मुझे उभारेंगे और बाद में छोड़ेंगे। छोड़ दो मुझे। क्या पता है कि बादशाह या शाहज़ादा है या नहीं। और अगर है तो उन तक रास्ता नहीं है। क्या आपने वह पहाड़ नहीं देखा है? क्या मालूम कि उस पर है क्या।”

“मंज़ूर, ऐसी बातें मत करना। मुझ पर भरोसा करना। और अगर नहीं तो उन पर जिन्होंने मुझे भेजा है। अब आओ। मुरशिद आपको बुला रहे हैं।” वह कुछ क़दम चल दिया फिर दुबारा रुक गया। “अब तक वक़्त है।”

“आप तो पहाड़ की तरफ़ जा रहे हैं!” मैंने झुँझलाकर कहा। “मैंने वह सारा रास्ता आज़मा लिया है। वह बकवास है। उस तरफ़ सिर्फ़ आग और क़हर है। हाँ, बादशाह अगर हो मुझसे नफ़रत करता होगा। मुझे छोड़ दो।”

तारिक़ ठंडी आह भरकर मेरे पास बैठ गया। “मंज़ूर, लाज़िम है कि आप मेरी बात पर यक़ीन करें। अगर आपने मेरे आक़ा को एक बार देखा होता तो ऐसी बातें न करते। यक़ीन करो जब मैं रेगिस्तान में था तो मेरा दिल भी इसी तरह नफ़रत से भरा हुआ था। मैं दुनिया और बादशाह

को कोसता रहा। लेकिन जब वह आए—मैं क्या बताऊँ। उनको कोई बयान नहीं कर सकता। मेरे मुरशिद तो लासानी हैं। उन जैसा कोई नहीं है। अब आओ।"

न जाने क्यों, जब तारिक़ ने मुरशिद का ज़िक्र किया तो मेरा दिल उछल पड़ा। गो मेरी मायूसी ख़त्म न हुई फिर भी दिल में उम्मीद का छोटा-सा बीज उगने लगा।

"अब जल्दी करो! वह इंतज़ार कर रहे हैं।" तारिक़ ने बेचैनी से कहा।

मैं उठकर उसके पीछे चल पड़ा। ख़ाब जैसा लग रहा था। हम तारीक और वीरान गलियों में से सीधे उस मक़ाम की तरफ़ बढ़ते गए जो मैंने बड़ी तलख़ी से तर्क कर दिया था। चारों तरफ़ ख़ामोशी फैली हुई थी। चाँदनी में हर पेड़ के पीछे भूत-प्रेत छुपे लग रहे थे। हम ख़ामोशी से क़दम बक़दम आगे बढ़े। अचानक मेरे मुँह से चीख़ निकली। तीन साए एक चटान से खिसककर हमारे रास्ते में रुक गए।

"काँव-काँव, शुक्र है आप आ गए हैं," अनवर कौए की टर्राती आवाज़ सुनाई दी। वह उड़कर मेरे कंधे पर बैठ गया। वसीम ने संजीदगी से हाथ मिलाकर कहा, "हम बड़े फ़िकरमंद थे। हम इतने क़रीब पहुँच गए थे। अगर तारिक़ न होते तो न मालूम क्या हो जाता।"

और बीरबल ने मेरे हाथ में एक चमकती चीज़ थमा दी।

"मेरी तलवार!"

“तलवार के बग़ैर आप नहीं चल सकते,” वह मुसकराकर बोला।

हम दुबारा आगे बढ़े। चढ़ते चढ़ते हमारे सामने गढ़े की भड़कती आग दूर से नज़र आई। मेरे दोस्तों के मुँह उसकी रौशनी में लाल रँगे हुए थे। हर एक का अंदाज़ संजीदा था, यों जैसे किसी अज़ीम हस्ती के हुज़ूर आनेवाले हों। लेकिन अब मेरे पाँव दुबारा भारी होने लगे। मैं हर क़दम मुश्किल ही से उठाते हुए आहिस्ता आहिस्ता आगे बढ़ा। मेरी टाँगें सीसे से बनी लग रही थीं। साथ साथ मेरे अंदर हौलनाक वसवसे गूँजने लगे, “तू यहाँ क्या कर रहा है? क्या तुझे नहीं मालूम कि तू बादशाह के हुज़ूर नहीं आ सकता? अपनी गंदी और बुरी हालत को देख। तू किस तरह उसके पाक हुज़ूर आ सकेगा? छोड़ दे। वापस अपने अज़ीज़ों के पास जा और आराम कर। सुकून से ज़िंदगी गुज़ार। पूरा मज़ा ले लेकर मुतमइन हो जा।” साथ साथ मेरी हर बुरी हरकत, हर गंदा ख़याल, हर लालच, हर झूट, हर घिनौनी बात, सब कुछ मुझ पर आ ठहरा, और मैं उसके दबाव के नीचे कुचलने लगा। “हाँ,” मैंने बेकैफ़ी से सोचा, “मैं कितना ख़राब, कितना नापाक, कितना नालायक़ हूँ।”

“मैं आगे नहीं जा सकता,” मैं मायूसी से कराह उठा। मेरे घुटने पिघलने लगे।

मेरे साथियों ने फ़िकरमंदी से मुझ पर ध्यान दिया। वसीम बोला, “हम क़रीब ही पहुँच गए हैं। अब हिम्मत मत हारना। इस मरहले पर सबकी यही हालत होती है। अब थोड़ा-सा सब्र कर।”

वह यह कह ही रहा था कि हम एक ज़ोरदार दहाड़ से चौंक पड़े। पीछे मुड़े तो चाँदनी में एक डरावना साया देखा—एक काला रीछ जो तेज़ी से दौड़कर हम पर चढ़ आ रहा है। मेरे पाँव जम गए, और मैं दहशत से ठरठराने लगा।

तारिक़ कुछ आगे चला गया था, मगर वह फ़ौरन पुकार उठा, "पहले अपना पुश्ती थैला उतारो।"

"मैंने उसे पहले से फेंक दिया है," मैं चिल्लाया, तब देखा कि वह अब तक मज़बूती से मेरी पुश्त से बँधा हुआ है। हाँ, इतनी मज़बूती से कि मैं उसे खोलने में नाकाम रहा। आख़िर में अनवर ने अपनी चोंच से मार मारकर उसे खोल डाला, और वसीम ने उसे उतारने में मेरी मदद की। ज्योंही वह उतर गया मेरा दिल भी हलका हो गया। हाँ, दिल करता था कि परिंदे की तरह उड़कर हवाओं में तैरे। इतनी आज़ादी महसूस हुई कि कुछ लमहों तक ख़तरा भी ज़हन से निकल गया।

"अब अपनी तलवार को पकड़ लो!" अनवर टर्राया। ऐन वक़्त पर मैं तलवार को मज़बूती से थामने में कामयाब हुआ। तब भालू हमारे ऊपर था। अगर मैं कहता कि मैंने तलवार को महारत से चलाया तो झूट बोलता। हक़ीक़त में न मैं अच्छा खिलाड़ी हूँ, न तलवार को ठीक तरह से चलाना जानता हूँ। अगर सच कहूँ तो तलवार ख़ुद ही चलने लगी। कभी वह इधर कभी उधर घूमती। उसका फल चाँदनी में चमकती-दमकती, मारती-काटती और रीछ की खाल को छेदती जाती। कौअ भी उस पर

झपटकर चोंच से मारता, और वसीम अपनी छोटी तलवार से उसे तंग करता जाता। बीच में बीरबल नाचते हुए अपनी तलवार चलाता। दरिंदे के ज़ख़मों से ख़ून रिसने लगा तो वह आख़िर में छलाँग लगाकर पीछे हट गया और भागते भागते ओझल हो गया।

"ज़बरदस्त!" तारिक़ ख़ुशी से चहचहाया। "अब आपका रास्ता साफ़ हो गया है। उम्मीद है कि मज़ीद कोई रुकावट नहीं आएगी।"

और सच, अब मेरी हिम्मत काफ़ी बढ़ गई थी। हम हाँपते हुए किनारे पर पहुँच गए। वही नज़ारा। घूँ-घूँ, सी-सी, लावा के फ़व्वारे, तारनुमा पुल। जब गढ़े के पार झाँक मारी तो कुछ न देखा।

बीरबल बोला, "क्या कोई दूसरी तरफ़ खड़ा नहीं है?"

मैंने भी महसूस किया कि वहाँ धुँधलेपन में कोई चीज़ है, कोई अज़ीम हस्ती। और ऐसा नहीं लग रहा था कि यह कोई डरावना भूत-प्रेत हो। मुझे दहशत महसूस न हुई बल्कि मुहब्बत और प्यार की ज़ोरदार लहर, यों जैसे मैं पहले ही उससे वाक़िफ़ हूँ।

तारिक़ बोला, "अब पुल पर से आगे निकलो।"

मुझे झटका लगा। "क्या आप दीवाना हो गए हैं? उस पर से कोई नहीं जा सकता।"

लेकिन अब वसीम बोल उठा, "फ़िकर मत करो। आप बेशक नहीं जा सकते। लेकिन जब हमारे आक़ा दूसरी तरफ़ खड़े हों तो ज़मीनो-आसमान का फ़रक़ है। उस पर नज़र डालना, तब ही कोई चिंता नहीं।"

मैं तारनुमा पुल के पास गया और ध्यान से उसका जायज़ा लिया। वह वैसे ही दिखता था। फिर नज़र उठाकर गढ़े के पार देखा।

बीरबल चहका, “अब मैं उसे ज़्यादा साफ़ देख सकता हूँ।”

पहले मुझे कुछ नज़र न आया, फिर हौले हौले एक साया-सा उभर आया। मैंने पूरे ज़ोर से निगाह उस साय पर जमाई लेकिन वह ज़्यादा सफ़ाई से दिखाई न दिया। ताहम मेरी उम्मीद बढ़ गई। मैंने पहला क़दम पुल पर रखा।

बीरबल बोला, “यह क्या माजरा है?”

पुल चट से बदल गया था। अब उसकी शक्ल अजीब-सी थी। यह शक्ल मैंने कहाँ देखी थी? सोचते सोचते अचानक मुझे सख़्त सदमा पहुँचा। वही खंबा था जो मैंने सपने में देखा था। जिस पर शहज़ादा लटका हुआ था। मैं हक्का-बक्का रह गया। लेकिन अब बैठकर इस पर ग़ौर करने का वक़्त न था। अनवर मेरे कंधे पर बैठ गया, और वसीम ने मेरा हाथ पकड़कर चल दिया। बीरबल ठरठराते हुए मेरे पीछे हो लिया।

मैं झिजकते झिजकते क़दम बक़दम आगे बढ़ा। अजीब बात है कि जितना ही हम आगे बढ़े मेरे दिमाग़ में वसवसे गूँजने लगे। “तू इधर क्या कर रहा है? यह बस सपना ही है। और वैसे तू उस तरफ़ क्या करेगा? वापस लौट जा। तेरे तमाम रिश्तेदार भी पीछे रह गए हैं। उनके बग़ैर तू क्या करेगा? किस तरह ख़ुश रहेगा? यह पुल देख। इस पर कौन चल सकता है? तेरे दिमाग़ में फ़ुतूर है। और नीचे देख, यह कैसा उबलता

लावा है। अब जल्दी जल्दी वापस जा वरना उसमें गिर जाएगा।” मेरे दिल में वसवसों का तूफ़ान-सा बन गया।

“रुक जाओ!” बीरबल चीख़ा। “हाय हाय, मैं गिर जाऊँगा, ज़रूर गिर जाऊँगा।”

हम दोनों डगमगाने लगे तो वसीम ने ज़ोर से मेरे हाथ को दबाया, और अनवर टर्राया, “आगे देखो, आगे देखो।”

हमने आगे देखा तो कुछ सँभल गए। वह साया अब तक गढ़े के पार धुँधला-सा नज़र आ रहा था। ज़्यादा नहीं दिख रहा था, लेकिन मेरे अंदर एक पुरसुकून दबी-सी आवाज़ बोल उठी, “उस तरफ़ हक़ीक़ी ज़िंदगी है। जा उसके पास।” मैं दुबारा आगे बढ़ने लगा। अब तेज़ी से चलते चलते हम जल्दी दूसरे किनारे पर पहुँच गए। एकदम मेरी ताक़त जाती रही, मेरे घुटने पिघल गए और मैं हौले हौले ज़मीन पर गिर गया। न जाने कितनी देर मैं वहाँ पड़ा रहा।

इसके बरअक्स बीरबल बग़लें बजा रहा था। “क्या आपने देखा कि मैंने पुल को कैसे पार किया? ज़बरदस्त!”

तब वसीम मेरे कंधे को झँझोड़कर बोला, “आओ, आगे चलते हैं।”

दूसरे किनारे पर तारिक़ हाथ के इशारे से हमें अलविदा कहकर ओझल हो गया। “क्या तारिक़ हमारे साथ नहीं जाएगा?” बीरबल ने पूछा।

"तारिक़ को और बहुत-से लोगों को बुलाना है," वसीम ने जवाब दिया।

मैंने अपनी आँखों को उठाईं तो देखा कि वह राज़दार शक्ल आगे बढ़कर हाथ से आने का इशारा कर रही है। हम ख़ामोशी से उसके पीछे पीछे चलने लगे। रास्ता बल खाते हुए चढ़ने लगा।

उस सफ़र के बारे में मुझे हर बात साफ़ याद नहीं। चढ़ाई बहुत थी। अब चाँदनी डरावनी नहीं महसूस हो रही थी, क्योंकि उसमें हमारा राहनुमा साफ़ नज़र आ रहा था। अब मेरे दिल में सुकून था, और मैं दिल-ही-दिल में ख़ुशी से ललकार रहा था।

काफ़ी देर के बाद बीरबल जोश से पुकारा, "वह देखो, हम बाग़ के क़रीब पहुँच गए हैं।"

मेरा दिल उछल पड़ा। हमारी ख़ुशी को देखकर वसीम बोला, "यह हमारी मनज़िले-मक़सूद नहीं। यह कुछ भी नहीं है।" और सच कहूँ तो जब हम क़रीब क़रीब उससे गुज़रे बस सादा-सा मैदान था जिस पर दो-चार पेड़ लगे थे।

हम ख़ामोशी से आगे बढ़े।

"भई, यह क्या चक्कर है?" बीरबल ने पूछा।

मैंने नीचे देखा तो मेरी और उसकी तलवारों से अजीब-सी रौशनी निकल रही थी। उसे पकड़ लिया तो देखा कि उस पर लिखाई ज़ोर से चमक रही थी : "राह और हक़ और ज़िंदगी मैं हूँ।"

अनवर बोला, “जिसने इन को बनाया वह क़रीब है, इसलिए यह चमकने लगी हैं।”

मेरी हैरानी बढ़ती गई, क्योंकि हम सीधे चोटी की तरफ़ चढ़ रहे थे। और सचमुच, पौ फटते ही हम चोटी पर पहुँच गए। कोई महल नज़र न आया बल्कि एक हरा-भरा सब्ज़ाज़ार जिसके दरमियान एक चश्मा उबल रहा था। उससे साफ़-शफ़्फ़ाफ़ पानी ज़ोर से फूटकर शादाब घास में से बह रहा था। नाली के किनारे किनारे पर रंगारंग फूल लहलहा रहे थे। अब सूरज का लाल चेहरा उफ़ुक़ पर नज़र आने लगा। उसकी किरनों ने टटोल टटोलकर चोटी की हर चीज़ अपनी गुलाबी उँगलियों से छू दिया। घास के हर तिनके पर लगे शबनम के हज़ारों क़तरे एकदम चमक उठे।

अब वह हस्ती चश्मे के पास रुककर मुड़ी। मेरा दिल धड़कने लगा। महल का मेज़बान था, बादशाह का शहज़ादा। हम दोनों ख़ुशी से आगे लपककर उनके सामने झुक गए। हमने कुछ न कहा। एक नरम हाथ मेरे सर पर फिरा, और मेरे अंदर गहरी मुहब्बत की लहर उभर आई। साथ ही राहत और इतमीनान, यों जैसा मैंने पहले कभी नहीं महसूस किया था। अब मेरी और कोई ख़ाहिश न रही। बस मैं हमेशा के लिए यहाँ शहज़ादे के क़दमों में रहूँ।

न जाने हम कितनी देर वहाँ झुके रहे। मेरे इर्दगिर्द दुनिया रुक गई। फिर मेरे आक़ा ने नरमी से हमसे कहा, “अब चश्मे में नहा लो। सब कुछ

तैयार है।” हम उठकर चश्मे के किनारे पहुँचे। वहाँ सफ़ेद साफ़-सुथरे कपड़े तैयार रखे हुए थे। झट से पसीने और कीचड़ से लतपत कपड़े उतारकर मैंने ठंडे उबलते पानी में ग़ोता लगाया। “छप!” बीरबल छलाँग लगाकर मेरे पीछे पानी में कूद पड़ा। कितना मज़ा आया। जान में जान आई। हम छोटे बच्चों की तरह हँसते-चहकते एक दूसरे को छींटे मारने लगे। फिर निकलकर नए कपड़े पहन लिए। एक छोटी-सी मेज़ पर जाम और रोटी तैयार रखी गई थी। गरमागरम रोटी को खाकर सफ़र की थकावट दूर हुई, और जाम की चमकती शरबत को पीकर जिस्म की रग रग में नई ताक़त बहने लगी।

तब हम ख़ुशी से उछलते-कूदते शहज़ादे के साथ सब्ज़ाज़ार में टहलने लगे। हमारे आक़ा ज़्यादा कुछ न बोले। और हमारे लिए भी उनके साथ चलना काफ़ी था। अचानक मुझे एक ख़याल आया जिससे मैं दंग रह गया, “मेरे आक़ा मेरी मौजूदगी से लुत्फ़ उठा रहे हैं। मुझ जैसे नालायक़ आदमी से।” हम घूमते-फिरते घंटों चोटी पर रहे।

अचानक बीरबल रुक गया। ज़ाहिर था कि कोई बात उसे खटक रही थी। आख़िर में उसने त्योरी चढ़ाकर कहा, “यहाँ कोई महल नहीं है। न ज़ियाफ़त है, न दीगर मेहमान।”

“मेरा महल कहीं और है। वहाँ तुम इस वक़्त नहीं जा सकते। लेकिन वह वक़्त भी आएगा। नीचे देखो।” हमने हाथ से माथे पर साया करके चोटी के दामन में रसूमाबाद को देखा। वहाँ गलियाँ लोगों से खिचाखिच

भरी थीं। हर एक अपने काम में मसरूफ़ था। मंदिरों, गिरजों और मसजिदों में लोगों की टोलियाँ जा रही और उनसे निकल रही थीं। चौकों में लोग बुतों की पूजा कर रहे थे। दूसरे सौदाबाज़ी में लगे थे। शहर की गहमा-गहमी उरूज पर थी। हर तरफ़ शोर-शराबा और हलचल।

"मुझे इन पर तरस आता है," मेरे आक़ा ने नरमी से कहा। "इन अंधों को भी मेरे हुज़ूर आने का मौक़ा देना चाहिए। अब तक इनमें कुछ हैं जो आएँगे।" वह कुछ देर ख़ामोश रहे। फिर बोले, "तारिक़ ने तुम्हारे पास आकर तुम्हें बुलाया। मैं उससे इतना ख़ुश हूँ। पहले वह हर रास्ता इख़्तियार करने से कतराता था। और अब वह बड़ी दिलेरी से लोगों के पास जाकर उन्हें मेरी राह के बारे में बताता है। उसे बहुत मार-पीट खानी पड़ी है, लेकिन वह मुतमइन रहता है। सोच लो। जिन तालिब-इल्मों को तुमने आज़ाद कर दिया, वह अब तक भटकते फिर रहे हैं। तारिक़ हर एक के पास जाकर उसे बुला रहा है।"

शहरियों की हरकतें तकते तकते मुझ पर उदासी तारी हुई। मेरी आँखों में आँसू भर आए। यह देखकर शहज़ादे ने अपना हाथ मेरे सर पर फेर दिया। वह बोले, "मैं तेरे दुख को जानता हूँ।"

तब मुझे वह ख़ाब याद आया जिसमें उन्हें मौत के घाट उतारा जा रहा था। "हाँ, सचमुच, वह दुख-दर्द जानते हैं," मुझे ख़याल आया। "उन जैसा हम-दर्द कोई नहीं है।"

"मैं तुमको अकेला नहीं छोड़ूँगा," वह बोले। "अब से कोई भी यह साफ़-सुथरे शाही कपड़े तुमसे छीन नहीं सकेगा। अब से मैं तुम्हारे दिलों में सुकूनत करूँगा। बेशक तुमसे ग़लतियाँ होती रहेंगी। लेकिन अंदर ही अंदर मेरी रूह तुम्हें बेदार रखेगी, तुम्हें मेरी राह पर वापस लाती रहेगी। तलवार तुम्हारी मदद करेगी, और वसीम और अनवर भी तुम्हारा साथ देंगे।"

कुछ देर के लिए मैं अपने जज़बात से लड़ता रहा, फिर आख़िरकार पुख़्ता आवाज़ में बोला, "ठीक है, मैं तैयार हूँ। मुझे भेज दें।" बीरबल ने मेरे हाँ में हाँ मिलाया।

यह सुनकर वह मुसकराए, और यह मुसकराहट यों मेरे अंदर पड़ गई जैसे सूरज की पहली किरन बेजान शीशे को रौशन कर देती है। मेरा पूरा वुजूद उस मुसकराहट के नूर में चमकने-दमकने लगा।

एक आख़िरी नज़र उस ख़ूबसूरत जगह पर दौड़ाकर हम रवाना हुए। उतरते वक़्त मैंने मुड़कर पीछे देखा। शहज़ादा अब तक नज़र आए। पूरी चोटी एक ख़ास नूर में डूबी हुई थी।

हम उतरते उतरते गढ़े के पास पहुँच गए। इस तरफ़ से पार करना आसान था, और हम ख़ामोशी से आगे बढ़कर शहर में दाख़िल हुए।

हंगामा

उतरते उतरते हम दुबारा रसूमाबाद की तंग गलियों में घुस आए।

“अरे, यह देखो।” एक दुकान में हज़ारों बुत चमक-दमक रहे थे। कुछ इनसान जैसे बड़े थे, कुछ इतने छोटे कि जेब में भी डाला जाए। कुछ लकड़ी के बने हुए थे, कुछ चाँदी, सोने या संगे-मरमर के। सब माहिर फ़नकारों से बनाए गए थे।

“इन बुतों को देखो!” बीरबल ने हैरत से कहा। “यह तो खंबे पर लगे हुए हैं।”

“आप इनके साथ क्या कर रहे हैं?” मैंने दुकानदार से पूछा जो सड़क के किनारे किसी गाहक से गपें हाँक रहा था।

“जनाबे-आली, यह बुत बराए-फ़रोख़्त हैं। यक़ीन करो, यह ए-वन क्वालिटी के हैं। हमारे शहर के माहिरीन से बनाए गए हैं।”

“मैं यह क्यों ख़रीदूँ?” मैंने सवाल किया।

“देखो ना। अगर इनको घर में रखो तो बड़ी बरकत मिलेगी। बेऔलाद को बच्चा मिलेगा। हर कारोबार कामयाब रहेगा। जनाब, यह आम बुत नहीं हैं। इन पर मुक़द्दस पानी छिड़का गया है।”

“क्या यह शहज़ादे की शक्लो-सूरत नहीं?”

“जी, ज़रूर। हम किसी और के बुत नहीं बनाते। इनसे ज़्यादा क़ुव्वत हासिल होती है।”

बीरबल सौदागर का बाज़ू पकड़कर बोला। “क्या आपने कभी शहज़ादे को देखा है?”

सौदागर ने झटके से अपना बाज़ू छुड़वाया। “देखो ना। मैं ताजिर हूँ, फ़ाल निकालनेवाला नहीं। यक़ीन करो, अगर इनमें से कोई ख़रीदा तो यह बहुत है। उसकी सारी क़ुव्वतें तुमको हासिल होंगी। और यह सब कुछ फ़क़त पाँच सौ सिक्कों में।”

“लेकिन यह तो नक़ली हैं। क्या आप असली चीज़ नहीं देखना चाहते? ख़ुद शहज़ादे से मिलो। यह कुछ बेकार है। दोस्त, हमने उन्हें अपनी ही आँखों से देखा है। सुनो, वह तो आपको बुला रहे हैं।”

अब सौदागर बिफर गया। लोग जमा होकर मेरी बात ग़ौर से सुन रहे थे। उसे अंदाज़ा हुआ कि कारोबार बिगड़ गया है। वह गरजा, “आओ लोगो, इन मख़बूतों को देखो। यह हमारे पाकतरीन रस्मो-रिवाज के ख़िलाफ़ अफ़वाहें फैला रहे हैं। यह हमारे मुक़द्दस वलियों की तौहीन

कर रहे हैं।” सौदागर हमें झिड़कता गया तो चारों तरफ़ से लोग तमाशा देखने दौड़े आए। धमकियाँ बुलंद हुईं। कुछ हमें धक्के देने लगे।

“मारो इनको,” कोई चीख़ा।

“क़ाज़ी को पेश करना,” कोई और चिल्लाया।

यों हमें धक्के देते और घसीटते हुए अदालत में पहुँचाया गया। लोगों की तादाद के बाइस हॉल खिचाखिच भर गया। क़ाज़ी जब हंगामा देखा तो पुर-वक़ार अंदाज़ में अपनी कुरसी पर बैठ गया। शोरो-ग़ुल को बंद करने में बहुत देर लगी।

“ख़ामोश!” जज आख़िरकार गरजा और हथोड़ी मेज़ पर ठोकी। लोग चुप हो गए। “इनका क्या जुर्म है?” उसने पूछा।

एक पहरेदार काला ज़िरह-बकतर पहने खड़ा हुआ और शायस्तगी से बोला, “हुज़ूर, इन्होंने हमारे मज़हब की तौहीन की है। हाँ, यह दूसरों को अपने ख़राब ख़यालों से वरग़लाते हैं।”

“क्या कोई और गवाही है?” क़ाज़ी ने दरियाफ़्त किया।

बुत बेचनेवाला खड़ा हुआ। “इन्होंने हमारे रस्मो-रिवाज के ख़िलाफ़ बातें की हैं। इससे बढ़कर इन्होंने हमारे मुक़द्दस वलियों की तौहीन भी की है।”

तमाशाइयों में वसवसे बुलंद हुए। तब हॉल का बड़ा दरवाज़ा धड़ाम से खुल गया, और आईन महल का बुज़ुर्ग इठलाते हुए अंदर आया। उसके साथ एक छोटा और निहायत दहशतज़दा तालिब-इल्म था। वह

उसे घसीटते हुए सामने लाया। फिर एहतराम से जज के सामने खड़े होकर बोल उठा, "गुस्ताख़ी माफ़, हुज़ूर। मैं एक संगीन जुर्म का गवाह लाया हूँ। गुज़ारिश है कि उसे पेश करूँ।"

तमाशाइयों में शहद की मक्खियों की-सी तेज़ भिनभिनाहट बुलंद हुई।

"ख़ामोश!" जज गरजा, फिर बोला, "पेश करें उसे।"

बुज़ुर्ग ने बच्चे को झटका देकर करख़्त आवाज़ में कहा, "जनाबे-आली, यह आदमी बेहद बेदीन हैं। इन्होंने मुझसे तालीम हासिल करने के बहाने मेरे घर में आकर तालिब-इल्मों को वरग़ला दिया। अगर यक़ीन नहीं तो मेरे घर आकर उसका बुरा हाल देख लीजिए। मेरे सौ के ऊपर तालिब-इल्मों में इतनी गड़बड़ मच गई कि थोड़े ही रह गए हैं।"

"अच्छा," जज बोला। "इन्होंने क्या किया कि इतनी गड़बड़ मच गई?"

"हुज़ूर, इन्होंने हमारे क़वानीन की तौहीन की है! क्या इससे संगीन जुर्म हो सकता है? हमारे शहर के अज़ीज़ और अबदी क़ानून को पाँव तले रौंद डाला। अगर इसे छोड़ेंगे तो आख़िर शहर के हालात कैसे रहेंगे? बेटा, कुछ बताओ।" उसने लड़के को झटका दे दिया। उनके क़रीब होने के बाइस मैंने देखा कि वह ज़ंजीर से बाँधा हुआ है, यों कि नज़र न आए। बुज़ुर्ग ने ज़ंजीर को पीठ के पीछे ज़ोर से खींचा रखा था।

लड़का दर्द से तड़पते हुए घिघियाया, "मैं ... मैं गवाह हूँ।" उसका पीला-सा चेहरा घबराहट से काँप रहा था।

"और बताओ," बुज़ुर्ग ज़ंजीर को ज़ोर से झटका देकर बोला।

"आह ... इन्होंने क़वानीन के ख़िलाफ़ बातें की हैं ... हाँ, पहले हम सुकून से पढ़ रहे थे तो इन्होंने गड़बड़ मचा दी है।"

"क्या कहा मैंने," बुज़ुर्ग फ़तहमंदी से बोला। "सौ के ऊपर तालिब-इल्म इसके गवाह हैं कि यह मख़बूत शहर में इनक़लाब लाना चाहते हैं। और अगर शहर का क़ानून तहस-नहस हो जाए तो फिर क्या रहेगा?"

"क्या आप उनका इलज़ाम मानते हैं?" जज ने हमसे पूछा।

बीरबल बोला, "मेरे चचा रामन ने एक बार कहा, 'बीरबल बेटे, अदालत में किसी गवाह पर यक़ीन न करो। सब झूट हैं।" वह तालिब-इल्म के पास गया और झटके से ज़ंजीर को बुज़ुर्ग के हाथ से छीन लिया। फिर उसने पूछा, "अब दुबारा सोच लो, छोटे। तुमने क्या देखा? क्या हमने सचमुच क़वानीन के ख़िलाफ़ बातें कीं।"

"नहीं, सर।" बच्चा डरे हुए बोला।

बुज़ुर्ग ने झटके से ज़ंजीर को बीरबल के हाथ से छुड़ाया। "क्या कहा तुमने?"

"हाँ हाँ, क़वानीन के ख़िलाफ़ बातें कीं," तालिब-इल्म दर्द से तड़प उठा।

बीरबल जज से मुख़ातिब हुआ। “जनाबे-आली, क्या ऐसे गवाह पर भरोसा किया जा सकता है?”

जज बोला, “अच्छा। तो तुम्हारा साथी क्या कहता है?”

“मैंने तो असली शहज़ादे को देखा है,” मैंने जवाब दिया। “इस शहर में सिर्फ़ उनके नक़ली बुत मिलते हैं। आप क्यों नहीं उनसे मिलना चाहते हैं? और जहाँ क़ानून की बात है, क्या आप शाही क़ानून नहीं जानना चाहते?”

“ठाह!” जज ने आपे से बाहर होकर मेरे गाल पर थप्पड़ मारा। भीड़ का शोर-शराबा बढ़ता गया। फिर अपने आप पर क़ाबू रखकर जज बोला, “हरामज़ादे, तेरे अलफ़ाज़ सरकशी और तौहीन का साफ़ सबूत हैं। ज्यूरी का क्या फ़ैसला है?”

अहले-ज्यूरी अदालत में एक तरफ़ बैठे आपस में फुसफुसाने लगे। फिर उनका सदर खड़ा हुआ। “मुलज़िम हमारे पाक आईन और हमारे अज़ीज़ दीन के ख़िलाफ़ हैं। इसके अलावा उन्होंने दूसरों को ग़लत काम करने पर उकसाया है। हमारा फ़ैसला है सज़ाए-मौत।”

दालान तालियों के बजने और हिक़ारतआमेज़ नारों से गूँज उठा। मुझे चक्कर आने लगे। मेरा मुँह ख़ुश्क हो गया।

“ख़ामोश,” क़ाज़ी ने ज़ोर से हथोड़ी मेज़ पर ठोकी। फिर उसने हमसे बात की, “तुमने ज्यूरी का फ़ैसला सुन लिया है। अब ग़ौर से सोचो। अब तक मैं तुम्हें बचने का मौक़ा देने को तैयार हूँ। अब तक तुम आज़ाद

हो सकते हो।" वह थोड़ी देर के लिए चुप रहा ताकि उसकी बात पूरे तौर पर हमारी समझ में आए। फिर अपनी बात जारी रखी, "अगर तुम अपने ग़लत ख़यालों को तसलीम करो और वादा करो कि आइंदा ऐसी बातें कभी नहीं करूँगा तो आज़ाद हो जाओगे। वरना ..." वह चुप हो गया।

मैं बेचैनी से तड़पने लगा और सोचा, "क्या यह बात इतनी अहमियत रखती है? क्यों न इन बातों का इनकार करूँ ताकि बचकर अपना सफ़र जारी रखूँ? क्या फ़ायदा अगर मैं मर जाऊँ?"

ऐसे शको-शुबहे में पड़कर मैं झिजकता रहा। लेकिन अचानक मेरी नज़र दो जाननेवालों पर पड़ी जो हुजूम के बीच में बैठे थे। वसीम बौना और उसके कंधे पर बैठा कौअ अनवर संजीदा और दिलासा देनेवाली निगाहों से मुझे तक रहे थे। मैं क़ाज़ी की तरफ़ मुड़ा। "सरकार।" मेरी आवाज़ कुछ काँप रही थी। "मैं अपने आक़ा को किस तरह रद कर सकता हूँ?"

बीरबल की बुलंद आवाज़ ने मेरा साथ दिया, "मेरे चचा रामन कहते थे, 'बीरबल बेटे, कभी भी नमकहराम न बन। जिसकी रोटी खाते हो उसका इनकार कभी मत करना'।"

अदालत में से बुड़बुड़ाने की लहर दौड़ी। क़ाज़ी गरजा, "फिर ज्यूरी का फ़ैसला तुम पर आइद है।"

अब तमाशाइयों का शोरो-ग़ुल किसी के क़ाबू में न आ सका। दो सिपाही हमें घसीटकर बाहर ले गए। चारों तरफ़ से लोग मुँह पर थूकते और घूँसे मारते। इसी तरह लड़खड़ाते-डगमगाते हमें शहर से बाहर एक ऊँची चटान पर धकेल दिया गया। ऊपर पहुँचकर मेरी नज़र ने आख़िरी बार इर्दगिर्द का मंज़र जज़्ब कर लिया। दूर दूर उफ़ुक़ पर दुश्मन का जंगल फैला हुआ था। कुछ नज़दीक सराय शुकूक का पहाड़, रेगिस्तान के टीले और शहरे-ऐयाश ख़ूनी आफ़ताब की सुर्ख़ किरनों में चमक रहे थे। फिर कोहे-दानिश, अज़दहे और चुड़ैल का ग़ार, देव का पुल और नादान किसान का शहर। तब मेरी निगाह रसूमाबाद पर पड़ी जो साय में डूब चुका था। गिद्ध उसके ऊपर मँडला रहे थे। लेकिन बीच में पहाड़ की चोटी सूरज की आख़िरी किरनों में जगमगा रही थी। नीचे झाँका तो चक्कर आने लगे। चटान के दामन के पेड़ खिलौने जैसे लग रहे थे। मैंने जल्दी से आँखें मीच लीं। अचानक न जाने क्यों मुझे वह ख़ाब याद आया जिसमें शहज़ादे की ख़ून से लतपत लाश खंबे पर लटकी देखी थी। “मेरे आक़ा मुझसे ख़ुश होंगे,” मैंने सोचा, और मेरा दिल अजीब-सी ख़ुशी से भर गया।

बीरबल मेरे साथ खड़ा हुआ। “हौसला रखो,” वह बोला। “मेरे चचा रामन कहा करते थे, ‘बीरबल बेटा, ज़िंदगी गन्ने का डंडा है। एक सिरे से शुरू करके मज़े से चूसते जाओ। मगर एक दिन तुम ज़रूर दूसरे सिरे तक पहुँचोगे। तब ताज्जुब मत करना’।”

न मालूम क्यों, लेकिन उसकी बात सुनकर और उसकी अजीब-सी शक्ल वहाँ खड़ी देखकर मुझे बड़ी हँसी आई। मुझे हँसते देखकर वह भी ठहाके मारने लगा।

"क्या बात है," मैंने आँखों से आँसू पोंछते हुए कहा। "आपके साथ सफ़र करके कितना मज़ा आया। कितना अच्छा वक़्त गुज़ारा। फिर मिलेंगे।" हमने हाथ मिलाए।

फिर किसी ने मुझे धक्का दिया। मेरे हवास उड़ने लगे। हवा की "शूँ-शूँ" की आवाज़ और गिरने का एहसास। नीचे धुँधली-सी ज़मीन जो झपटकर क़रीब आ रही है। फिर दुनिया मेरी नज़रों से ओझल हो गई।

अलविदा

"काँव-काँव।"

मैं अध-मुई हालत में कहीं लेटा था। "यह क्या आवाज़ है? मैं कहाँ हूँ?" मैंने सोचा, फिर उठ बैठने की कोशिश की। लेकिन शदीद दर्द की लहर मेरे जिस्म में से दौड़ी और मैं आह भरकर दुबारा लेट गया।

"ग़र-ग़र-ग़र।" क़रीब कोई नदी खौलती हुई बह रही थी। मैं नरम ख़ुशबूदार घास पर लेटा हुआ था। किसी की आहट क़रीब आई। एक ठंडा और नरम-सा हाथ मेरी पेशानी पर फिर गया। मुझे बड़ा सुकून और इतमीनान हुआ। मैंने आँखें खोलने की कोशिश की। धुँधलके में कोई मेरे ऊपर झुका हुआ था।

"आप . . . ?" कुछ और पूछने की ज़रूरत नहीं थी। मैंने उन्हें पहचान लिया था। सलीब पर लटकी शक्ल, ज़ियाफ़त के शहज़ादा, मेरे आक़ा।

"कुछ पी ले।" मैं ने एक चमकते हुए जाम से चुसकी ली। उनकी आवाज़ बेबयान नरम और रहमदिल थी। बेशक रोब और जलाल का

उनसुर भी था, हाँ इख़्तियार और क़ुव्वत, लेकिन साथ साथ उसमें कितना प्यार और मिठास, कितनी नरमी और सच्चाई थी।

"मत डर," वह बोले। "तू जीता रहेगा।" जाम से पीकर मेरे अंदर ज़िंदगी का दरवाज़ा खुल गया, और मैं एक नई पुर-उम्मीद दुनिया में दाख़िल हुआ जिसमें हर चीज़ तरो-ताज़ा दिखाई दे रही थी, हर शै इनसान की नाक़िस और लालची गिरिफ़्त से आज़ाद थी—नीला नीला आसमान, शादाब मैदान, चमकता-दमकता दरिया, पुरसुकून जंगल और अमनपसंद दरिंदे जो एक दूसरे को नहीं फाड़ते। मेरी आँखों के सामने से ऐसे शहर गुज़रे जिनके बाशिंदे गुनाह किए बग़ैर अमनो-अमान से ज़िंदगी बसर कर रहे हों। उस पूरी दुनिया पर एक ख़ास झलक छाई हुई थी, शहज़ादे की मुसकान की झलक।

"दूसरे कहाँ हैं?" मैंने रुक रुककर कमज़ोर आवाज़ में पूछा।

"हम भी हाज़िर हैं।" अनवर उम्मीद और वसीम वफ़ा मेरे सिरहाने आए और तसल्ली देते हुए मुसकराए। मैंने इर्दगिर्द झाँक मारी। लगता था कि हम किसी जंगल की खुली जगह में हैं।

"बीरबल नहीं है।"

"वह आगे निकला है। कुछ और पी ले।"

पीने से ख़ुश्क गले को ख़ुशगवार ठंडक मिली। मैं ऊँघते ऊँघते ग़ुनूदगी के समुंदर में डूबने लगा।

"बेटा।"

"मैं कहाँ हूँ?" मैंने ऊँघती हालत में सोचा। "अच्छा ... मेरे आक़ा मुझे बुला रहे हैं।" मैंने बड़ी मुश्किल से अपनी आँखें खोलकर पूछा, "क्या अब मैं आपके महल में दाख़िल होनेवाला हूँ?"

धुँधलके में शहज़ादे का चेहरा मुसकराया, मगर अफ़सोस की झलक साफ़ नमूदार हुई। "नहीं बेटा। तेरा वक़्त अब तक नहीं आया।"

"तो सब कुछ फ़ज़ूल था?" मैंने दुख भरे लहजे में पूछा।

"बादशाह के मनसूबे में कोई बात बेमक़सद नहीं होती," उन्होंने प्यार से जवाब दिया। "पहले तुझे अपनी पुरानी दुनिया में बहुत कुछ करना है।"

मेरी आँखों में आँसू भर आए, और मैं ख़ामोशी से रो पड़ा।

"बेटा, मैं तेरा साथ दूँगा। मेरी रूह तेरी राहनुमाई करती रहेगी," शहज़ादे ने मेरे कंधे को थपथपाया। "तेरे दोस्त भी तेरे साथ रहेंगे, और तेरी तलवार काम आएगी। हौसला रख। इसके अलावा मैं तुझे एक और क़ीमती चीज़ दे देता हूँ।" उन्होंने मेरे हाथ में चमकता जाम और एक गरमागरम रोटी थमा दी। "तुझे इसकी अशद ज़रूरत होगी। जब ना-गवार दिन आएँगे तो जाम में से पीकर तेरी प्यास बुझ जाएगी। रोटी से खाकर तेरी भूक जाती रहेगी। तुझे नए सिरे से ताक़त मिलेगी।"

मैंने सर उठाने की कोशिश की लेकिन बेसूद। मेरा बेहिस सर निहायत भारी लग रहा था। एक सफ़ेद-सी शक्ल ने मेरे माथे पर हाथ फेर दिया। मैं ठंडी साँस लेकर बेहोशी के आलम में डूबने लगा।

“याद रख। अब से तू बादशाह का शहरी है। सलामती के साथ जा।” यह कहकर शहज़ादा ओझल हो गए। लेकिन उनके शफ़क़त भरे चेहरे की याद कभी नहीं मिटने की। वह हमेशा तक मेरे दिल में क़ायम रहेगी।

पुरानी दुनिया

“मंज़ूर, मंज़ूर!” किसी का बेरहम हाथ मुझे ज़ोर से झँझोड़ रहा था। मैंने अपनी आँखें खोलीं। बहन का मुँह फ़िकरमंदी से मेरे ऊपर झुका हुआ था। मैंने अपनी पतलून को टटोला तो पता चला कि कपड़े गीले हैं। मैं कुएँ के पास ही बरगद के पेड़ के साय में चारपाई पर लेटा था।

मुझे हरकत करते हुए देखकर बहन कुछ मुतमइन हुई। “आप कैसे हैं?” उसने पूछा। अब तक उसकी आवाज़ परेशानी से काँप रही थी।

“गुज़ारा है,” मैं बुड़बुड़ाया। मैंने मुश्किल से मुसकराकर उठने-बैठने की कोशिश की। लेकिन एक टाँग अच्छी तरह हरकत नहीं कर रही थी। तब याद आया कि इस दुनिया में मैं माज़ूर हूँ। ठंडी साँस लेकर मैं दुबारा लेट गया।

“लेटे रहो। शुक्र है कि शाहबाज़ और उसका भाई यहाँ से गुज़र रहे थे जब आप कुएँ में गिर गए।

“सच?” मैंने आहिस्ता कहा, फिर थोड़ी देर के लिए ख़ामोश रहा। “आप यक़ीन नहीं करेंगे कि मैंने कुएं में कैसा वक़्त गुज़ारा।”

"आप थके हुए हैं।" बहन ने माथे पर हाथ फेर दिया। "शाहबाज़ और उसके भाई ने आपको फ़ौरन निकाल दिया। अब आराम करें।"

"अच्छा," मैंने कहा और आँखों को बंद किया।